বিজ্ঞাপন



চারি বংশর পূর্ব্ধে আমি কাব্যপ্রন্থ রচনা করিব ভাষা স্বশ্নেপ্ত জানিতাম না। তিন বংশর অতীত ছইল, আমি "চিত্তরঞ্জিলা" নামে একখানি ক্ষুদ্র কাব্যপ্রন্থ রচনা করি। "চিত্তরঞ্জিলা" নিথিয়া আমি বেরূপ গ্রহণাছ পাইয়াছি, বোধ হয়, কোন কালে কোন দেশে কোন প্রস্থকার দেকরপ উৎসাহ পান নাই। তবে অংমি কি সাহসের উপর নির্ভির করিয়া এই বহুবায়সাধ্য ব্যাপারে পুনর্কার প্রব্রত ছইলাম। সক্ষদয় পাঠকগণ! ইয়ার উত্তর আমি নি ছুই নিতে পারিলাম না। তবে যদি আপনারা অলুএই করিয়া এই পুত্তক খানি অধ্যরন করেন, বোধ হয়, ইয়ার উত্তর কিছু পরিমাণে পাইলেও পাইতে পারেন। এই প্রস্থধানি বাঞ্চালা কাব্যপ্রস্থ পাঠ করিবার ফল। ুযেহেতুক আমি বাঙ্গালাক্ষাব্যপ্রস্থ অধিক পাঠ করি নাই।

উপকার স্থাকার না করা বড় অধর্ম। সেই অধর্মজ্ঞেরে আমি এই স্থলে স্বীকার করিতেছি বে স্কটলগু ও ইংলগু দেশীয় প্রসিদ্ধ করিম্বন্ধ বরুষ্ঠ ও বাইরণের কিছু কিছু ভাব এই পৃশুকের কোন কোন স্থানে সমিবেশিত করিয়াছি।

অবশেষে সহাদর পাঠকগণের নিকট আমার নিবেদন এই, ধদি উহার। অস্থ্রছ করিরা এই পুশুকখানি একবার পাঠ করেন, সকল শ্রম সার্থক জ্ঞান করিব।

ঞ্ছকারস্য।

মানাবর শ্রীযুত ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর মহাশয় মহাশয়েযু।

ওহে সুধীবর, তব ও অন্তর^{*} কোমল কমল যেন. नशांत व्यांकत, विमान मांभत, কয় জন তোমা হেন ? প্রকৃতি স্কুন্দরী, এ ভব উপরি অত্যে গঠনিল ক্ত জीव बढ थानी, नाहि शांदत वानी বর্ণনা করিতে তত। দর্ব্ব শেষে নর, প্রফুল্ল-অন্তর্ প্রকৃতি গঠিল করে, রত্তি নানা রূপ, * একের স্বরূপ[্] া কে দেখে, বল অপরে ? মানব যেমন, কুতৃহলী মন রহস্ত বেড়ায় খুজি, প্রকৃতি তেমন, রহুন্তে মগন রহচ্ছের ভরে. এই ভব'পরে প্রকৃতি গঠিল তাই,

প্রাণী এক আর, প্রকৃতি তাহার বড়ই মজার ভাই। পর সুখ ভরে, অঙ্গ কালি করে ভাবি ভাবি সারা দিন. পর সুখ তরে. স্বাস্থ্য ভঙ্গ করে, আমোদ প্রযোদ হীন। পর সুথ তরে অশন উদরে: জুটে না তাহার রোজ, ভবিষ্যত তর্র, ভাবেনা অন্তরে, যেই জুটে তাই ভোজ। এর পুরক্ষার, গালাগালি ভার ইবা নিন্দা কুৎসা তীর, বক্ষ ভেদে তার, জ্বালায় যাহার, হ্রাদ তার নংহ স্থির। নাম এ প্রাণীর, হলো প্রকৃতির, " हेन्छ। कवि दलि प्रिटंड. কিন্তু সে প্রকৃতি পাঠান প্রকৃতি নিভান্ত না বুঝি চিতে। হুঃখ ভাবি ভারঁ, প্রকৃতি আবার আশ্রয় করিয়া দিল। সুধী, দয়াবান্, আশ্রয়ের স্থান, তার সে তাই হইল।

কাব্য লতিকার, কে আছে আমার
তোমা ভিন্ন গো সহায় ?
বির তবাশ্রেয়, কাব্যলতাচয়,
ব্যাপুক উদ্যান প্রান্ন
এ বিশাল বঙ্গে. যেন তব সঙ্গে
কাব্য বল্লী না শুকায়।
"চিন্ত-রঞ্জিকায়," যেমন জ্বালায়
পাদপ কন্টক-প্রায়,
ভাবি সহকারে, "চিন্ত-রঞ্জিকারে"
কঠিন শমীরে দিহু,
"মোহিনী-মোহন্য পাদপ-চন্দন
ভোমায় ভাবি অপিনু।

একান্ত বশবদ **এইশ্বরচন্দু চটোপাধ্যায়,** সাং বালি।

শুদ্ধিপত্ৰ

	3 28		
781	পংক্তি	ভ্ৰম	म ंदमाधन
ર	. ૨૨	ু যুঠেনি 🕺	यूटछेनि
ь	هٔ کر ،	পেঁছিছিতে	পঁছ ছিত্তৈ
۳	. &	সদত	সতত
29-	[#] 59	मन*हरू	मनकारक
b	39	ন্ড়িল	न फ़िन
85	২৩	সদত	সতত
90	\$3	পড়েছে	পরেছে
93	২	চাৰু তায়	চাৰ-ভায়
१२	b•	मज़ी (द	मदः भी द
95	2A.	সাম্ম-কলে	আশ্ত ফলে
-99	২৬	क्रम्	শোভা
b- 9	>0	ফুল	কুল
৯২	২৩	পরিশর	পরিসর
20%	৬	কয়	কর
**	?>	সম্ভোগি	ল ইয়া
>>0	> b	বিশ্বান	বিশ্বান
274	\$2	সর †	শর্
27.0	२ 8	হশ	হৰ্মা
599	2 9	খানি 🦭	षा'रम .
sta	২৩ .	ভজি ইন্ছা	কত সাধ
>>¢	æ	ङ् र्ग	হৰ্ম্য
7%	२५	হৰ্ম	र् या
520 ·	২০	श्रम	धूरम
२२७	30	কিবা	কেৰা '
785	9	म् कंतिरव	मूक्षतिदव

মেহিনীমেহন কাব্য।

প্রথম সর্গ।

THE PROPERTY OF THE PROPERTY O

"What is man! for simple us he look."
Do but try to decelop his hooks and his crooks,
With his depths, and his shallows, his cood and his evil,
All he all he's a problem must puzzle the devil!"—BEBNS.

'গেংসার সথ আগার যেই জন কর,
দরাখুনা জারি দেই কি আছে সংশয়।
যে পার্শ্বে কিরাই আঁথি দেখি জীবকফী,
স্থে স্থ্যু শব্দমান্ত, জান হয় স্পয়।
হর্বলের প্রতি প্রবলের প্রপীড়ন,
প্রাণ কাদি উঠে বাহা করি সন্দর্শন।
স্বচিত্র চিকাণ ই অল পত্তম্ব পাদপে
পশিয়া প্রকৃতিশোড়া, করিছে আতপে।
কি চাক বরণ প্রভা সাঁথি ভৃত্তিকর,
নিরীক্ষণে নির্বাশিত উত্তপ্ত অন্তর।
এমন সময় এক কাল বিছল্প,
ধরিল পত্তম্ব আগি প্রকৃত্তিশি বিক্রম।
কোন স্থানে দধীমুখী বিদি শাখী' পরে,
করিছে সংগীত কিবা সুমধুর অরে।

त्म पूत्रनी - श्री श्रीम मन भूनकिछ, विश्व मीना मञ्जा भाग्न छनि तम मश्मीछ। अमन ममन्न अक मिकातिना नाथी, क्षिक मि पशीमूथी इट्ड जरु माथी। কালাভক কাল সম করি পরাক্রম, किनिन करनिष्ठि ठाशास अधम। কোন ছলে নয়ন পুত্তলি পুত্রবরে জননী[†] হইয়া হারা কাঁদে শোকভরে। अमृति निर्मंत्र काल महायूना मन, জননীর ক্রোড় হতে কাড়ে পুল্রধন। कबर्ग उस्मनश्चि असि जनभीत. আছে কি এমন মন হতে পারে স্থির ? वत्क कताचां करत ध्नाग न्यूछित, ঝর ঝর ঝরে অঞ্চ হাহাসগলিত। कामन धान्ता छ। समग्र विम्दत्र, ठाकिया मःमात, वत्म च¦३ इन्हर कत्ता। कोन चार्न नार्वेका मलिन (यम प्रति, अधि उट्ट बादर बादर युक्टिका कति। मिन वमन हिन्न जाएक में जानि, टिति यादी इसे निक (मह कत्रजानि। কক্ষে বুলি করাস্থলি ধরি বংশম্**তি,** शुर्ठिन जैमरत अंग्र वृत्यि मिन मन्ही, ৰক্ষ কেশ অন্থিপেৰ তাহে চক্ষু বসা, **छेनग्र अन्तर्भ नेका** निर्देश मक्ता। कान कृति क्रुंगाधि गणि-मणि हीम, रख धर्मातिश किका हाटर वित मीन।

খন খড়েল কান শির কার কাটে ছাত শোণিতে ভাসনে ভূমি তাহার পশ্চাৎ। मुभारतद माह्यामत इंडिक डी.वर्ग, পশ্চাতে আসিয়া তার নাশে নরগ া ক্ৰিষ্ঠ ভাই মতুক ছজ্ম, বিস্তারিত করে পরে ধোর মারীভয়। কোন ছলে গাথিক, ধীমান, ধীর জনে, भाषिक भाष्ठ नह नियुक्त भौड़ान। 'লোষী নন অন্ত দোষে হাধু সতাপ্রিয়, দোষী নন অন্ত দোষে হার জিতেতিয়। मठा धर्म जागा कथा (यह जान नात्म, निर्द्वाध विनश प्रके उपहाद महाद्य । •शब्धना, धं जादना, शब्धनीहन. क्रितिए स्निक (यहे (मृहे विक जन। मग्रायान, मानमील, प्रश्यी प्रश्येष्ठत, निर्द्यात्थव गिरवामिन जात्मत त्राह्य ; পরদেষী, পরস্তপ, পর-হিংসাকারী, वृक्षिकी वी मिरे क्रम यानत जाराति! गठिनिन (यह जन এ ছার সংসার, কেমনে হদর তার কৰণা আধার। कीरवरत यञ्जन। फिट्ड वरे कन मक, म जन मक्स मिए सानत्वह साक ! সতা, ধর্ম্ব্য, যে সংসারে এত স্থবিরল, ৰিভ্ন্না সে সংসাবে বসতি কেৰল। , मतामञ लाक पुंकि ना शाहे करारज, বল মন সে সংসারে রছিব কেমতে।

পদে নাছি পদাসুলি তাহে কত শত, ভদ ভদ করে মাছি তাহে প্রবিরত। কোন, ছানে অন্ধ্ৰুতনে প্ৰসাহিয়া কর " দে বাপুরে ভিক্ষা মোরে" বলে নিরন্তর। দুক্তিহীৰ থেই জন কি কফটই তার, হতভাগ্য তার সম কেবা আছে আব ? ষে জন জীবেরে পারে সৃজিবারে অন্ধ, কভু না তাহার হৃদে আছে দ্যা-গন্ধ। উচ্চ- অভিনাষ-হতু সমর অগম, 🤲 প্রকাশিছে কোন স্থানে বিষম বিজেম ! विभान मिक्कि करह अधि अख धर्व, চক্তকি তরবার বালে বাম করে। লোহিত লোচন তার যেন প্রভাকর, मानवर्गाविट जात तकारू अध्रत। অক্ষে অনল অস্ত্র ম্বে সঞ্চালন . क्रिश मानवकृत्ल नागरत क्र्जन। मूक्यूक कांत्र माटन यक शांत्र लाज. छेशनक इस मदन धनस विश्वका अमिकृषि मिथि हत्य थान कार्य जरत, শিলার্থি, বলি জম জনমে অন্তরে। भाकाइकि यट^क रमेरे करत वित्रमण, गंड डेन्कार्भिंख वर्ष (यन करैंग करा। সহল সহল লোক পড়ে সে প্রহারে, অট্টানিকা কত শত যায় ছারখারে। স্দৃশ্য নগারশোক্ষ: মুছ্তের্ত বিনষ্ট न। क्य निम्बि मारा कात मान करें ?

মনোমতং বর্দ্ধ খুজি কাটাইত্ কাল. না পাই ধার্মি জনে এ বড় জঞাল। অমৃত কলিয়া জ্ঞান যাহা হয় মটন, গরল প্রতীত হয় সেই পরকণে। মিণভাষী, হাস্মুখ, সভাৱতী কত, জিতেশ্রিয় স্থান্তীর, ধর্মপথে রত[া] কথা ভানি মনে গাণি ধর্ম-আবতার, মনে করি এই বুঝি পাত্র বন্ধুতার। ্ অটল বন্ধুহপাশে আবন্ধ হইতে, ভূমিক্ত্মতমে নন তারি একচিতে, যেমন সভাব যার ক্রমেতে একাশ, সতা অভাবের শেষে পাইল আভাষ। ভৰ-কাৰ্যপ্ৰস্ম - উছানে যের। বাস, শকুমলালোক মুখে অভাব উদাস। অন্তর-উদ্যান ত'়র করি বিলোকন অবাক্ হইয়া আছি না সরে বচনঃ यज्ज्ञश शाश्चक शास्क भरमानगरम, সতেজ সে সর্বতক নহুনে প্রদানে। কুটিলতা-তৰু যিটি সিটি ভয়ন্ধর, নির্থিলে সিটি চক্ষে গায়ে আদে জুর। এ সংসারে বাসতরে বাখা ছিল আশ, এ বর্দ্ধর সহবাসে গেছে মে. প্রবাস। 'ব্যুন সংসারে আর নাকরিব বাস, ত্যজিব ভুজদসম নরসহবাস। ^ব जिमिश्रा कांगेरिक काल यांव मिशाखरव, সভাবের শোভা হেরি ছুভাব অন্তরে।

किंह रात्र आवनम मन त्थारनीता. जिल्हा कर्मान याहे कि मिश्रिय किरत । महना जरना नाहि जात्म जामा वहे. विष्मिष्क्रमार्ग यात क्रमान का कहे। (इ भिड:। मिणवकारन शतिगम्भार b কেৰ বা বান্ধিয়া ছিলে ! অঞ্চ নীয়ে ভাসে তारे मम कृषि धरव; तन भा अधम কেমনে সে স্নেছপাশ করিব ছেদন। ছে পিতঃ! ভোমারি দোষ দিই ৰা কেদনে, कान मिनावादरण में अध्यक्षाद्यार दि मिश्राहोत **इछै** जूरे कड हिस्स. कांख इवि मंडाइएउ तक्षक मीरन। তোহার কুফাঁদে পড়ি মত বল্পনে, कतिराज्य इष्टेक्ट विश्वात खुलान ! या इरोत इत्य ठाई त्रवना कथम. जित्नक अ भाभाभारत कतिन ममन। পर्याप्तिय नामा (मर्गा, नगत, ध्रास्त्रत, সভাবের শেভা চেথি জ্ভাব অভর। নির্থিব রম্বাকর, প্রোত্থিনী শত, ভূমিৰ কাননপথে দেবিৰ প্ৰতি ৷ निर्मात सर्मात भाग छान्य धारा। विष्क्रम-भाग तमि अनिव कानता। किल हात्र विमात्र हाहिब कांन् आएन, धांगमम मम मिह खिन्ना-मितिशाता। याहे नम्र मा विलिया नजूबा कथन, मित्व मा विभात मादित मि विश्वनमा

कि कहिन्न, हेरेमांच दुवि भूगा-छान, নত্রা এমন চিন্তা ছদে পায় স্থান। यनि याहिना विनिन्ना थिया अखिगातन, निक्षा विधित (महे जार्शन शहारा। तूर हेश यमि वनि कुसिट्व निम्हश्र, मम अनिश्चिमी क्ष्रुं प्यातीय ७ नश्। विन शिक्षा यादे जादे छादिएश विमाह कला यांव (मर्गे छित्र कि मत्मर जाता" এইরপে যুব: এক বসিয়া বিজ্ঞান, विल परिवास भारत। वयः भक्षविश्मधाम काछि मनाइत, শুচিক্রণ কাল কেশ দেখিতে স্থন্দর। •ললাট বিশাল ছেরি মনে জান হয়, ধীশক্তি বসতি করি চির তথি রয়। স্থচাৰু চিৰণ কিবা তার যুগা ভূক, (इति तमनीत हिम्रा कार्रा क्र इक। जाकर्ग नम्रन-यूग मोम्पर्या - जानाम, कि माधुदी रमरनित कितरह धकान। আঁথি ছটা হেরি তার মনে জ্ঞান হয়, বিক্ষারিছে বুদ্ধি-জ্যোতি দিরা তারাদ্বর नामिका श्वाप अडि, 'क्वित मन्नन, मेयन् (गाँटकर्व दिशा हाक स्टामाजन। প্রতাধর হুইথানি স্থাতের অতি, মুত্রল মধুর হাসি তথি নিবসতি। कोयूनी किनिया त हानित कर्ण हो। (गाँकक्रभ-चम भार्ष ददि-त्रिय-चरे।

चम्बूत कथाश्रील कातांत्र च्यांत्र, म खब्र धवरण नाडी बार्थ कि धकारब कून, भीन, नक्का, खग्न ; करत मरन भर्न, कुरम जाबि मना एरन रम यशु निकर्ण। विशान म वकः इन मीन्तर्या कि जात, নারী ভিন্ন সে রূপের মর্মজান কার? হেন ৰকঃছল মাৰে অন্তর আবাস, যে অন্তর কত উচ্চ বলিয়া প্রকাশ कतिरव (कमरन कवि: शांति विनिर्गात जना नत मन जिथ (श. हैं। किस्तिक যেমন সে উচ্চ পুনঃ তেমনি কোমল, জগতে নাছিক যার উপমার ছল। কংশী দুঃধিনীর অঞ্ মুছাবার তরে, যত্ন করি গঠিছিল তার যুগা করে এ বিশ্ব - সূজন - পাতা, সে বাছযুগল পর-উপকার-ব্রতে সদত চঞ্চল। অন্য অঙ্গ প্রভার্জ মাধুরী বার্ববারে कित्रा श्रद्धांकन जांद्र ; त्रीमर्वा याशद्व निष्क পরিণয় করি শরীর মাঝারে বিরাক করিত সদা শোভিত তাহারে। অভিধান মোহন হুৱাকণ সন্তান, हिष्ठार्थत निवमित मत्नातमं शान। জননীর এক মাত্র সন্তান মোহন, অতি প্রিয় মধা ষ্টি খঞ্জ প্রেরধন। উত্তম সঙ্গতিপন্ন জনক আছিল, আত্মজে কালেজে বিদ্যা যত্নে শিকা দিল।

जर्भ किर्दन कुछिना इरेन साइन, वृक्तिकी विन मग्राम्य श्रिशेकनः করিত তাহার অতি; অসা বরঃক্রনে বিভা দিয়া পিতা তার রাখিন সমুমে। তে জিয়ান, বুজিমান, বিশ্বান যে জন, বল-রাজে। বাস তাঁর বিষম জুলুমু। অজ্ঞতা-তিমিরে যথা চির আর্ক্রাদিত, বিদ্বান তথায় কোথা হয় গো,আদুর্ত। মুর্খের কোথায় মিল সহ পণ্ডিতের, विषाद मुग्छ मिन क्रीड्रान छिता। विश्वादक काशी दिनाय पृष्ठ कारण कारण, মিছা কত অপবাদ তাঁহারে আরোপে। कू काँ एक किलिए जार के वार्यान्, मन[®] (ठकें) करत्र किरम **इरव जन**मान इन मणा चिंत भाइत्नत निक थारिम, জুলিয়া উঠিত সব মোছনের নামে। **म्हिन कुमःकां**त्र किरम इहेरवक पृत्र, করিল শোহন তার যতন প্রচুর। विश्वा निवाह न्याटि इस श्रीतनन, ধন মন দিয়া চেটা করিল মোহন। कूष्ट्राश कूलपर्यामा किरम इट्टेंच श्रः म, বছল মোহন তার পরিশ্রম অংশ লইল আপন করে; ফল'লাভ তার, কুবচন, জালাতন, অপমান ভার। इः एथ मक्ष कति मिन मिर मिश्रास्त्र, সরল অভাব যার সে কি অসতের

(भारिमीरमादन कांदा । '[५म नर्ग। क्षेत्र त्र्विए मक १ मानव - अङ्गिष्ठ मिला कामिल थान कर्नामा बाइडि। मत्नाष्ट्रास्य ठारे नत्रहति भूग अता, ত্যজিতে বাসনা তার হলো মনোভর।। যথা বাজিপুৰ্ণ বন তাজি মৃগদল, অবেষণ করি তারা অন্ত বনক্ল, शनात्र कूछि मददत नाहि हाटर किरत, · যায় তারা শৃষ্ঠাপুত্র অরণ্যানী তীরে। हि शाठिक महत्र साइम मजन, नद छे शबूक नइ दौरम ५ छून र। नक्रू क्षिति जनियान विचेद्र मेरियार, না কর কোন পাঠক না করছে কেছ। দেখিছ আপন চকে উব বন্ধুজন, তব সর্বনাশ তরে, একান্ত যতন।° তোমার মলল দেখি ঈ্গায় কাতর, তৰ যশ আকৰ্ণনে ব্যাকুল অন্তর। - তথাপিও তার প্রতি সন্দেহ না কর, বুঝোনি কিছুই যেন তাহার অন্তর ' হেন ভাবে কথা কবে তুমি তার সনে, সক্ষ হইবে তবে রহিতে ভূবনে। জিজাসা করহ যদি বন্ধু সৈ কেমন, अभवन अरवस्यं करत राहे जन। তহুত্তর দিতে কিনা সক্ষম সহর, কোণা পাৰে সতা বন্ধু অবনী ভিতর ? কেহ না আপন তব আপন সহল,

क जार्भन वन खर विना जर्थ वन ?

দারা, হত, ডাই, ভগ্নী হউক না যে জন, विना अर्थ अर्थमार्थ एक कर्द्र यछन ? काश कुरव बहु वल ? श्रेत वह नज्ञ, দেখিয়া তাহার ঈ্ধানা মান বিশায়। কৰ্তনা মনেতে ঈধা মুধে রেখো প্রীতি, সম্পুত্তি শাস্ত্রজ্ঞদের এইরপ নীতি। হয় যদি উচ্চ মন, ছেন আচরণ, श्रुगांच्याम विल यिन कत्र श्रुगांचा। তবে যাহ বাটী জাজি মোহন মতন, তুমি উপযুক্ত নও র'তে এ ভুবন : পাযুত্রী পাশকে নির বেটিত ভবন, তার মধো ভূমি यनि शुधिष्ठिश कन। इत मना उर नित्म निराकी जम, दाशम- हक - (ठाकत यञ्जन। विषय। প্রাণের প্রতিমা প্রিয়া হকক না শমলে: थार्वत प्रका श्रुव यात्र मा कीवरमः হৃচকুর মাথা খেরে থাকনা কমিয়া, দারে দারে ভিকা তরে যাওনা খুঁড়িয়।; उथाशिक मृष्ट खिक जाबित जेबाज, নৰুবা নান্তিক তুমি এ ভব ভিতরে। হেখায় মোছন বসি দিয়া গণ্ডে কর, রাছ অভ্যত্তরে যেন কুর নিশাক্র। চিন্তা-রাছ মুখটাদে করিয়াছে আস, সদা হাস্য যার আস্মে তার নাহি হাস। ভাবিতে ভাবিতে দিবা ক্রমে অবসান, দিনমণি দীনভাবে করিল প্রসাম।

याप्तिनी-काषिनी शति कानिया लेनेब, व्यादिक्छं अंकूरान, इशी कीरभन। तमगी-क्रमत्र-मिक् (इति कांस-भनी, क्षिनित्रा डिटिन द्य, प्रशेष्ठ क्रश्मी। महा। नमाभेज दिति हिन्दा माइम, করিতে প্রেমনীস্থানে বিদায় গ্রহণ। त्याहिनी मारश्दत (इति कहिर्ह उथन, করপ্রে করপ্র করিয়া গ্রহণ;-" अम अम अनुननाथ! अ आंत्र (कमन, " मनिन वंगन उद आंक्षि कि सादग ! " मन। यात शाम पूर्व, रन प्रथम छत्तू " वमिक करबर्द्ध किन विश्राम-गंद्राम। " (मधा श्रम ज्ञामा मिन विशे मञ्जापान " তুষিতে দাসীর মন, আজি कि কারণে " र्यान रता जाह नाथ ? गैज सादद रन, " कानिए बेब्रात रब्जू हिल महक्षन। "ছিছি ওকি প্রেমময় অঞ্চ বিদর্জন, " क्तिएं मागिता (कन ? ध्यांग (य क्मन " করে মম ছেরি তব শোক-ত্তাশন। " সে মন্ত্ৰীর মূর্ত্তি এবে এ ভাব ধারণ " করিল কেন, হে নাথ, শীত্র সে কারণ "কহি ভূষি কর মোর **সম্পে**ত ভাল। " (मथ, नाथ, ध्वल वार्षिका छत्त्र गांधी " ছিল ভিন যদি হয়, আঞ্জিত দতা কি " কছু রছে পুর্বভাবে ? দে ছচাক কান্তি " হয় না মালন তার ? দেখি জ্বো ভাস্তি

" वज्जी अभीत वाल ; मिथ मिरे मेगा " इहेल जामात जाश इहेम् विवर्णा। " বাক্তু তি নাহি ছয়; প্রাণ যে কেমন " कतिशा डेठिए मय ; तूबि अ क्षीवंन. " ক্ৰিরিল এইবারে; নতুবা আমারে " তৰ মনোহঃধ কছি রাধ জীবাত্মারে। "আমারে হেরি বিষয় কতই কাতর " হইত বল হে সখা ভোমার অন্তর। " আজি এত হঃখ প্রকাশিছি তব স্থানে. " তথাপি কেন হে বল নাহি শুন কাণে।" किहूकन इजनांग्र ७ छेश्द भारन রছিলেক অনিমিথে; উত্তর প্রদানে অশক্ত মোহন; অনুৰ্গল অঞ্জল वर्डिए नागिन जोत्र संमाह कवन : জ্ঞান হলে। মনে, ছঃধ ত্তাশনে वाका खबीजुछ इत्य स्वतिम नश्रत। ধরিয়া মোহন শেষে হাল ধীরতার, উদ্বেশ- তুকানে তত্ত্-তরীর উদার করিয়া চকিত মনে কহিতে লাগিল;-" মম হুখশনী, প্রিয়ে, রাহতে গ্রান্দ। '' যে ব্লাক্ত অংথ-রতনে স্থরিক আমার, " সে রাভ বি ভয়মর কহিব কি তার। ্ৰবৰ, চাঁদে, যে ৱাছতে ৰুৱে, ধনি, জু্াস, · সে রাছ এ রাছ কাছে পারলো ত**রী**শ ' চিন্তারাত নাম এর অতীব ভয়াল,

" मानद्वत स्थलनी आमिन्दित काल ;

" धर्म करत अ ताक य मनिय-कान. " অহি শেষ করি জার রক্ত চুবি থার। " जमा होत काछि शूकि निविध नत्रहनै, "क्षम श्र श्रक्त इत जिमि सूथ मत्म ; " কল্য যদি ছদে তার প্রবেশে চিন্তার, " কোথা সেই কান্তি রছে বলনা আমায়। " जित्र थिएत रामना करति जामि मरन, " का है। व जीवन मम विद्रम अमर्ग। " त्रवना ७ खतकत मश्मात-माबाहर, "পর্যাটিষ বন উপকন ও কভিত্রে। " अक्रुं ि-त्रमे शिष्ट क्ति भन नीन, "कांगेंच ममग्र मम दैं। हिंद यानेन। "প্রকৃতির প্রেমস্থা যে করেনি পান, " রথা তার তত্ত্ব, প্রিয়ে, রথা তার প্রাণ " (माश्रामत कथा अभि कहिल (माहिनी, धित्रा कारखत गना स्वत भागनिनी। "कि वनितन, सीविटान, जाद स्थाता नार्र, " विरामत्म याहेर व हेण्डा जाहे मम ठाहे " চাছिছ विमान्न, वन कांन श्राटन " कंडिटल मारून वाका मम महिशासा। " এ জीवन धरे करने शांति जानिवास, " তবু ছে বিদায় আমি দিব নী তোমারে। " विटमणं खमरण धेक्या यनि इत्त थारक, " व्य **७ ट्रं श**र्गनिधि वर्षेत्रा जागांदक। " जुमि यांट्य मिणीखन आमि त्रव घटन, " धरत्रष्ट अमन हिन्छो किमरन अस्टरत्र।

" তোমার অন্তর আর আমার অন্তর." " (थरमत्र भिक्टंस दौधा-आर्छ निदस्द । '' সে প্রেমশুখালে, স্থা, করে তুমি ছিন্ন, " ছ-অন্তরে একৃষ্টির করিবে ছে ভিন্ন ? " ইছিশিখা যদি ইচ্ছে বায়ু ছাড়া থাকি, "বিফল সে ইচ্ছা নাথ ভার হয় না কি? " ভূমি ছাড়া থাকি यদি লতা ইচ্ছা করে, '' বিফল সে ইচ্ছা তার জান হে অভরে। " প্রাণছাতা থাকি যদি ইচ্ছা করে দেহ, " (म रेष्ट्र) विकल जांत्र कि आंट्ड मत्ल्रह। '' ত্যেমা ছাড়া থাকি যদি ইচ্ছা করে মন, " (म इन्हा विकल इत्व अर् त मजन। " विट्रांच छः, छ नेशांग, जमर्नेत्र क्रिन "সৃহিতে অশক্ত হবে শুন স্বিশেষ।" কিছুক্ণ মৌন ভাবে রহিয়া মোহন, পরে মধুবাক্য তার করিল বর্ষণ। " যা কছিলে, বরাননি, সব সত্য মানি, " একান্তর তুমি আমি ভাল আমি জানি : " কিন্তু, চন্ত্রামনি, আমি করিয়াছি মনে. " कना यांच मिनास्त्र नगत जमर्ग। " প্রকৃতি গঠিল মোকে করিয়া পুক্র, " সহিতে হৰিবে তেঁই যন্ত্ৰণা পৰুষ। " काश्रक्य (यह जन, विरम्भ जमत्न, "আশক্ষা তাহার হয় জেনো তুমি মনে। " সাহসী পুৰুষ যারা বিদেশ ভ্রমণ 'করিছে অকুতোভয়ে না ডরে শমন।

" जैयां श क्रमधिकनः (भाज चौद्रमहत्व " छेड़ीर्थ इरेट्डे मना वानिका कावरन । "উতাল তরক্ষালা হেরি জলবির, "কাঁপে ভরে ভীক্ষন হইয়া অছির। " সেই সে পর্বতাকার উর্বি পরোধির, " সাহসী আরোহী চলে হৃদয় স্থাছর। "সাহসী পুৰুষ যারা স্কুর্গম দেশে, "यहिष्ड् निःमक्षमत्न मुर्शाज-व्यात्मतम्। " বাহির করিছে নানা প্রদেশ বতন, "বাহির করিছে নানা নদী প্রস্তবণ। "উঠিছে গিরি-শিখরে লয়ে তাপমান, " माशिष्ट छेकंछ। शीम इत्ता यक्ष्यान। " ভয় যে কছে কাছারে জানে না তাহার। "কথন হয় না তারা ভয়ে জানহার।।° "সাহস অমূল্য ধন সংসার মাঝারে, 'নাহিক সাহস যার কাপুরুষ তারে "কছে সাহসিক জন জেনো তুমি মনে, "পুরুষত্ত মানবের সাহস ভূবনে।" (माहत्मत कथा अमि त्याहिनी सम्बदी. কহিতে লাগিল কান্তে স্বিনয় করি। " প্রাণনাথ, দেখ থোর इইল যামিনী, " घूमा केट घठ जर श्रूक्य की मिनी। "আমরা হজনে হাই আছি হে জাগিরা, " শরীর করিছ শীর্ণ ভাবিয়া ভাবিয়া। "या इराज इरव कमा आंकि निजा यांक, " সন্তাপ হারিণী-নিক্রা-ক্রোড়েন্ডে ক্র্ডাও

" তোমার আঁকুল চিত্ত করি হে মিনতি," " হৃদ্য হইতে দুর কর চিন্তাসতী।" এত বলি মোহনী মোহন-কর ধরি, শয়ন করিল টোছে পার্যন্ত পরি। (४ हिमी-नश्रात निका भीख उपश्वित. সে স্থাং মোছনে নিজা করিল বঞ্চিত। विखाबाक यात (मर्ट करबरक धारतम, তার চক্ষে কোথা হয় নিদ্রার আবেশ! (माहिनी निक्ति) (मिश छेठिन (माहन, **এक मध्ये भाश्नि**त वनन করিতে লাগিল, তবু না ফিটিল আদ. কে করে টালে হেরিতে বিরাগ প্রকাশ ? साहिनी-वनन छाहि निकल नग्रत, খোহন কহিছে কথা সুগু প্রিয়াসনে। " অরি প্রাণেশরি আজি বাঞ্চা পূর্ণ করি. "হেরি তব চন্দ্রানন; এই দে শর্ক্রী 'জাগিয়া বহিৰ হয় নেহারিতে কান্তি "তব। ফত হেরি তোমা নাহি জামে আ'ডি। "একেতো তোমার রূপ জ্বাহ-খোহিনী, "তবসম নিকপমা কোন সে ভামিনী ? " তাহে निजावत्म ज्ञान विश्वन डेक्जन, "সতাকি না এই কথা রসিক কেবল "কহিতে সক্ষম, প্রিয়ে, র্মান্তি যেই লোকে, " ऋद्ध सम्मती नात्री ट्रात मीथाटनाटक । " मीर्था किम खुल भिष्ति भिष्ति ? '' धनीः' প নাছিক তৈল। তাই হবে ছির।

" वर्षे . (यं धामी भ-भूग ठिन त्रक्तिगाँ रह, " কি নিৰ্বোধ আমি রহিয়াছে কাছে "কারণ ইহার, তবে আমি মিছে কৈন ' ভ্রমে পড়ি অক্স রূপ ভাবি মনে হেন। "যথা ভামু গগনেতে হইলে উদিত্ত " প্রদীপ-শিখার জ্যোতি কবে সে বঞ্চিত, "मम প্রাণেশরীরণ দিনাণি জিনি. "প্রদীপ-শিখার জোতি যদিও মেহিনী, · শবে পরাজয় কিবা আঞ্চ সে সন্দেহ, "ছুখে তাই ধরিয়াছে স্মলিন দেহ "অরি ইভমুথি আজি মিটাইয়া আশ. "হেরি তব চন্দ্রামন, তব সহবাস-"সুখে বহু দিন আমি রহিব বঞ্চি, "**দদিপটে তব রূপ** করিব অ্রিড়ে ৷ " তোমার কারণ হ'লে আকুলিত মন, "করিয়া আমার জনি-পাট উদহাটন "मनकारक (संशासित ७ एक्टिमन) " श्राटिश्य मिलिएल (धी ठ कहित ८ मन : "यामिनी रूरेन देशक नाहि निका धटना, "वरंशामणी होम करम करम जरन राजा "প্রকৃতিস্কারী ধুনী নিজায় বিহ্বল, '' ज्ञांगिशा दहिहीं सुदू यं जागा करन। "কতি<mark>ণে শয়ৰ কৈ</mark>ৱিবাৰে আহাধন: 'निमात्मवी, अविकिंश अदमन कामन। 'यमि भूवें दर्द धनी दक्षा कदिया, " कृ**भागीत्म, कृभामुक्त कर (गां जामि**शः।" ं उत्तर वैनि भाइन कतिल महान महार्खः इदेशं निर्धाः मिलं महाभेग्। शति, बिटा, धत कृषि कि मुक्ति स्माकिनी, मनश इछ याद्यादि मछाशदातिभी, ক্তৰি-জ্বালায় তার কি করিতে পিংরে ? কিঞ্চিত কৰুণা দক্তি কর্মো আ্যারে। उर जार्म निभाकारन कतिरम भंगन, পলতে জীপি ছইতে বল কি কারণ ? জায়ি নিজে, তব দোৰ দিই বা কেখন গ ভোষার সতিনী চিভা যে করে ভজন. তাহার নিকট তুমি কভুত অংস মা, লার সনে তব প্রেম কড় ও হয় ম।। হেন মাচরণ তব নহে শ্রেষক্ষা, ভাবিয়া দেখুন দেবি তোমার অন্তর। भागात्वर भञ्जाञ्च ७ ७ ७ ७ १ मनी ্য নহে নাডিডা করে সেত পশুমতী। তোমায় মে জন ভজে সাস্থা তার গাংট তোমায় যে জন ভাজে রক্ষা কব তাকে হইতে সংসাধ কয়; ধেই চিন্ত, ভজে, त्मरं अन जात्न युद्ध कि आत्मातन भटें । করীশ্বর দেকপিয়র ভজি চিন্তাসতী, ार्ट्या कि नारवामान, गरम वस्रमञी e হিয়াছে পূৰ্ব সদা, হিৰে মত কাল, गमानत ज्योक्रां जिल्ला जिल्ला देशांन काना। य नार्यामान कुछम्बिकमिछ, भोतराज करा **जरन** करह आंद्रमानिङ:

य कारा-कूछ्म कछ रत्र मी मनिन, य क्रांचा-कूर्रभ-गंक ब्राह् विदिनिन, य काना-कृष्य-मधु ककु ना कुक्षांत्र, যার দোতে হথী অনি আনুখ্না ধার। হেন কাব্যোদ্যান, দেবি, চিন্তার সূজন," मिंडिएक अमन प्रया मक कब्रजन? श्रध (गरे जन कम (य जनात मन, চিন্তায় সহায় করি জমে ত্রিভূবন। স্বৰ্গ, মৰ্জ্ত, পাতাল যাহার মনোপটে পশি রহে একবারে সেই জন বটে ক্রিপদ পেতে দক্ষ; আর চিন্তাসতী, গঠিনা অলক্ষ্য দ্রব্য হয়ে মতুবতী লক্ষ্য করি দেয় চকে; যাহা শূতাময়, কবির লেখনীমুখে বস্তু জ্ঞান হয়। হেন যে কবির পদ হয় চিন্তাদতী, প্রদান করিতে পারে মানবের প্রতি। ভারত-গৌরৰ ক্বীশ্র কালিদাস, यात यमः-त्रवि-एका जि स्थी-मनाकाम উজ্জ্বল করিছে চির; যার কাযোদ্যান, श्रधी जटन कि जानम कृदत त्य अमान, कहिंच कि मीन अर्मि। खाल तर बन, त्म कारा-कृष्यम्भश्र यात्र सुक्षे मम করিয়াছে পান কভু। হেন কালিদাস, কৰিপদ পাইৰারে কাহার আশাস পাৰ্চন ৰল গ্লে দেৰি ? ডোমার সতিনী िखारमयी, निया निका भोकि स्म स्माहिनी,

যদি না কবির মন করিত উজ্জল, গোখা পাইতাম অভিজ্ঞান শক্ষল বল মোর।? অয়ি অভিজান শকুন্তলে, কোন এব্য তব সম আছে ভূমগুলে ? ধর'বামে ছেন দ্রব্য যদি কিছু থাকে, स्थीमन लुक्तं इत शाहेट यादाटकः থাকে যদি কোন দ্রব্য অবনী ভিতরে, যাতে স্থবিদল সুখ লভিতে জন্তুরে बग्रामा जक्षमा विमर्गत । मरमारत, সার কোন দ্রব্য যদি পারে থাকিবারে, उर नाम, मक्छर्म, कतिवादत शाहि। মম মতে দিবে মত যে দেখে বিচারি। समिती काकात, निर्देश, यह भक्छला, यात लाएं प्रधीयन अंडरमा छेडला। বুঝি দেখ অগ্নি নিজে, তব সতিনীয় সে সন্ততি; যার স্থাপুর্ব হৃদর গভীর ভাগারেতে রম্বর্থনি চির বিরাঞ্জিত, যে রত্বরাশি লভিতে সকলে ব্যক্তি। সে রক্তরাশি হৃদয়ে যতই সঞ্চয় कड़, मार्थक भंतीह मार्थक समग्रे। ञ्ज्यत, ज्ञा नित्स, हिंखारम्बी मह. হয় না উচিত তব বিবাদ কলছ। এার্থনা করি গো তাই মবে চিন্তাসভী ভাবিয়া ভাবিয়া হৃদি আকুনিত অভি कतिरव आश्रुन, जरब हरम ममावजी, কৰি জোড়ে কোরো তুই ক্লিই চিন্তাৰতী।

া হৈ । দ্বিতীয় সর্গ ।

" Thou glorious mirror where the Almighty's grm Glasses itself in tempests." Bynos.

উযাসতী প্রাচী দিক করিয়া উজ্জল, তুষিতে মানবে আবিভূতি ভূমওল। কিরপ ধরিল ধনী কি স্বচাৰু কান্তি. নিরখি নয়নে নাহি জবে কভু আহি। किया (महे अश्रष्टी) निक आदिना करत, वत्रभ অতি ऋमत জन-मत्न इत्त्, শুক্তারা মনোহরা ফুওল ভূষণ, পরিধিয়ে ধনী তাহে রভিমা ব্যান, इवि আংগ পর্বভাগে আসি দেখা দিল, উষার পশ্চাতে রবি আপনি রহিল। यथा यद नदा कड़ि नद পहिनेश, মনস্থে নব বহু জানিলে আলঃ; নিজ পুরংঙ্গনা গণ করিতে বরণ, অথে ছাপে নববধ্ পিছে স্বামী র'ন, যথাপ্ট ছেন জান হয় কবি-মনে, উষাসতী দিন্পতি সহিত মিলনে। জাগিল প্রকৃতিসতী-সহ দিবাচর, भीजन मनश्मिन वटक यात यात्र। , কুজনিল বিহলম প্রফুল, অন্তরে, ছটিল মধুপকুল মধুপান তরে।

গুন ধন স্বার্থে পাশে প্রকুল কুম্বানে, " भृदिल जुरन यन स्छे १ मर्ग प्रा "রাতি পাৰা, রাতি পাৰা" কোকিল ডাকিল. मानतम् नव गानव छेठिन। निका लिए साइटन यानम मनिएत, छेतिन तमनी धक स्भीन भदीरत। আহুল কুত্তল তার লোহিত লোচন, স্ত্রচঞ্চল ভাব তার বালিকা মতনা". মাশ্য তার হাশ্যশূম তিল নাহি সুখ, भिद्रशित्न (याम इस अमाहे जासून। देश्हामञी नाम छोत्र (५ भारक जन) रेण्डानादी मनस्य तल (३ कथन। (माइन मानरम शिंग जाकृत क्रमंत्र, সম্ভাষিক ধনী তায় অতি স্বিশ্নে। " উंधर भार्म हत्ना निर्मा अवमान. িকি আশ্তর্যা এ পর্যান্ত রহিলে শ্রাম। 'বাইতে ভমণে ত্রাকর আগোজন, · नाजित याहेट शत्र (माहिनी-(माह-" উঠিলে রমণী তব: কর আকর্ম; ' এদো মম সঙ্গে শীজ শীজ দে কারণ।'' চমকি উঠি মোহন জাগিলা উঠিল, ধীরি ধীরি মোহিনীর বদন চুম্বল। ,প্রোজন মত নিল গরিধেয় বাস, সহজ মুদ্রার নোট নিলা অপ্রকাশ। ^{*} খানকত মনোমত **ংত্ত**ক ख्विष्य ते इन्त अक मा क्रि मिल।

जनक जननी शेष कतिशे व्याहेश. श्व जारव नाहिन्तिम रूपेट जनन। इंचक निक्छे यमि एही कान भारक, আকর্ষণ করে যথা সত্তর ভাহাকে ৷ जनधिजन-निमग्न চुत्रक भाषत, আকর্ষিল স্থচীরপ মেছন-অন্তর! অর্ণবৈ হেরিতে অত্যে মোহনের মন, **२ हेल** চঞ্চল তাই স্থচীর মতন। বনচর বিহলম আবদ্ধ পিঞ্জর, সাধীনতা পেলে যথা প্রকুল অন্তর. সংসার-পিঞ্জর হ'তে তেমনি মোছন, হইয়া মোচন তার বিকসিত মন। প্রতিঃকাল সুনিম্ল গগন মওল, মুত্র সমীরণ তাহে বছে পুশীতল। मिति स्म मभीत प्रष्ठ स्माहासद मन, डेर्किन जानत्म नाहि, बानक रयमन भूडनि गुउन (भारत। हाक (ध्रमनीत ৰারিল নেহারি রূপ প্রকৃতি সভীর: कान ছात्म कृत्रमत्न त्माहम अभीत, वनक्वी नित्रीक्त करत, कति कित তাহার নয়ন গুণ; কিবা শোভাষয়, বনরাজি-বিরাজিত শোভার মালয়। মুচাৰু তৰুৱ কায় নব কিসলয়. नज्ञम, कीरन, अकरात्व काड़ि मन्न। আহা কি মোহন মুর্ত্তি গাঁগি প্রীতিকর, কি দ্রব্য ইহার তুল্য ভূবন ভিতর?

मलत माक्ड मर्था मर्था प्रश्ने वत्र, মান্দ উথলি দেয় তক্র মনসুখে তাই তারা সঞ্চালি পল্লব, (मशार**ा स्मान्स्या त्रिता** डाकिट्ड मानन। यश्न शामशकुन कतिन मर्गन, আছা না করিল কেছ বাতীত মোহন। তাই হাসি চলে তৰু তৰু-অঞ্চে পড়ি, কহিছে কোঁভুকে কথা ঝর ঝর করি। ' দেখ হে স্কুছন, নর সৌভাগ্য-গৌরবে, " চাতে ना भारमत शारन वााशुक विंखति। ' যে তুল্ছ বিষয় মধ্যে সুথ অৱেষণ ' করয়ে তাহারা তাহে বিষ দংমিজন। " বারাক্ষনা-অঞ্চ বিভ্যাণে বিভ্রিত, " করে নিরীকণ কত হ'রে পুলকিত; " থাকে চাহি অনিমিষে পড়ে না পলক, ' মুখমধু পীতে জিহ্বা করে দক দক; " তাদের অন্তর यদি করে নিরীক্ণ, " अवीक् इहेशा शांदक ना मद्र वहन। " भारत अस्त - आंत जारत अस्त, " হয় স্থা হলাহলে যতেক অন্তর। ' কিন্তু ছে মোদের পার্নে চাছেনা তাছারা, ' দেখির' তাদের ভাব হই জানহার।। " भारतक मधाना तूरम यह स्थीजन, " অই দেখ একদৃষ্টে চাহিয়া মোহন। " याहेरक जिल्ली शर्थ हरत मूछ-छान, " মোদে কিকে ফিরিয়া রহিচে বরাম;

" ड रहाउँ वाजिएइ शात नादि किছू जान, " এমনি আমরা প্রিয় হই 'ও স্ব স্থান। " তাহারা পাষ্ড নর চকু খেকে আরু, " মোদের সরিধি এলে পাই পাপ গন্ধ। " मारिक मधामा जाता कि जानित वर. " वाजाकना नाजी मटक भीडेक गतन। " ऋथी यनि धकक्त करत সমानत, " ভুক্ত করি যদি ব্যঙ্গ করে লক্ষ নর।" भागरभ भागरभ कथा **ख**निएक मधुत, বুঝিবে ইহার মর্ম পণ্ডিত চতুর। পাদপে পাদপে কথা শুনি পক্ষিগণ, मिर कथा कर्यदित कतिल (यायन) গায়ক যেমন শুনি বেহালা বাদন, কণ্ঠস্বরে গীত পরে করে দল্লীর্তন। ' আছা কি মধুর অর 'যেন স্থাকরে, मधिशूंची करत गान क्लांत्र जहरत। काकिन काकनी गात्र भाषिता बहारत, না করে মোহিত ইহা বলহ কাহারে? खिनिए खिनिए गीन हिन्द भाइन, ভাৰণে ইতেছে তাল পুধা ৰৱিষণ। ক্রমে এক ফুলৈ মাঠে আসি উপস্থিত, তৰণ অৰুণ উঠে মোছন মোহিত। आंश कि अभूक क्रिश कि हाक लाउन, लि हिंछ-वर्ग कांग्न महत्र-दक्षम। कविछ कांकन गम उनने उपन भीता भीता छेठिएछ इ'र्छ्यु वन्द्रभ।

রাখাল গোপাল লয়ে মাঠে উপছিত, " शामन न्यांत्र मान शाकी ऋगांकि। প্রকৃতি-মেছন-মুর্ত্তি দেখিতে দেখিতে, মোহন লজ্বিল মাঠ প্রকৃত্রিত চিতে। शॅंड!'इन आमि कारम अक मरता वरत, নাচায়ে তুলিল তাহা মোহন অন্তরে। ञ्चमीर्थ मत्रमी (मह नीत नित्रमन, आभक्षे इहेटल्ड् स्वाक कमन। কেমনে ভাষার শোভা করিব বর্ণন, **उटार किय स्थीवत क्यम कि धन।** আধক্ট শত শত পদা মনোহর নয়ন মেলিল শত যেন সরে বর দেথিবারে প্রকৃতির চাক স্থগোডন, निजात मर्गन हिन यह अन्कर। সরঃ চকু খেত-খেরা মানিত কমল, চক্ষতারা কোথা যাহা দৌন্দর্যার স্থল। जनिएम श्रीमीत छेश्रत विमिश्री, চকুমণি আছে মরি যেন রে শোভিয়া। यष्ट्रगरत थाजःसान करत नात्रीगण. নির্ধি তাদের রূপ মোহিত মোহন। বুৰো না পাঠকজুন মেছিন-নয়ন লম্পট লোচনে তাহে করিন দর্শন। বে চক্ষে কমল-শোভা করিল দর্শন. मिर हिल वामाकूटल मिथिन स्माइन। ্একবার হুইছুর পল্লে ছেরে ধীর, জাদর শার নারী মুখ হেরে জাঁথি স্থির।

দর্শনের ভঙ্গি হেরি মনে জ্ঞান হয়, বছকণ আঁথি যেন প্রোপরে রয়। হতে পারে এতে মনে মোহনের মন সমধিক মুগ্ধ ছেরি নলিনী বদন। বিষয় না মান মনে ইছাতে পাঠক, ইহার কারণ আছে মন সভোষক। সরোজিনী ফুল এই নাগ সমাগ্রে, थ मोम्पर्या पुत्र किन्छ इटव क्रांस क्रांस। ज्यारह यात त्रवि यात ज्ञाहन. ধরিয়া মোহন মৃত্তি রবে কি কমল ? इम्भी झनग्रकांख निवा आगमत्म, क्लिया गियाट नाती वित्रहम महत्न। তাই মনোছঃথে বুখ এত মিয়মীণ, তাই অন্ত-সুসেন্দির্ঘ্য করেছে প্রস্থান। धागवधु शीरत मधु गाइ कामिनीत, मिन मांधुर्ग छारे विश्रक महीत। वागाकूटन जर्भताटक स्थीत त्याहन, গাত্র-ধেতিকালে যদি করিত দর্শন; স্থকেশ - বিকাস করি পরি আভরণ, यथन जाहां शांदिक जीवान मर्गन। যামিনী আগতাপার, পড়ির মিলন आनात्र তारमत् यत्व धक्त वमन; उथन यमाणि किल जोरमंत्र आनम, ° कमनिनी जामा शीद कदिछ मूर्नन। मक राजा जार कवि कंकिए अनि, मका (मग्र मद्वाजिनी दमशी यंगने।

যা হউক পাঠকজন ছই সমরপ, যদিও জান হে' নারী প্রভাঠে বিরূপ। অপরাত্তে নারীমুখ সহিত তুলনায় হাস্যাম্পদ জানহ কেবল। নানা জলচর পক্ষী স্থাথে কেলি করে, निविध नक्राम क्रथ क्रममानाहरवा চারি ধারে পাড় উচ্চ, তাহার উপরে চাৰু তৰু-রাজ-রাজি কিবা শোভা করে। তারি প্রতিবিদ্ব পড়ি বারির ভিতরে, तम्भी जाजान नीत कंन्भिज डेशात , সহসানির্ধি মনে হেন জ্ঞান হয়, किनि विनिं कतिराउद् जुक्तं निष्ठता। (इतिम नत्रनी-ल्गांड) (माहन स्थीत, দাঁড়াইয়া কিছুক্ষণ আঁথি করি স্থির। প্রকৃতির প্রাতঃ শোডা দেখিতে দেখিতে চলিল মোছন পরে প্রফল্লিত চিতে। স্ববিস্তৃত মাঠে এক ক্রমে উপস্থিত, করিতেছে ধুধু মাঠ সৌন্দর্য বৰ্জিত। নাহিক সে ধান্ত-শোভা ইছা গ্রীমকাল. बनिन मिटिए ज्या दिव-दिना । ক্রমেতে বাড়িছে বেলা, উত্তপ্ত তপন, অত্যুক্ত মহুৰ রাশি করিছে বর্ষণ। ৰ্ণকছু পূৰ্বে যেই ভূমি ছিলা ক্ৰ্ধাময়, गत्रम वर्षिएइ उथि रहिन्न मित्रमा। ्महे अ विषायकान निवाकत-कत्, শর সম ভেদিলেক মে।ছন - অন্তর।

रगांदरनद उठ्ठ शानि त्यम अवसीक আরঞ্জিল ছড়ে তার হইতে অপিত তাহাতে তপন তাপ। স্বেদ ছলে ভাই प्रवीकुष उज्ननी बादा मर्जनारे। উত্ত भारत मन नाहि महत वानी, ক্লান্ত কলেবর অতি বিশুক্ত মুখানি। মুহুসরে রামধনে কহিল মোছন, " আর তো চলিতে নারি চলে ন। ५४।। " হইতে এ মাঠ পাব বাবে কতকণ, "তক্তৰ পাবো শীষ্ত্ৰ না দেখি লক্ষণ।" "আহন বাহুগো আর বহুদুর নাই, " তৰপুঞ্জ অই ৰাবু দেখিবারে পাই।" - সন্তাবিদ মৃহ্ভাবে প্রভুৱে দে ভূতা, শুনি মোহনের মন করি উঠে নৃত্য। যত যার তত ধার দে রক্ষ অন্তরে, লাগিল বিষম ধাঁধা মোছন অন্তরে। यथा मकरमार्ग शासु रहति मज्रकान, লভিবার আশে ধায় আকুল পরাণ, যত যায় নাহি পায় মৰু উপবন, ক্লান্তকলেবর করে আ্কুলিভ মন। जनत्भारत होंगाइ उक महिशि जामिन, **ज्ञा, भारत्य भन जानत्म जीतिम।** उक्डरन जानि काँम क्यांक ऋशीन, विमित्त आंकूनमन भारीत अच्चित्र। भगामाना हिना **क उक्ता ी भार**म, তথি রামধন গোলা তালয়ন্ত আশো

আনি পাখা নিজ প্রভু করিল ব্যক্তন, प्राट जात पारं अरमा जीवरेन कीवन। পথ প্ৰাটন ক্লেশ কভুত মোহন, না জানিত তার মনে হঃলছ এমন। রামধন মোহনেরে সাতুনর করি, কহিল মুদ্ধচনে সভাৰ বিশ্বরি। "দেখুন বাৰুগো এবে পথক্লেশ কত, " যাইতে বিদেশে তাই হ'ন গো বিরত। " अक मिर्न उर मूथ ছला आधु थानि, " হৃদর বিদীর্ণ হয় নেহারি মুখানি"। " कि कहिरल तांगधन" कहिल कूमांत, "কর দূর হেন চিন্তা হতে দৈহাগাব। " অন্তরে ভেবেছি যাছা তাছার অন্তর, " জीवन यमिन द्राव मिट्ट छिउत, "কভুত আমি না করি জেনো তুমি মনে, "কার সাধ্য ফিরাইতে বল হে মেছেন। " यथा नमी वाश्तित इट ध्वाधत, "গতি ফিরাইতে তার দক্ষ কোনু নর ? " পশ্চিমে यनिও इয় রবির উদয়, " পশুজাতি নর সম্যদি কথা কয়; " প্রসারিয়া কর यक्ति धना यात्र होम, " जमधित जल यमि भारत रुटैं वाम : "হুণীর বচন তবু নুঁ হয় ভালন, " নিশ্চয় জানহ তুমি, ওছে রামধন। " এত পথ পর্যাটন কডু মাহি করি, " তেকারণ ক্লান্ত দেহ আজি এত ধরি।

"करम करम शतिखारम शारेटर जाउडारित, " अ विषदा पृष्ट स्थात आहरम विश्वाम। "यञ कता यात्र कट्नबद्वत क्रान्नी, " দেহ কি তত্ৰ দুঢ় বল হে হয় না ? " বামেতারে দেখ ভুমি কত বলাধান, " বাম করে সামর্থের কোথা বল স্থান। "ইহার কারণ ডান করের চালনা, " বাম হতে সমধিক নিশ্চয় জান না।" यश्रम रिमन जामि स्थीत माइन, উহা অতি तमा द्वान महनग्र जन। অশ্বত্র পাদপ আর বট-রক্ষময়, নির্ধি যাহার শোভা জুড়ার ঋদর। অশ্বর্থ পাদপ আর বট-রুক্ষ তল, প্রদানিছে পাষ্ জনে ছারা স্থাতন। (मोग्य-छ्रशन-कत्र धति गिर्ताशित, তকলেণী পাত্ত হংব হরিতেছে মরি। **চাৰুপর্ণ স্মাকীর্প পাদপ-শরীর,** বরষিতে রশ্মি তথি কি সাধা রবির। কিবা রমণীয় স্থল তৰ-পুঞ্-তল। धीचकात्न, यद द्रवि मट्ट जूमछन। তরপরে নানা পক্ষী বনি স্তব্ধ রছে, প্রচণ্ড উত্তপ্ত বায়ু মধ্যে মধ্যে ৰছে। পাদপ পরের কিন্তু আছে ছেন গুণ, স্পর্ণান্তে শীতল করে কিরণ আঞ্চন। অশ্বত্ম পাদপ-পত্ত প্রধেষী কল্পিড়: ব্যবিরশ্যি চকু চকে তাছে নিপতিত;

नितीकर्ग यात्र लाजा जूजाय कनत्र ; শকিছে খতোৎ যেন মনে জান হয়। कि द्रथं छेमन्न इत्ना माइत्मन मत्न, বাদিরা এম্বলে তাহা বর্ণিব কেমনে। त्यः जन श्रीचकात्म मधाक मगत्र, স্প্ৰিত্ত মাঠ হাঁটি উত্তপ্ত হৃদয়, পরে হেন রমণীয় ভানে উপস্থিত, জানে ভুলু সেই জুন খন আনন্দিত কতই যে হয় তার বসি হেন স্থলে, **নে হুখের সমস্ত্র নাহি ভূমওলে।** দেই জন **শোহনের বুরিবে**ৃভান্তর, (कगरन रम ख्रथ खरत दल धनी नह। পণাশালা সল্লিকটে ছিলা সংখ্যক, অবগাহি দেহ দোঁহে প্রক্র অন্তর। जलभान कतिशा दक्षन आंदरांजन, করি দিল মোছনেরে জরা রামধন। এ পর্যান্ত পাচকের কর্মে মোহন, অনভিজ্ঞ সম্পূর্ণ আছিল, সে কারণ হলো স্তঞ্জ অতি কুমারের মন। नक्ष रतना एक्त कद्र; जुलत्म जीवन নিকেপ করিল কভু, কভু বা দহন মিটির মিটির জ্বলে; ক্লোমল-লোচন আঁগুনে ফুণকার দিতে লেছিত বরণ। রন্ধন হইলে পাষ বহু কঠি পরে, ভোজনে বিসিল দোঁহে প্রফুল অন্তরে।

ভোজনাতে অভ্যাগ धकानि त्रीहर, गड़ासि करिम कृत्जा दक्षि कान। " मिश्र कोमधन प्रम' कीदन शांतरण, '' হুতৃগু-জীবন এত হয়নি-ভৌজনে। '' ভক্প যে করে নিতা নিজের রশ্বন, " নিতা নিতা তারি তৃথি হয়ত এমন। "নিজ বিনিৰ্মিত ক্লবা কিখা জান হয়, "হইলেও মৃদ্দ তাহা মধুরতা মর_া" উৎস্ক কুমার চিত্ত লভিতে বিশ্রাম, পরিজম পরে নিজা কছু নছে বাম। অলম শরীর ভারাক্রান্ত হ নয়ন, ছাপিল আদিয়া নিজা আপন আদন मार्च नश्रान, नीखि-पूर्व ध मश्मात , भारत्वत भएक मर रहेल जाधात। मिर मिन मिरे चुरल इहिन इक्रान, পর हिन था उक्ष्माल हिन्दा ज्यात। गहित्क गहित्व शर्थ धक क्रकात, श्चित्रम क्रोश्ना अक क्ष्मि क्रूकुश्तम। বিচরণ কিছু দুরে করে ফাডীদল, वरमधन कांटि कूँनि मिथि मिटि वन হলো ঘোহনের ছন; জান্ত্রিত মনে, বিদল রাখাল সহ স্থামল আমনে। मधुर्थ महिए अक निर्मल कीवन, कल कल ब्राटन मीत सूत अवस्य ; विराह मधीत इह मनिम छैशास, छेक्टिए शिक्षानकून कम कम खरतः

ভালিছে ভরন্ধমাল। নদীতটে আদি, বরাষ্ট্রে অবণেতে ফেন স্থারাশি। 5ल-क्रम-**ंटल विश भाइन स्थी**त, খৃত্ত-মনা হয়ে ছেরে শোভা প্রকৃতির। नांना क्रथ हिन्ता कडू डेविंट् कन्ट्य. প্রেমনীর কড়ু করে তার চক্চুদ্বয়ে। নদীর প্রবাহে আর চিন্তার প্রবাহে, মোছনের মন মরি যেন অবগাছে। নদীর প্রবাহ আর প্রবাহ চিন্তার, তুলনায় সম দৌহে স্কেচ কি ভার। निन छैटि गिति इ'टि फिला इ'टि मन, নদীবোত চিন্তাবোত একই গঠন। নদীজ্যোত-তটে জ্বেন্মে নানা তক্ষর, **िखाळाड-डीर्ड कान-भामन युन्दर।** नमीत्यां निकिष्ट उक करन न न, আসাদন ভার বল সুমিটাই কত: চিত্তাভোত নিকটছ জান-তক-ফল, আস্বাদনে অধানম জীবন শীতল। मनीत्यां जिंकोष अञ्च भागत्भ. মজাইরা দেয় মন প্রাকৃতির জপে। ष्टिखाट उठेवर्जी कांवा-कूम-वन, भाहित नो करत वन कान् अस मन ? নদীভোতে উঠে ইশ্বি জীতি ভারহর, চিন্তাজ্যেতে জ্বোধ রিপু ৰছে ধরতর। नमीत्वात्म दिश्यक्त क्षीत, श्राहत, আদি করি রছে কত জন্ত ভয়ত্বর।



ঁঠিন্তাভোতে দেয়, ইৰ্যা, কাম কয়ে ৰাষ্ক্ৰ: यादात जाहांत मिथ मान नाटमं जान । नमीत्यां शर् (भर्य क्षित करनः চিন্তাতোত পড়ে শেষে ঈশ পদতলে। হের হে পাঠক জন মোহন মান্দ্র, চিন্তার প্রবাহ বহে তক্তলে বদে। প্রকৃতির চাক শোডা করি বিলোকন. करह कथा भन मत्न स्थीत स्थाइन। " এতে উচ্চপদায়ত মানৰ মণ্ডল. তৰ উচ্চাসন বল শূন্য কি গায়ল গ আসীন হইয়া তব স্বউচ্চ আসনে, যায় কি জীবন তব শকাশুল মনে ? নাহি কি বৈরি তোমার ? হৃদয় নির্ভয় ? **उ**र य ज़शीन जन मकरल कि कन्न তৰ গুণ অকপটে? তব সন্নিধানে, धूमश्रक यथा धात्र वात्र वर्षान: অসমুখে যথা দীন জ্বোত বিপরীতে, হেন তব অন্নচর জেনো ভূমি চিতে। **धरे य दांशल পরিধিয়ে ছিল বাস**, এই যে রাখাল যার ত্ৰুতলে বাস, **परे एवं काशान यात्र दृष्टि शाहात्रण.** अरे य दार्थान याद नना आहत्रन; थरे य दाशान सदि दश्न-यकि कदि, এই যে রাখাল ডকে ছরিব জান্তরে निक हाना यथा धनी सिहेति माधन, क्के नमधिक मिर्ड छाटा कवि मन।

(मंहे मि नुवैशि विमि अर्थ मिश्होमतन, পরিধিয়ে পটবাস বালসে. লোচনে। मिहे मि नुमिन दिनि खुत्रमा इत्रम, यात्र माम माम मामी कछ जरम। (मृहे त्म नुमिन करत ाजन ध धित. কি মাধুরী তারি বল আছ। মরি মরি। नन मिथि मशीभान कि कामि लोगारत, দম্ধিক সুখী কেবা কছ ছে আমাবে। **१७ विम अक्षमग्र १८**६ मृश्यनि, 'রাণালের সংখ সহ তুলনা কগনি হয় না আমার ছ্য' কহিবে অমনি कि मामह कह कह कह एह नुमिन। দুর হ'তে রাজাপদ দেখিতে সুন্দর, লভিতে বাসনা করে মানব অন্তর। দ্য হ'তে নুপ্পদ বার্নালী অজ माधुरी मिश्रति छात्र नात है एक गक। क्रोम म कक्र मधा त्रांग विवमित्, ভূঞ্জিয়া ভাষার সঙ্গ ইচ্ছা বলবতী হর গো স্তৃপ্ত যবে, হয়ে রোগাকান্ত, এতি মন বুৰো তাবে ৰখন প্ৰাণান্ত। তেমনি ভূপতি পদ জীবিশ্মনে মনে, मृत इटल वाँश्वनीत कर्ये आटबाइटल। উঠি উচ্চ দিংহাদন স্থু কন্ট্ৰময়, আছে কে এমুন নর প্রতিকূলে কয়।" কিছু কণ খোহন করিয়া আলাপন, ८भइ ताशास्त्र मह इत्ना इक्ट मन।

निश किছू वर्ष जात्त, চलिका संवर्तन, वांथान शांशान नत्त्र थाक् स्वीब्द्र । এইরপে প্রকৃতির শোডা প্রীক্তিকর, ছেরি দিন দিন ছুল गোহন - অন্তর। নিত্য নৰ নৰ শোভা করি বিলোকন, क्रेल भारत-मन आमारिक मर्गन। কবি মন হয় যার, পথ পর্যাটনে কি আৰম্ম হয় তাহা বলিব কেমনে। धक शटक साइन ममुद्र महिशातन, হলে উপস্থিত আদি: উৎস্ক বয়ানে करत नित्रीकर्ण उथि य मिरक क्रन्थि, ना दक्षि भाक्रानद ऋष्येत ज्विश काम काम ममूज श्रीनात छेलती छ. নির্থিয়া রত্বাকর মোহন বঞ্চিত इरेन जाशन कान; हिल शुक्रनित मम इंदेन श्रुवितः, शनक आधितः ना निष्न ; गिन किছू कर वहेज्ञत्भ, উথলিল অবশেষে তারি ভার-কুপে। " কি অভুত লবা আজি হেরিল নয়ন, " इरन। ७७ नित्य यम मार्थक जीवन। " ওরি মা এক্ডিনতী ভাণার তোমার, " পूर्व कि अभूमा धरम वर्त माधा कांद्र ? " यथन द्व अया इन तिराति डाणात, "कि जानम विजयन करत य जामादा " কহিৰ কেমনে আমি ; মাধুৰ্য্য তাভাৱি " लग्न इति मम मश्का; खेळ्यूना यादानि

" अनाम (नाइन मम; इहे न्यासहीन, " প্রকাশিবে সে আমন কেমনে এ দীন। "বিশংল তব ভাতার নানা রত্ময়, "কে আছে এমন নর তারি সমুদর "নির্বিবে তারি চক্ষে? মানব জীবন " क्षरश्मी चनकाल मामिनी रामन : ''কিছা যথা বারিবিছ বারি নিপতনে "मह्तारत यत यह घन ७ जूनता। ংহেন যে নর জীবন বলগো কেমনে ' ङहेरन मक्कम निभूभ उ। शांत्र नित्रीकर्ण ''তৰ ! ওয়ি ইঙ্গাসতী কহি গ্ৰেলিয়াৰে " কেন কুডুহল-শিখা জ্বালিয়া আমারে "দেহ এত মনোকষ্ঠ ় এ মম মনন ' একবারে হেরি চক্ষে ভাগ্রার চিক্রণ " প্রকৃতি সভীর, কিন্তু রুখা সে কামনা, " अन्दा स्थूरे एक वियम यञ्जलः। " প্রবোদ আছিয়ে এক: সুধীর বর্ণন " করি পাঠ এ ভবের মান্স - নয়ন " इत्र भा मक्त्र नित्तीकर्ण धकवाद्व, " যথা যথা ধর মাতা স্বম আকারেন " हि जनिषु जूमि मम जाह य ममू(थ ' आहिन वा मरका यम : हिस्टिहिङ् स्टर्थ " কতই নবীন চিন্তা; নয় তো় নয়ন " निरंथि: 5 यख्न ऋषु छावि मरन मन। ''কি আছে সঙ্গেহ তায় ? বিক্ষারিত জাঁধি " আছিঁণ সামার, মন, ছিন্ন তার রাহি

" যতনে জনধি পানে; কিন্তু নী হৈরিত্ব "সমীপছ বিছত দাগুর, বা দভিত্ " जानम नद्रानं यत जाहिए हिस्ता, " कि मक्ति नज्ञन (स्ट्र ऋडेम्। मरन। 'নিরনিধি ভোমা হেরি আনন্দ অপার " কিবা যে ছইল মম; অন্তর আমার "কি রদে হইল পূর্ণ কহিব কেমনে ? " প্রকাশ কি করা যায় সে রস কথনে ? "কিবা স্থচিকণ তন্ মুর্জ্তি কি গন্তীর '' উদক অতদম্পর্শ কত যে গাভীব " সক্ষ সে কোন্নর করিবারে ছির ? " তোমা সন্দর্শনে যায জড়িমা হ্রদির। " জীবন-প্রস্থন যার অফ্টুট কুট্মল, " বহি ফুর্জি-বায়ু তহপরি স্কচঞ্চল-" সে হৃদি কোরকে করে প্রকুল তথনি "মানমুখ বিতে হয় দৰ্শনে অমনি! " একটা তোমার নাম হয় রভাকর, "হে জলধি: কতরত্ব তোমার অন্তর ' নিরন্তর আছে ধরি কছিব কেমনে; " इन्ध्र विनदः किन्ठ काँनि मदन मदन "হয় গো শ্রুণ ববে তব দহারতি, "হরিতে মানবধন চঞ্চল প্রকৃতি। "কত ধনীধন হাঁর তব কোষাগার, " পूर्वि अभूना धटन वर्ष नाथा कांत्र ? " इत (३ जयूना ४न इ:४ होहि कति; " ভাল হে অৰ্বপোত তৰ ছদি'পৰি;

''ভিক্ষা হে একটা মম আছে তৰ স্থানে, ''नः रुरत्रा अकेंग्री धन खून ७,१४ कारणः। " দে খন অতি অ**খ্লা তাহার** আকর " আছে হে জানহ নর দেহের ভিতর। '' (म धन জीवनधन यङरनत जिल्ल, ''না হরে। সে ধন তুমি করি হে মিনতি। "কত চিরছখিনীর অঞ্চলর ধন ''হরণ করিয়ানিজ উদর পুরণ 🕶 " कदिशाष्ट्र यल अपि, इतनग्र विमान '' এবংণ ক্রম্মন যার স্বু তাভচ করে। '' मंद्रिक ज्ञालांत चूलि एकालंद धन, ''জাননী বিদায় দেয় তনয় আপান: ' ছেন পুত্রবারে তুমি বল ছে কেম্নে, "নাশিতে বাসনাকর বল ভুমি মনে? "কত কামিনীর তুমি হৃদয়-বল্লভে 'करत्र इत्रग वन ; क्ष्टू न! मह्मद्रव " হেন আচরণ তব। প্রেম-তক্বর '' বহু যতনের ধন জেনে। ছে সাগর। ''কত শক্ত ধরে তায়না ছতে অঙ্কুর, ''অঙ্কুরিত যদি হয় সদা শহাতুর "পাছে মরে শক্ষাতাপে; অকুর পাদনে, ' ফদিঘট কয়িপুর্ণ যতন-জীবনে ্র সদত সিঞ্চিতে হয়, "সর**দতা** সাহ " প্রদান করিতে হয় গরিমা কি তার। " করিলে এও যতন হয় পলবিত, " কু॰ मा, ঈশা, কীট তায় ধরে আচম্বিত।

ें भारती के नामित्र अहा सन उब अम, " ধীরতা ক্বার নীর তার অহকেম, " निकटनत थार्ताकन ; यनि कीत्म थारन, "প্রেমতক র্দ্ধি পায় নর সন্নিধানে। " হেন প্রেম-ভক্বরে বল হে জলিধি "কেমনে নিময় কর তুমি নিরবধি। '' করিছ ন। ভাল কাজ তুমি ছে সাগর, " ভাবিয়া দেখুক ওছে তোমার অন্তর। " अञ्चिन विद्रश्नि कृतिया कुमान, " পরোধি রহৎ এক করিছে সৃজন। " गठन मन्भून इरन जडीव विशम, " তাজিয়া প্লাতে হবে তোমার সম্পদ্য " তব তটে কত রাজ্য হলো বিনির্মিত, " করিলে ছে কত রাজ্য তুমি কুন্দিকত। " নগর নগরী কত নির্মিত কোশলে " ধনিত হইত আহা নর কোলাছলে, " কোপা তারা বল বল কোগা মে সকল, "তৃপ্ত কি করেছ তব জঠর অনল : " তুমি ছে যেমন ছিলে আছছ তেমনি, " অমন্ত মতুন তুমি জাছ এ অৰনী। " (इ मानव उव निक्षे इथा मिन्नू काटह, " গঠনা কত গঠিবে এক উৰ্বি আছে। " হে মানৰ রূপা তব গৰ্বে অকলার, " সহিতে পার কি এক সিদ্ধুর ক্লংকার? " হৰ্কলের কাছে তব খাট্টে ভাল জোর, " বলিছের কাছে তুমি इঞ যেন ছোর।"

" अधिक इंडेन (तना वांतू मुझानांग्न," मञ्जाधिन जामधन कदिशः विनश्न। "অধিক হইল বেলা দেখুন চাহিয়া, " রবিকর তীক্ষ্ণ দেয় দেহ ঝলসিয়া। " फ़क्स कब्स किছू जनगाहि (मह, " वहका जनभार कि जाए मरमह " হবে শারীরিক পীড়া; কহি আমি তাই, "রন্ধনের আয়োজন করি সই ঠাই।" এত যদি রামধন কছিল মোহনে, চমকি উঠিয়া প্রভু ভূতা সঞ্চাদণে कहिन मधूत खारुष, " एट हामधन '' হইন যে এত বেলা অভ্ডব "এতকণ " रत्नि किहूरे मग, अहे त्य जनिध " করেছিল সংজ্ঞাশৃত মোরে এ অবধি। " অতথৰ শীম্ব শীম্ব কর আন্তো**জন** ''রস্কনের করি স্থান আমি ততক্ষণ। " হইলে রক্ষন শেষ, সুধীর মোহন বসিলেক মনস্থাে করিতে ভােজন। ভোজনান্তে দোঁহে পণ্যশালা অভ্যন্তরে, করিল শরন অতি প্রফুল অন্তরে। मिता जनमान करम; आंक्रक नद्रश इहेल शीक्ष्म जाग, नम्नत्रक्त। मिर्ड (म निमाधकान शांधिन मगग्न, जात्न ऋशीजन ऋधू कि ভाব छेनज इत जानि मनाकार्टन। तटह कि माहन এ হেন গ্রীয় নাহি করি সম্পর্ণন

>

প্রবৃতি বিদ্ধিত্ব শোডা তটে জন্ধিতঃ থাকিতে পারে কিমন মোহনের ছিন্ন ৪ চির ছিলা আকাক্ষিত মন নিয়ল্পিডে कठित पर्भन यह मगन इक्ट्र রত্নাকরে দিবাকর স্থােছন বেশে नारम (गां गंगन इटड जनिध धार्वाम कति ममार्थन कार्या निकट्ड वामिनी, স্মোহন বেশে তার ছবিতে কামিনী। মন্তক উপর যবে ছিলা দিবাকর. কার সাধ্য সভ্ করে তব খর কর ? দে ভীষণ মৃত্তি এবে প্রশান্ত কেমন? না হয়ে প্রশান্ত আর কি কর তপন ? প্রের্যা প্রসাদ রবি লভিবার তরে. খাটেনা জ্ব মুরতি বুবেছ অস্তরে। তাই হেন মহভাব বুঝি হে ধারণ ? তাই হে তপন তব বেশ সুমোহন। ছিছি দিনমণি তব উপযুক্ত নয়, ममल क्रा॰जन यादर करत जन्न, ছিছি হে দিনেশ তব উপযুক্ত নয়, তুষিতে নিজ রমণী মনে এত ভয়। কি নিৰ্বোধ আমি মিছা দোষ আরোপণ, কেন করি ভোমা প্রতি বল হে তপন। त्य नृगः म नृश खरत्र कार्श कन-मन, हन-क्रम-मन यथा आखि गमीत्रग। যে মন্ত্রীবরের ছেরি আরক্ত নয়ন, थकानर्भ करम धरत विश्म कण्णामः

य मञ्जात मञ्जाहित इति गांख जनः দিবানিশি রছে অতি সপদ্ধিত মদ, (इन मृष्), (इस मञ्जी), (इस मञ्जा खन) निक दमवीत कार्ड (मय्की (यमन। তুমিও হে দ্বিষাম্পতি কেন বা ন। হবে প্রশান্ত অতীব ধীর ? যে ভাব সম্ভবে কামিনী কোমল কায় হলে সমিহিত, সে ভাব ধারণ তব নছে অবিহিত। छेठिल भाइन, खुदा श्रकृति मर्गत्न এক কুদ্র গিরি'পরি প্রকৃत লোচনে। হেরিয়া অপুর্বশোড: মোছনের মন, वशीभ जानम नीत्र इक्न पशन। 'লাৰ্থক জীবন মম' কছিল কুমার, "হেরিল নয়ন আজি হেরিবার সাব। ' অদ্ভত সৌন্দর্যা কিবা প্রকৃতি ধরিল, "(इतिशा विषित्र भाषा भाग हेलिल। "কি আশ্চর্যারক্ত পদ্ম এক সিদ্ধু নীরে "বিকসিত ছেরি কাঁপিছে সমীরে ধীরে। "জলধি পশ্চিমে অই শোভা চমৎক।র। " আমর কি ভান্তি ছেদে ধরিল আমার। " मक्राकान मगागंठ; १क शांत्र निनी ' अकुत्र गोध्नि काता ? इत्र कि कामिनी "মগন প্রমেণ্যে কছু পতির বিরহে? "কিষা কোণা কমলিনী প্রকুরিত রছে 'লবণামু প্রেমীধিতে ? কমলিনী কার " অতীৰ কোমল, লবণাক্ত নীর তার

"यथा (जरना छेकेश्य अकूत अर्देशन) "किश यथा"नवनीउं डेज्यन आकृत्य। '' আরত নাহিক হেরি দ্বৈ চাক লোজন, " (मिंबिट पिथिट केंटन इरेट्ड मगंन। "तुविनाम नटक छेश शकूत निनी, " विश्ति त्यासन पूर्जि त्याहित्छ त्यमिनी। ''গমন করিছে স্থা নিজ অন্তাচলে, "ধরিয়া অপুরু শোডা মন কুড়ছলে। " প্রকৃতি পরিল কিবা বেশ মনোহর, "নিরবি জুড়ায় আঁথি জুড়ায় অন্তর। "গগন পশ্চিম প্রান্ত কিবা শোভাময়, " मृतरमर्ग रिक्के खुरल मरन ख्वान इत्र । "বহিছে সমীর মৃত্র লাগিছে পাদপে, "নতশির করি শির তুলিয়া আত্রপে "উঁকি বুঁকি মারিতেছে মনে জান হয়, "গেল কিনা রবি অন্ত হৃদয় সভয়। "ममल मिरम स्था कड़कारन जात, 'দম্বীভূত তৰু তথু করেছে সবার। ''ঝর বার সমীরণ বছে ভর্পরে, '' এবং প জুড়ার এচতি সূড়ার অস্তরে। ''বার বার শব্দ করি মুচ্ল স্থীর, "তৰু কৰ্ণে জ্বাদেশিছে যেন প্ৰকৃতির " जारमनेन, धरिएं साहन तम धरा, "কহিতেছে বেন পুনঃ 'আইস আমরা "'श्रहाँउ युभवी भाउ। कवि महीर्खन, " দানৰে গোহিত হবে করি আকর্ণ।

अप्ति वीता धनि जोता **अर**न अक मरन " प्रमधूत वर्नि मिरे वीभात निकर्ण · करह अ**रहात कंठ; अ वीगा बहा**त "'अद्भाग तम गर्स धर्य इटेरक जात'। "মহীকৃছ মাকৃতে মিশিরা এক মনে, "তাই আরম্ভিল গীত গাইতে যতনে। " आ भित्र कि भन्नमश थ मधुत अह, "কে গুণ বুঝিবে এর বিনা স্থীবর। ' भूदून मनशानिन वट्ट अङ्क्ष, " পরশি শরীরে হুধ। করে বরিষণ। 'অঙ্গ সঙ্গে সে সমীর করে হতজান, " कुश्न कि शदम ५८ई दूरकन। भदान। "गमधा देखिश (मात्र श्रीश विरुचन, " मम् अ केलिट सं क्या व्या वित्रवर्ग। ''সমুধে বিস্তৃত সিদ্ধু স্লিল নীলিমা ' गमर्गत्न (अ स्वयमा लक्ष्य क्रिनि-भीमः " भ्रमग्र-मागत (वर्ग हर्ला छेम्हलिङ, ' সমস্ত শরীরে হুধা হলে। সঞ্জিত। " स्थ-मंगी मनांकारम यदव ममुनि उ, " হ্বদি-সিন্ধু কেন বা না হবে উচ্ছলিত। " डेथिन मित्रू-मिन ऋषां एक कितर्ग, " (वनाष्ट्रि खर्वा करत मगन की बरन। "मम ऋष-भनी धार फैनिज छेज्जन, " উচ্চলিত তাই হলে। ছদি-সিম্কু-জল। "(पर ज्ञले (वन) भित्र भागे के छित्र, " हकू, कर्न, मामा, दुक् अमन। मनीम

" आनम मिलि छोडे इडेन आहेन. ''সম্প্রাশরীর মম তাই' বিচেডম। " मारेट विश्वकूत जांकि निद्रुक्त, ' আপন আপন নীড়ে এবে প্রতিকূল ं तक्रमी जानित्ह जोहे। कृषिमनदन " চলিছে আপন গৃছে भनीद विकन। " রাখাল গোপাল লয়ে চলে গোষ্ঠ ছতে, " "ইঘারবে গাভীগণ ু**ছুটিছে** কেমতে। " আদিছে তিমির গর্মে হতে প্রাচীদিক, " मश्रादि कि पार्टिशक समग्र निकीक। "ক্রমে রূদ্ধি অন্ধকার; অবতন্ত্রি গিন্নি, " नातिव औंधारत (यटंड, डाई धीति धीति " नरेरा जावा जामि ; कि हेम्हामजी "क्ष कति भेध मम क्ष करत गेडि। " চলিতে চলেন। शम ; समग्र वोगना, " मन तरे गिति शिति रहा मुख्यमा. " कति मसर्गन आमि अक्रु ि न्त्रमणी : "मरकाव-डेमारिन याउ अमन नद्रशी " कर्राट भारेर (काथा रल अद्भ मन ? । " विशेष श्राम डेरम (इशा मर्सक्त) " पूर्विए मञ्जू भारत इंट्रि शहन ; " अञ्च मर्डांग अन रेल्ड् कत्र छन ? " ममन क्रमक वैथः प्रःशीन उमन " स्नीन वहेर विकास उरस्य समग्रः ",কুপৰ তাজিয়া কিসে স্থপৰ্থে আসিবে, " পরিহরি চুট্টমতি প্রমতি পাইবে;

" कड़ रेड्स छात वन दन कांत्रण, ্মুহর্তের তাঁরে তাঁক উদাত কথন -'इत सा खान्य मत्न, दात श्वान "তত্ই কুপথে গায় নির্ভয় অন্তর। "তেমনি প্রকৃতিসতী নরপুত্র তরে, " मुक्तिमा अ वस्त्रद्वा मनग्र अस्ट्र "কত সুখমর দ্রো করিয়। পূর্ণিত, '' প্রমোদ প্রবাহে প্রাণ হয় উচ্চলিত " जुक्कित्न तम गन सवा; अभि मानव, " অ্ধা তাজি পিয়ে বিষ একি সমন্তব। "यारेटल एम भरब भारत छन खुनियन. " गहित्न त्म भट्न भारत स्थामन कन, "যে পথ সতত রছে পীয়ুষ পুরিত. 'যে পথ ভ্ৰমণে মন হয় পুলকিত " পরিহরি সেই পথ মানবের " গরল পুরিত পথে করিবে ভ্রমণ। '' यां हेटव तम পर्थ यथा পू जिसम्मन्न, " यहित्य तम शेरथ यथा कल विषयः। ' মানবপ্রকৃতি দেখি কাঁদি উঠে প্রাণ, "কোথা পাই বল মন নরশূক ছান। "এহেন বিজ্নুছান কেঁন-*পরিহরি, ''নাকারজনক ছলে যেতে ইচ্ছা করি 🍛 "यामिनी कामिनी कटम जानि आविई छ, [া] প্রকৃতি ধ**রিল কিবা সোন্দর্য্য অন্তু**ত। " गर्धनमञ्जल करम करम ज्याजियात्र, " এ उनगणन इतना स्थू उत्मामन।

(मंक्तितांक्य कारा। (रेश मर्ग)
" ज्टम नाहि मृक्ति जात जिलेस् योगात्र, " ठिखांगठी जात करू मिछना जास्ता।' **जव**जित शीति शीति (म गिति साधन, আপন বাসায় ধীর করিল গমন।

ভূতীয় সূগ্ৰ

Loveliness

Needs not the foreign aid of ornament, But is, when unadorn'd, adorn'd the most. Thoughtless of beauty she was Beauty's self.

TEUMSON

বামা- **মুখ - বিনিঃ**দৃত - বাক্য - মধুময়-य शाहेकड्म मत्काध नां छनि मि पश्मारा कथा वसक्त। বামা - মুখ - বিনিঃসৃত মধুর नदश क जूबरन ? वटहे **शिकिक्इमा** (म न्य है ত্র আচতি মা করিল, ক্ষম অপরাধ। कतिएक मांच मत्न इस माध বলি আমি হুটী কথা করহ প্রেমিক না জানে কভু প্রেমের বতন विष्टम यनि ना इश। विटम्हम-जान्न किंदूकर मट्ट विन विदेश রক্ষিতে প্রেম-জীবন দেহ শভান্তরে विष्म् प्रकृत अठि धार्याक्रन कर्द्र। , चर्टिटल खुत विकास हिमान उर्धि-छेक धारमांग कतित्व **डेशकांत्र कटूत यथा; ध्यंगम्न - विका**रत उपि-जान ध्यम ध्यानाशास्त्र

রকিতে দিতীয় নাই পাচ্ক ভেমনি, विश्वहमार्ख जुक जान श्रूक्य क्रमेनी। जारे हर लाठिक भेग कुवन हमा दिनी याहिन वांथि जलता जाननगातिनी। । । (इनी - वर्षन-विनिः मुख वांकास्था পিয়ে পারহর এবে কৌতৃহল কুষা। नियारमंत्री उाकि (इशा साहिनी-लाइन গাপন আবাসে ধনী করিল গমন। শ্যা তালি মেনিইনী উঠিল জন্না করি, कां कारह बाहि (मशि हिस्डि) यसती। वाहिएत जानिया मिट्य त्रवि-त्रिकान (गाल्डिया अंड्राइ हाक महीकश-आन। জনে জনে জিজানিল মোহন বারতা, অপ্রাথ্যে নাথের তত্ত্ব হৃদ্ধি ব্যাকুলত।। গত রক্ষমীর কথা কহি প্রজানে, आकृल इत्नां झनती जावि गर्न गरन। प्रकारका नाइन पड़ि भाग पूर्व मार्क, (यादिकी क्रम्रा (यन नक्क क्रिन नोटक। शूरकाशिएक रिक्ट यार्थ **कृत्य**यं **उर**क কেহ তুরা করি ধার সরিহিত সরে। क्ट यात्र मार्क इति दक्क आदमानाद्रात. কেছ না পাৰ্কন উত্ত আৰু কোন ভাবেন वक्रा विथा स्माम्रास्क सिक्तियि हिल, भूबनामिग्रव छाङ्। अयव व्यवस्थित। कान प्रारम कह उन्ह नार्तिन करिएठ, বাঞ্জিল বঞ্জের সম পুরবাসি - চিতে।

ं भा गांश वान साहिनी इहेन। कुछि छ, क्षानाहत मरकार्यक भग्न खिमिछ। গানি পাথা জানি বারি সহচরী তার, शक्रमिन वार्ति मिन वम्स डाराइ। मध्योपिछ इत्ना मश्डा वल्न यात्रारम, নয়ন আসারে মোহিনীর বক্ষ ভাসে। 'हा नाव' विनिष्ठां धनी कत्रात्र क्रमन क পার্শ্বতী জন-হদি করি বিদারণ। " ওহে প্রাণনাথ ফেলি কোথা গেলে বল,. " তোমা বিনা অন্ধকার নেছারি সকল। 'হানয়গগনে তুমি সম্পূর্ণ চন্দ্রমা, "মতুজ মাঝারে তব নাছিক উপম:। ' এ জনি-মাকাশ করি জীয়ারে জাক্তর, '' অন্তমিত কোখ। হলে হয়ে সঞ্সার। " कि मात्र शिष्टेशा नाथ इता अमन्।, " অন্ম দেশ উজ্জ্বলিতে তাজি এ হাদর ^{শী} করিলে প্রস্থান বল:। তব কুমুদিনী "मध करन मरतानरत रहेता मानिनी ্বলা ভাবিলে একুবার ৷ তব অদর্শনে 🔈 " আছি বে এখন প্লাণে তাই ভাবি মনে। " अद्भाद दि निष्ठं अभाग, विधि भिनाकः। ' কি সেবো **গঠিল তোরে ? লৌহাপেকা** বুলে * কঠিন ত কভু নয় সৈ দ্ববা স্কল, '' হতে৷ না পুর্ধাবদিত শত চিরে বল ত চাহলে কি দশ্ধ হাদি ? তাই ভাবি মনে। া দহাগার খুনাময় তোমার বিহনে।

े" ७८२ ७१ शाम, पूमि (थारमतः मागन "তব প্রেমাধীন, আমি কুড়াও অন্তর " अक्वांत्र (स्था सिद्धा । अहे सम शाला " आहित भंगन कृति; क्यान श्वारम " রহিবে বল ছে নাথ, কে সেরা করিবে " দাসী ক্রব হেখা পড়ি। কেবা খাছা দিবে " ক্ষুদ্ধিত হইলে তুমি করিয়া যতন? " इत्न जुवां जुद्द, तम, कि मिर्ट की बन ! " কোমল শ্যায় কান্ত করিলে শ্যন, " ना रटा उर् नशर्न निक्षा आकर्ष।। "मार्गाञ्च नयाश्च अटव कब्रिश नश्चन " कतिए इन्टर नाथ यामिनी यापन। 'প্প্রামে বস্তি ক্ষ্ট ক্ত সংক্ষটন " প্রবাসে আছিল যেই জানে সেই জন। " इन रच अन्मह्म अहर अममग्र, "তব হাকোমল অল কেমনে বা সয়। " ওরে রে দশ্ব লোচন, ড্যোর প্রীতিকর "প্ৰেমপূৰ্ণ দ্ৰবা যেটী ছইল অস্তর। " যার স্থকোমল কান্তি করি সন্দর্শন " इंडिम् श्रक्त उरे काथा (मरे कन ? "कमनिनी मुद्द मिश् यञ्ज कविशेष " मिश्रदत डेशमा छोत्र, छोत्र निमर्शन, "প্ৰাশ পদ্মপোচন কছে শীতাৰ্বে,ূ ''कप्रनिनी मम् जूरे क्वानिञ्च जसद्र। "কিন্ত কোধ। ভোর নাধ বন্ধর আমারে, " হবি বিক্সিত প্রাতে হেরিয়া যাহারে।

"মম প্রাণনাথ যেরে তোর দিনমণি, " जलुमिटा मिर्दे मिनि पूरे- त जमित "না হলি কেন মুদিত 🎓 ছ**লে অঞ্জল**, "নিগলিছে বটুট তোর বরস ভাষর্গদ। " ছবি শুক্ক বলি তাই দু মিছা দোষ তোর, ''তবে কেন দিই আমি। উচিত না মোর "কটু ৰাক্য ভোৱে বলা, তুই রে যখন, " শুকাবার আশে এত রস বিসর্জন "করিছ[্]তো অ**দ** হতে। অরে রে এবণ, " স্রবণ করিতে দেই মধুর বচন " পাৰি আর কোগা বল ৷ সেই শিক্ষর, " अंबर्ग विकंठ इर्ह त्रिव निहलुह " तिमान वन ति पुरे ? इ.अ ति विधित "विवाक वाका विभिन्न मह ७ माई। इ " তোর ছারে প্রবেশিলে ছইবে নিক্ষল, "অক্স নর বাক্য তোর যেমন গরন। "ওরে বাহনতা দয় ধ্নায় নুঠিত "রহিবি রে,কত কাল ! যাছার আঞ্জিত ^দীন ভোরা কোথা বল সেই ভক্**ন**র ? " আজার করিয়া কুঠ যার নিরভার "রহিতে স্বই অন্তরে?'দেই তক্ তব "হড়াশ প্ৰনবেটো বহিনা বিপ্লৰ · चिष्टिम श्रुहरः, श्रुम विश्वपूनः " উড़िमा श्राप्त (बदम धारात अकूम। " पूरे नजा अगरात्र পड़िया अथात्न, " তোর হংখ দেখি কেবা না কাঁদিৰে প্রাণে

^৮রে অ**ক শ্রেডা**লগণ আর্থে পরিবত

"হইনাই তোৱা পৰ, আৰ্ছ অস্ত

"मज जरेकांटर उमरे बांगमांच पाज

" कमिन बहिरि वस् काथ कुछ छन !

" जांध विना अ अवीरण मम स्थ शांक,

" यम जांध जारीमार्थ दिमा ता जाकीम।

" ওলোঁ নিজে, বল্ ভোর কেমন এ রীতি

" গত নিশি তু**ই কেন** বাড়ারে পীরিতি

"मम जांबि छाज्ञियांद्र कत्रिनि विलग्ना

" হরিবার তরে কিলো মোর অবলয় <u>দ</u>

" অন্ত দিন তম্ম কীণ প্রভাৱে পদাও

" आस्त्रानित्न धकतात्र किति माहि हा छ।

"गंठ केमा मिट भेगा आमोत समता,

"वरमिहिन हरक यम कलोका मा इतः

* কি করিছি অপরাধ বল তোর তামি,

* হরিতে জীবিতেশরে হলি অতাগামী।

" বটে লো বটে লো তোর বন্ধ অপরাধ

করিয়াছি আমি ববে মিটাইয়া সাধ

" आवकास महन मिनि कति क्रांगतन

" করিডাম দূর তোরে ছতে আ নরম।

"তাই বুন্ধি তুই এলো দ্রিতে ভারি শোধ,

" रिमिहिन कें(बि'गरत कति मेरा काम।

" রে মন্দ্র কর্ম পুন্রঞ্জনলি ভোৱে,

" इहिमा क्लिन स्टब्स् मानारेनि स्वारकः

' गित्राव्हिन हक्षे चंदल नकुर्दन कारनः

" गहाइष्ठ क्म इनि १ शक्ति भारकादन ?

" मक्ष (मर्ट् श्रूमः किन खुनिएंड आंत्रिनि ? " वियाम विरय महरत जुनिः स्पन्ने किमिन्।" जार्क्म कतिम वह अक्रांत त्याहिनी, অঞ্ধারে বক্ষবাস তিতিলা কামিনী। गत्नात्रमा नाशी अक अम्ली स्नीमा, थानमध पाहिनीत वह श्रीवामिन।। সাস্ত্রা সলিল মোহিনীর দগ্ধ দেহে गिर्कान्टन मरनात्रस पक्ष क्रिएगेट्ट বিগুণিত প্রজ্ঞানিত শোক্ততাশন, যথা দ্বীভূত শুক্তি পাইলে সিঞ্চন শীর উত্ত হইয়া হয় চূর্বে পরিণত, ' माहिमी कन्नान ज्ञान हुन (नहे मछ। শোকসিছু বেগে মনে হলে উচ্ছলিত, প্ৰবোধ জাঙাল কোথা থাকে বল স্থিত। इःथ विश्वविक करत्र जकारम माजूना, শোকাবেগ শান্ত হয় আপনি আঁপনা। তारे मत्नातमा सङ्ग हरेल विकल, করিতে দাব্দা মোহিনীর অঞ্চলন বহিল দ্বিঞ্চশ বেগে। অঞ্চধারা শত, মোহিনী কপোল দেলে বহে অবিরত। मिनम ब्राइकी धनी क्षित्र दिशानन, লোহিত লেচিনময় না সরে বচন। আহার বিহার সুখে হুইয়া বক্তিত, করিল **হুজরী আম দতাহ অভীত।** দিন দিন তত্ত্ব কীণ ভোৰি জাৰি ধনী, शृतिमार्छ भागभन्न क्रममः (यमनि।

किया मामनाजी मधा त्रवि जीक्क कर्दत करम करम यात्र शैनि थन कत छरत। (माहिनी कांगनकाइ सामनाकी मंग, হতাশ অনুন আছে তাহাতে বিষয় . কেননা করিবে ক্ষীণা সেই হুলোচন क्तिना इरेट धनी मनिन दमना। श्रीजन त्म यमन कृति मम्बर्गन, करेल नियाम मत्य सर्वाहरू **मिवानिमा गत्नाह्या (माहिनी मनन,** রহিত ছঃথে মগনা প্রবোধ কারণ। रेश्या नारम मरहोय्य काल छाउँक প্রয়োগ করিল যাহা অসাধা সাধক। বিচ্ছেদ বিষম রোগা ক্রমে উপশম, •कमभं दिमुक धनी यञ्चनं विवमः धकना प्यांकिनी मरनात्रमा कंत्र धति, কছিল প্রাণি স্থীরে স্বিন্য করি। " (मर्थ, महे, व्याननाथ श्रीत कक मान, " তাজি মোরে শোকনীরে গেলেন প্রবাস। " अम स्वांता याहे आपनाथ भूटकां छाटन, " क्रिटि नीउन मिश्र मुखानिउ धार्त। " সধার কর রেপিত ছেরি তক্ষর, " खुड़ार्टर नम्नन महे खुड़ार्टर व्यस्ततः। " যত পুষ্পাত্ৰ জাছে, সধার, বিছনে, " শুক-প্রাণ নিঃসন্দেহ ব্যতীত সিঞ্চন। "অতি আদরের ধন তাহারা নাথের, " मनिन निक्रम निना सीटक निर्माट्यत

" मतित्व जीवत्म जात्रा ; विन जारे मरे, "অভঃপ্রোদ্যানে চল দও ছই রই " । এउ रिन (माँटि धर्मान श्रूरणोणात्म, উন্থান নেহাকে দোঁহে উৎস্থক বয়ানে। দ্বীভূত দেহ আর সম্ভপ্ত জীবন. সম্ভোষিতে পুর্ম্পোজ্ঞান হয় গো যেমন कि अवा आहि जुबान वल इन मन। छेशनित्म स्थिकिमञ्जू इत्र नियाद्वर्ग। माहिनी-मानतम किन्छ इति विश्वतीछ, নেহারি উন্থান গনী শোকে বিমোহিত। माइन-मरकाउ-कथा डेठि मन् कारण, আকুল কয়িল হদি; অঞ্নীরে ভাসে হাকামৰ বক্ষ তার; গদ গদ ভাবে আপন প্রাণ সধীরে ও রূপে সম্ভাষে। " আহা মরি মরি সই নাথের বিহনে " শোভাত্রই এ উন্থান দেশরো লোচনে। "यथा शृहसार्यो यनि मह शूत्रकन, 'গৃহয়ার ৰুদ্ধ করি কোথাও গমন " করে ওলো প্রাণসই মাস হুই তরে, " হয়ে প্রকাগত হেরে বাুটা অভান্তরে " कडरे पहिंचा अया। यथा पृक्षामन " " आहिन ना किছू माज जुशांत्र श्रामन "श्वनत विका ज्य ; काथा अकट्ने, " जिमित्र। वनजु उक कके तमत मटन। " गृश् मृथीन चन, गृह मंशा यक, "পরিছন পরিক্ষত হয়াতে

" पानक्ताइंड (जात नत्रनेक छक ; " महरू शृंद्यक क्लिंग खीवा मन् मह। " ৰ্নপৃত বাটা কৰে শোডাত্ৰত জড়ি, " नायम्ब अ केमान जामात छमछ। " जनमूक बाँगि रहति स्य छान छेमझ, " म जार थात्र महे कदत्र अ क्षत्र " ट्रिक्स ७ थ्ल्भामान । चनत्र विमद्ध, " হেরি শোভাষয় তক শুক্ত অনাদরে। " प्रवामम स्थावजी भन्नी छेशरत, " জৰিয়া ৰনজ-তৰু 'নয়ন কাতৱে। " যে পথ থাকিত সই কড় পরিফার, " শোভাষীন এবেদেধ ভাষার আকার। "জ্মিয়া বনজ-তৰু চানকা উপরে, " চাৰু কিসলয় কীট কাটে ছৰ্যান্তরে। " প্রাণনাথ বর্ত্তমানে ফলে এ উন্থান, " চিত্ৰকৰ ছবি সম ছইত লো জান। "মম 🔏 প্রেমময় আর ভৃত্তারামধন, " করিত এ উদ্যানের কডই যতন। " (मर्थ (मर्थ) मखनि, मणा माधवीत, " সহকার পাথাজুই করেছে সমীর। "করি বিলোকন সই মাধবীর 補, " মনে হেন ভাৰ মোর আসিল সহসা " বেন আপকান হংখে হইয়া কাডৱা, " ধূলার স্থাঠিত আছে কদি হংবে ভারু।। 🖟 " गंज मधूगांत्म यत्व माधवी व्यन्त्रं " " कदिल नव श्रम्न, कडरे छेरुमव

" একাশ করিল নাখ; মম কর ধরি " कड़ित्मन (अभगत :-- " तिथ (म) स्माति " गांधनी धक्क कड श्रम्भ धनवरन, " 'নাতিনী জামাই তব প্রথত জীবনে " 'क्तिटल्ड मधूर्यान माधनी कनरम, "'অই দেশ বিধুমুখী স্থণীত উভয়ে। " 'কর অন্নরোধ থিয়ে তোমার স্থাই, "'ভানাক সন্ধীত এক নাতিনী জামাই'। ' এমন সময় অলি তাজিয়া প্রস্থন "পশিদ অপর পুস্পে করি গুন গুন। " প্রাণেশ কহিল দই ছাদিয়া তথন, " 'নাতিনী জামাই গীত কর লো এবণ '। " এত বলি মম গলা ধরি প্রেমময় " कहिलन भूर्स कथ। श्रकूल कन्य। " 'সহকার সহ মাধবীর পরিণয় " 'मिनाम यद तना थिएत जामता छेखत " কত আনন্দের দিন আছিল সে দিন্ "'মাধবী প্ৰথমে যেন কত ইচ্ছাহীন "'বেঞ্চিতে নাথের অজ; সংযোগ হ্বার " 'कतिनिञ् याता लाँ एक, श्रांत श्रमकात " भाषवी পेড़िन नाटक रहा नउनिहा, "'প্রেমস্থরে অবশেষে বাঁধিছ সুধীরা। " 'मिन मिन रहित शदत मांधवी जाशिन, " 'জাপটি ধরেছে অন্ধ, ভুজন্ব যেমনি " 'শাখা জাগটিয়া থাকে খুলে সাধ্য কার, " 'माधवी छारकर ब्रव अन महकात।

" 'कृमि उ अक मिन अ विधुर्वमिन, " 'লাছকা আছিলে অতি মাধৰী যেমন। " 'মাধবীর মত আরো কত স্থলেচিমা, " 'লাজ্কা প্রথমে প্রিয়ে রছেনা বলনা। " পতি অন্ধ পরশনে পায় গজা কত, " 'বড় হলে কোখা তার লক্ষা রহে তত। "'প্রথম মিলন কালে নারী ভয়ে জড়, " 'কোখা রহে দেই ভয় নারী হলে বড়। "'নিম্ব সম যেই দ্রব্য সপ্রথমে জান। " 'विंमित्न योदनदम स्थाद गमान।' "এত বলি প্রেমময় চুধিনা অধর, " স্বরণ হইলে সই হৃদি জ্রজ্র। " স্থাপূর্ণ কথা ভার মানস গগনে, " इहेरन छेमग्र मम कति मरन मरन " এখনি এ मक्ष প্রাণ তাজিলো জীবনে, " খুনাময় এ সংসার স্থার বিহনে। " অই যে লতাটি সই সমূপে তোমার, "পরিমলপূর্ণ পূষ্পপ্রস্থা, গন্ধ ভার "कूच्य मध्य मधीद्रव मध्यदित्य " जात्माम करत जेमान. आन छेडालितन " তথনি শীতদ হয় দইলে আছাণ, " आनमनामिनी कृत्य आनम क्षमान। " मानजी छेशांत नाम कितना धान मरे, " নেহারে উহারে আদি চিন্তিছি কতই। " मन्पूर्व स्थार्ड ल्याट्ड मद्रांड जरुमा, "कूष्ट्रम खर्डि मानजीत श्रीजिश्रीमा

" अश्विदिष्टे जीय मिथि ; जामि व्यममत्र, " দোঁহে গলাগলি করি আনন্দ হদব " विजिन्नाम शिक्षा आहे महाबिद उटि, " दाँ हिव यानम् आर्ग तरव कमिश्रे , "মম জীবিতেশ কথা জিনিয়া স্থারে, " দৈ সৌভাগা কথা কি লে। পারি ভুলিবারে। " कहित्न नार्थ भारत, 'मिथरला सुनित, " 'কিবা শোভাময় তাজিকার বিভাবরী। " 'मन्भूर्व भंदन भंगी भाक्तिह गंगरन, " 'भत्रम कीरम ज़श्च (गांडा नित्रीकर्त। " 'যতবার হেরি প্রিয়ে পুর্ণ চক্রমারে, ''স্থারাশি এ শরীরে বর্ষে ততবারে। " এরপের উপমান জগতে বিরল " 'ধঁয়ান্থিত সৌন্দর্যোর উপমার স্থল " 'অইরে অধরমণি; আছে এ জুবনে " 'একটা সাম্প্রী **মুগ্** যাহারে নয়নে " 'হেরি সমস্থ বোধ হয় লে৷ অন্তরে, " '(সম কি অধিক অংখ স্থরসিক নুরে " '(मधूक विष्ठांति भरन); वन वतानरन " 'वन मिथ कोन जुड़ा म वा ७ छूरान।' " जानि कहिनाम ना्ध तैन व कराटज, " কোন জ্বৰ্য আহে হেন উপদেয় ছতে " भातिरव स्थारल मह रमेश ना नक्रतन 1 " कहित्न नांध शांति अभिग्न बहुत्न " 'मिथिरव यमि लां पूमि छल। थारवसिन, " 'म मिल्यातानि চक्क किति गृहह धृति

" 'करत रमधरण मर्थग, भाषेत्व रमित्रिङः

" 'बरे कि राम बामि किमा बिस हिट्ड।'

"চিব্ৰুক ধারণ করি মাধ ৰামেডৱে,

" কহিলেন হাসি হাসি সহাস্থ অধরে।

" रेहाराका तमनीत र्जाजामा राजिक,

" কি আছে জগতে নৰি, প্ৰভূত বিভৰ

' जूनना दश ना (करना देवाद निकर्छ,

" कहित्उहि महे जामि देश व्यक्त गटि।

"'কিবা শেশভাষয় আজিকার বিভাষরী।'

" कहिलन नाथ श्रनः, ' ध्यकृष्ठि चुमती

"'কি শোভা ধারণ প্রৈয়ে করেছে বল না,

" 'গগৰ প্ৰাঙ্গ কচি দেখৰ। দেখৰা।

" 'मज्लुन मित्रमन नीनिमा वत्रन,

" 'সুধাংশু শোভিছে তার জিনিয়া কাঞ্চন।

"'কোমুদী স্থজ-বাস করি পরিধান,

" 'প্রকৃতি সাঞ্জিদ কিবা জুড়ার পরাণ।

" 'अमगत्न उक्षक त्म वाम किंद्रानं,

" 'अभीम् आनम स्त्र निहिष नद्राता।

'' 'মালতী গ্রন্থনে পড়ি কৌমুদীর রাশি,

" 'उक्क निष्ट व उष्टाम श्राउडा श्रकानि।

"'मानजी क्ट्रंग माक्रा कदिएग हम्म,

" 'इन ब्रिट्स मनानरम कृतिच धानुम

"'স্থাচিকণ মালা তার এই ঘাটে বলি,

" 'तक्कनी करत्रदंह मिना चाकि भूग भनी।'

" তুলিত্ জাঁচল ভারি মানতীয় সুল,

' দৌরতে প্রমোদ তত্ত্ব জীবন আহুশ

" गाँथिनां म ठिकितिहा माना हुरे जरन, " कड़ित्मम नार्थ शांति आवित्र वहत्त । " 'ছেরু ছের ইম্মুধি ছার কি ছুন্দর, " 'কোৰা এ সাজিবে ভাল ছার মনোছর। " 'কৰৱী ভূষণ যোগ্য তৰ লো স্থম্মরি, " 'কর লো অম সার্থক কেশপালে পরি।' " এত বলি নাথ মম কুন্তল বেঠিয়া " मानजीत माना माद्र मिना भवारेता। "কছিলেন প্ৰভু হাসি 'দেখ চন্দ্ৰাননি 'আহা মরি মরি মালা সাজিল কেমনি। " 'हिकूत यक्षन छव यन - धरा - काँ म, '' 'मानजीत मात्न जादर बहार्न क्षमाम। "'रुद्रियु यে ७३. अप इडेन मक्त ''নির্ধিয়া হলে। মুম নরুন শীতল[ী] ' প্রকাশিয়া অনুরাণ করিলা চুম্বন, " किं किंटिंग डिट्ड महे हहेटन व्यवन। কহিতে হঃথের কথা শৌকের দাগর উপলির। উঠিল রে কম্পিত অধর। नियोग शेवन (मधा मध्यक्त मिन, শোকের সাগর তাই উথলি উঠিল। উথলিয়া শোকসিদ্ধু করিল নয়নে, मत्नातमा व जक्षा भू हान जीवरन। मत्नात्रमा भनि शदत माहिनीत कत, কহিল সজল সাঁধি হঃধিত অন্তর। ं कर मरनाइआ-कथा छनि खानगरे, "रेक्टा इत मटन मटन इस जनत्रहै।

•

" जब इःच महन रहन कंछ इःच नहें, " किर्चादक मिर्चे इःच पूर्व भावि करें।" " तमनीत किया आहर खानेनाथ वंदेन "मत्नं हत्न ंडव कथा अतं अतं हित हरे। ं " এ इःश्वित्र जन्मान करन जनश्रहे, " आंत्रित (मा उर नार्थ मिन कुछ दरे। " স্থার সংক্রান্ত কথা কহিতে লো সই, " मिता अंतर्गाम एटना एम द्रमपरे। " अरे त्मथ अखाइद्रलं इटल निनम्नि, " अपून भाषाम नीव मिकार कथनि। " अथवा कि श्रुरताजन मिकिवादत नीत, " मि कार्या माथिन उर्व मनिन औषित।" ' শুনিয়া স্থীর কথা শোকসম্বরণ कतियां भारिनी धनी कहिन उथन। " সধার সংক্রাম্ত কথা কৃছিতে লো সই, " किंदू ना जाहिन मेंदन आंगनाथ वरे। " এলো महे जानवारम कवि जन मान, " प्रमिन निकास उक श्रूतः शीरव धान । " "এতবলি ছইজনে লইয়া কলস, िनिकिर्फ, नागिना नीत रुक्त महम। शानाम उक्त उत्न (बाहिनी इसती, मिकिएउटह नीत ऋरब खीवा दिंछ कति। गत्नावया (इन काल करिना मखावि, माहिमीत मूर्य हाहि डेश्यूक धाकानि। " अरे मत्या जन गटल शामाणि बद्रण, " मारीम (क्यर मेरे नग्रनतक्षमण "

त्यादिनी व कथा छन् पूनि निक भित्र, মনোরমা প্রতি চাহিলেক সাঁথি ছির। নাহিক গোলাপী আর চম্পক বর্ণ, निविधन उथि मानीवमात नवन। शांति करह गरैनांत्रमा माहिनीत थाति, ' নির্থিত্ প্রাণসই আশ্চর্যা লেণ্ অতি। " कब्रि यदन थीना (इंडे श्रमानिष्ट नीक् "তৰ গতে নির্থিত্বর্ণ গোলাপীর। " সে বর্ণ আর দেখি না একি হলে। স্থানা, " (मर्गिष्टिन मिर्म हर्क कर्व इर्ग काना।" কৰি কয় মনোরমু নাহি তব ভয়, शामालिहे एकि हर्क अकूब इपर। यत्व (मा (माहिनी धनी मिकिन जीदन, একটা গোলাপ পুষ্প উজ্জ্ব বরণ माहिनीत (गांत्र-गाः अठिविध पड़ि, গোলাশীর বর্ণ ধরে ছিল আহা মরি। माहिनीत वर्ग हेकू अर्मान निर्मल, প্রতিক্বতি পদার্থের পড়ারে সকল। मत्नात्रमा-कथा अनि त्माहिनी सम्मती, कटर कथा शामि श्री मधी कद धरि। " अत्मा आगमरे उर वर्ग (गामानीत, "তাই দেও দেই বৰ্ণ তোমার স্থীর। " গণ্ডেতে গোলাপী বৰ্গ কোথা পাব সই, "পাণ্ডু বৰ্ণ ভাবি নাথে দেখ রস্মই।" जथिं मरनातमा मधीत कथात्र, শা সরে কুলনে বাক যেন হতাপায়।

उक्कारिक नीतं शरक नरेश कनग करक वन कारिन त्रवनी जागंठा जाता, नकत समझ रेम्हारीना धार्यानन वागिए छेखता अञ आंत अर्क मिन बदनांत्रमा नर, মোহিনী আকুলা অতি পতির হুঃসহ विकार यखनामतन, धामक मीविटंड, **অতীৰ উৎস্কদনা কৌভূইল** চৈতে গাত্র ধৌত করিবারে করিলা মানস, যথা প্রাণপতি তার রক্তনী দিবস রহিতেন প্রায় বসি, হেম্বিরারে শোডা, তড়াগ সলিলে প্রকৃতির মনোলোডা। প্রিয়জন প্রিয়ন্থান হয় যে সকল, প্রণয়িনী পক্ষে তাহা যেন স্বর্গস্থল। মোহিনী মানস তাই দীর্ষিকা দর্শনে, रता युष्टक जि. मधुत वहरन কহিলেক প্রাণস্থি মনোর্মা প্রতি, " দেখ লে। দেখ সজনি আমার ছুর্গতি " নাথের বিরুদ্ধে আজি; প্রাণ উচাটন " হইতেছে কেন এত স্থার কারণ। " नरेका चंदा - जीरमण छन इरेकरम, " (अममज शिक्षकान मीर्विका मर्गत्म, " हम प्रदेखान यांदे यनि (मा क्यांत्र " यम मखाशिज थान, वन ना भागांत्र " ইহা ভিন্ন এ নোগের কি আছে উপায়, " बाधी हांज़ा काधिनीत कि विवम मात्र।

ঁ "পতিৱৰ্তা ^{কামিনীর} পতিষ্ কারণ, " যেমূন আকুলমন হয় কি তেমন, "পতির' কভু **লে**। সই রমণীর তরে, "ইহার কারণ, স্থি বুঝেছি অস্তরে। " গৃতি দেখা কতরপে আপনার মন, " নিযুক্ত রাখিতে ক্ষম সদা সর্বাক্ষণ। "কড়ু অধায়ন করি কড়ু বা ভাৰণ, " কছু প্রিয়বন্ধু সনে করি আলাপন, "কভু নানা দেশ করি সহর্বে ভ্রমণ, " অপুর্ব প্রকৃতিশোন্তা করি সন্দর্শন, "কছু বা কাৰাকুন্তম করিয়া গ্রন্থন "সক্ষ করিতে সই সময় হরণ। "পুষ্ষ সহ পীরিতি রমণীর কাজ, " রমণীর সৃর্বকার্য্যে পীরিতি বিরাজ। "পীরিতি-পথ ব্যতীত রমণীর মন, " जन्न नर्थ कड़ मिरे करत न। खम्।। " ह्म य शीतिजि-भर्य পড़ित कछेक, " म्ब-कांत्रागारत इ'रत्र इनत्र जाहेक " ছট্ফট্ করে যেন পিঞ্র-বিছন, " প্ৰাণ হাঁপাইয়া উচ্চ বিনা পতিসন্ত। " তুমি লো প্রাণের সই তাইলো ভোমার, " थूनि यन मिथारेडि श्रृमश्राकामात्र।" ্ৰুত বলি ছই জনে গাত ধৌত তরে, हिनना विकादन त्मरे मत्नारत गत्त। विमन-मुलिल-भून त्महे नात्रावत्र, চল্চল করে নীর পেরে বা**র্ভ**র।

मिर मिनायकान जुरू जीवि सन. थत, धतः कतिराज्यः अंज स्मः पाजम । . অপরাত্তে এর শোডা কিবা মনোহর, क्रमदम वर्तिव आपि आपि भीन नत। स्पीर्व महती तारे नामन निर्मन, श्रृत मन्त्राचित्न इरेटन ठक्षन कि जानुका जानुका करत त्य थात्रन. **उटाव तम्थ स्थीवत (कम्म स्म १**म । इरम इश्मी मनसूर्य महा मखद्रा, त्रशक्ति तः तम माधूती क्लाम जीवनं। कानिया बदन मीदन इश्माखनी-(नेंग्फ). তড়াগ পড়েছে যেন ছার মনোলোডা। किया जान इत्र यन ठान कामहिनी. आमरत धात्रह धनी छलना नामिनी। नामिनी हक्षमा जां किया कर्न कर्न, इश्माखाणी मह कुना माखिरन क्यान। इश्तरवानी कात्रमादन शांत लीमापिनी. मनन इरेटन करन क्षेत्र मामिनी। 'बर्साः यथा अक अक्षी क्यनिनीम्ल, कतिरङ्ख्य मृद्य नीदत मभीदत हथान। मत्या मत्या शांतिविष इत्त छे०त्कर्णन **शम्रशर्व शक् किया याधूती भात्रव** कविरक्षाक्र कति कति : मर्न कान इत्, शबद्धांश प्रणि (वस शिक्षती-क्षत **डेकविका दिशादि। अर्देक क्यनिर्वी** অৰুৰা মাণিকা তার ধরি ছহাঁবিনী

कहिटल नुजी नीति कामन भवाति, मनुष हिक्का भया। भारक हाक छात्र। नाना कां जिमे नीता जानत्म माजिया সম্ভরিছে বৃত্তি বৃত্তি সদলে বেকিয়া। नाहि कारन लोक इःथ मना ऋथ मरन, নির্থি তাদেরি ত্থ ক্ডায় নয়নে। गर्धा मर्धा वाति'र्शक धरमारम जानिहा, मरनाइत अस करत श्रुष्ट घ्राहेश। গোলাকৃতি জলরেখা তাছাতে উদ্ভূত, দারি সারি ভাসি যায় দৌশর্যা অন্তত। চারি তীরে পাড় উচ্চ অতি মনোছর, श्रामन नदीन मुक्ता आहुड छन्नत। उष्ट्रशति विष्ठत्रं करत गांखीमन, নির্ধি উত্তপ্ত প্রাণ হয় সুশীতল। পাড় সহ গাডীদল প্রতিকৃতি জনে পড়িয়া অপুর্বে শোডা; নয়নযুগলে कि जानस विভर्ग मि मृत्री य करते, দে আনন্দ বর্লিবারে দক কোন্নরে? সরোবর শরণীর হই ধারে লৈশতে, वकून भामभ खनी; अनि मधूरनारङ অস্থান তার এবণরঞ্ন, গুঞ্জরে সোরভে পুলক তত্ত ভুড়ার জীবন। ইন্টকে নিৰ্মিত ঘাষ্ট অতি মনোহয়, ু হা ধারে। শ্যেতে ছটা ৰাউ তক্ষর। मन मुन्न नमीत्रव वहि उद्दर्शत्त्र, কিব। স্বধ্র অর সমুখিত করে।

নোঁ নোঁ শব্দ হয় জাৱ কিবা ভ্ৰমিত, বীণারনিজার কাছে হয় গো লক্ষিত। ठाति शास केल शाक काश्वा केशरत. गाना गांक कक्त किया लाखा करता. তক্ষেণী প্রতিবিদ্ধ পড়িয়া সরসে, कि अंजि अंगाम करक कि खीं जि मानतम । निर्देश क्षेत्रकां बिला वर्गन मत्रभीतः किया भारक बद्रबद्रक्ष्यः। थक्जि-चमनी यन मन्ता चागवतन, हिन्नत श्रेक्य अन्य नाल गणिनात. जारे शतिबिद्य धनी विशे मत्नाक्त, मनभी चार्तीम धति धकून जसन नित्रविदह ने कटत्र दिन जार्शनात, त्म लोको नित्रवि मुख नर्द मन कोत १ **ठियम शुक्य इतिवादा दिशे (यहै,** कि जाम्बर्ग इतित्वकं नवमन रगरे। (इ शांकि महामग्न मिया जयमात्म. कि अनुर्वार्थ गत्म अन्तन धनाता। नगंबाकास्टर यात्र एत कर्यक्न, তার পালে হেন ছান যেন বর্গতদ। প্ৰন-অক্ষিত নগরীর রেণ্-রাশি, উদর পুরেছে তার খাস সহ আমি। নাসারত অহুর্গত্তে সম্পূর্ণ পুর্লত, যেনজনে ্পরিজ্ন ^{*} সম্পূর্ব প্রক্রিত। क्लिशिन मान धृति क्टब्ट्ट बेब्डि, কতু প্রভু নিঠালাপে নরন লোহিত।

তার পকে হেঁন ছল কিবা জীতিকর। যদি রে ভাছার হয় কবির অক্তর : निया सनैध्यात **यूनि जूनि अप्राजन**, পরিহরি অর্বচিতা আর রিপুগ্ণ। বামেতরে দিয়া গও বাঁধা বাটে বলি, হেরিতে कि প্রতিকর প্রকৃতিনরপদী। मार्ज्य-मञ्चलं मार्जिया नमीबनं, নিদাৰে উত্তও অনু তৃষিত জীবন; जानि इत्रे महत्रायदा शांन कदत्र मीत्र, শীতদ করি শরীর সমীর হছের। मत्रभीत्र भीत लिटत मत्रीत्रे भीछन, किन करत मरक्षिप्रक महत्रावर्त्वे प्रन। क्ष् नूर्डे शित्रमन वक्नथश्रत, क्छू बन्ने बन्न बर्ट उक्टबनी उत्त। क्कु मांबवीत खीवा कतित्रा खहन, मरनत चारनरम इके कत्रदत हुवन। नाबीते अंशन, हाटन ककू वा नक्ति कञ्च ना इत्व जनज मोतिहा, मानहे। वर वाशीउटि जानि वास्ति इसही, गर्छती गर् जात्र, वित्नाकन कवि **ंधिममक्क विश्वज्ञ, हिंखाकून मटम,** गरनात्रमा थांछ धुनी मधून बहरन किन जलन जीवि हैं- "केटना आगजरे, "रेक्श क नवनी जीता नक्कन वरे। " अजगीत" पूर्व शांफ कत विद्याकन, " अरे इतन ध्यममन कतिला इतग

" প্রাছ্ল অপরাত্র কাল বকুলের ভলে, " উদয়ান্ত নির্থিতে মন 'কুছুছলে। " অপার আমন্ত তাঁর লোডিত লোচন, "দিনমণি অভ্যে ঘবে করিত গমন। " সভাবের শোভা ছেরি গোধুলি সময়, ' जानमनीत जांश्चर राजां तम कनश। " मम मनिधारिन महे दक्ती गमग्र, ' প্রকৃতি-শুণকীর্ত্তন করি প্রেমময় ' আনন্দে তাঁহার আঁথি হতো বিফারিত. ্ এই সর্দীর শোভা বর্ণন অভীত " कश्टिन कृत्रकृषि मम मिन्निभाग "হতো চরিভার্থ প্রাণশুনি তাহ কাণে।" সংখ্য সংক্রান্ত কথা কছিতে কলিতে, গাত ধৌত করি দেঁহে চলিলা ৰাটাতে। (इनकारम (मर्डे खंडन धुक्य सम्मः, अक्री प्राधिम नाक काल मक्रत । বয়স কাইৰে দিংশ মেছিন মুর্ডি, बिहिंगित्म (वृष ४% वहश्रमणेडि। शिक्ति एगिश्नी प्रतादमः हरेकरन, रगोगामुखि श्वर्यत हुट्टेल नग्राम। निश्चित्रः (महिन्दीत क्रम अस्माम. जांदि कनिका भान, यमन विषय नहम सन्दर्भ होन छेड्डामा नामिनी, विठिख कि बन गमि उपभाव माहिमी .ে সমুজ কাঁথিয়র দেয় রে মাহিয়া⊿ विभि भ अभूना भएन कि अवा या निशे

विकास शिक्षंन याज्ञ कहित कमास, ্য ক্পের উপমান নাহিক ভুবনে। भेयन कृषिত दिन्स काल चूरिकार, थाण्डामित्रा शृष्ठेटममे श्रद्धमा , इद्रवा माहारन क्रमंत्री जानूनास क्रमंत्रान, পিছন হইতে আৰু না পায় প্ৰকাশ। भुर्करमण आपक्रिया (यन् कामविमें। मधुर्थ वत्रवङ्गां किंगि कोमासिनी। নির্থিয়া পার্শ্বতে মনে জান হয়, कांभ कामधिनी शरत महिनी छेपता। कां है भिष चुरकाननी वैशिष करती, খনপা**র্ঘে কিন্দিরেখ**া যেন শোহেত মরি। । रमन महम विदु ीविक। धार्यामहा লিয়া দী**মন্তের <u>ছা</u>র যেন** উজ্লিয়া^ই হ্রথানি নীরদণার্থ গোড়া চমৎকার. ন। বালসে কার আধিক্রেসি কচি ভার। স্থার কপালখানি অস্থান শোডা, বিশু বি**শু বেদ শোডে** অভি মনোলোডা। (यन भेजमन महन अस्मितिक तन्न, मन्मर्गत्म रम रमोन्द्राः अनुष्ठा अप्र । স্বাস্তম ভুক চাক দিজীয়ার শশী, লক্ষায় হয়েছে কাল সেরদনে পশি। •তার তলে ঝলমলে ইুগাল লোচন, अमिन इर्९ ला (य शहरण अदर्ग। **एल एन डीर्जायत्र शमाश्रत् मिन,** খেলিতৈছে লজ্জা তথি প্রেমানন্দে পশি।

ु क्रक् गंबिङ् जीवि नह ईंगे वाब, বিচুমিত চার তার বেন কাল কৰি, जाकर्रनी नेख्नि कि व्यं कत्रदत्त बाहन, কেবলৈ কৰিব আদি ভাতুক স্থজন। ' (य जैंदग पूर्वक मृकि विश्वाल कतिक, त्मरे खर्वा देशास्त्र जन गठनिन, এ বিশ্ব-সূজন-পাতা নাহিক সংশয়, श्र्व लाइन मृक्ति इकि जनामत्र। दमणी-हृषक-मूथ निकष्ठेश्व स्ट्रान, भूकम-१८- लाउन शांत तारे **क**्ल। त्याहिनी हत्रन युग गठन च्यात्र, आंत्रक बत्रगं किया अंकि मंत्राङ्त। मत्राल गमाल यात हिल यात्र मनी, उर्ज लामाकिंड इह स्टिन हकूमी। माहिमी ग्रमकी वनि विशाउ जुलकि, त्याहिनी काहमना अधु त्याहिनी स्मनी। कत्न रह পाठकजन बाहिनीय अभ বর্নিতে ফাইসা আদি করিত কুরুপ। লেরদিক্ত রূপ ওতে কোন্ ে চিত্রকর **हिजिल क्रिट्ड क्या , वल अधीवक ?** কিছা কোন্ চিত্রকর পদ্ম বিকসিত, সক্ষান্দা ভার করিতে চিত্রিত ? চিত্ৰকৰণৰ প্ৰকৃতিরপদ্মানে, 🗀 रामारकार र्यू बाज स्थी मित्रधारम। তেমনি কৰি - যোহিমী সহদয় জুস, প্রক্তি-মোহিনী ছানে লক্ষার ভাজনা।

আধ বিক্ষিত পদ্ম করি ভ**তোলন**, निष्क-कृत्त केत्रो योग्न विक अमर्गन, याण कर्ष रम रमीन्मर्या इक व्यस्तान, मञ्जनश्रुत कृत्त वित्रक्ति अमान। महत्र्किनी साहिनी थि किशा महेत्रथ मम करत इरला छात्र मोन्पर्या विज्ञा । करन रह शाठेक जन रम जम्ला धन, অতীৰ বিৱল ভবে, প্ৰকৃতি মতন করি বিজ্ঞানে বিদিয়া ভূলি দিয়া তাব তলুগানি গঠনিল অতি চমৎকার। व अरुना नवनी किशा निने गृङन मिरे श्रादर्भाग सार्वा अहीं है गठन इरेम मन्भन छात कति वित्मांकम. চরিতার্থ হয় মরি নয়ন জীবন। নয়ন জীবন নাছি ছবে চরিতার্থ? अगांत मश्मारत मात (महे (म भन्धे। লিখিল ছইছে ধৈষা পাঠক তোমার, বৃত্ত্বৰ এক ত্ৰবা নিরীক্ষণে তার मांशूजी तरहना ७७; यमि अपिहिंची उथानि इ कांस इतक इतु आमंत्रिनी তব मझिशारम (करमा। तिश्रह भारिक, যদিও পূর্ণেক্ত তব নয়ন-ছারক, সৈ ধনেও পাছে তব হয় লখাদর, রক্ষিতে তাই হে দশ স্থাংশু আদর হ্ৰাস্ত্ৰি গুণ দিয়া সৃজিদা ভাহায়, जमानिना अजिशत मन्तूर्व विमात्र।

* जारे झाम-शब्र-जङ्ग करण पाँचवीन, जार विकतिक नयं सीमर्य असाम -করে বন্ধাকালে জেনো, তাই স্থাকর, कर्गथें कर्न राज्या कर्षट जरह ঁনাহি দোষ তাই হৈ পাঠক তৰ বলি, विम जब स्मन्न इटल देशवा यात्र होन। जूबनत्यादिनी शाह्य जद मिह्नधातन, नवीनजा विवर्धिका इस धरे जातन আমার ব্যাকুল চিত্ত; তাই অপাক্ষণ तिहरित स्थारश्रम्थि जामात्र नजन अखद्रात्मः पूमि हितिर्य भूनः यथन, ममानदा जांच्यामिटव तम जम्मा धन। আয়ো দেখ ছে পাঠক ভোমার মোহিনী পাছে ই্ৰধাৰিতা হন হেরি এ কামিনী; পাছে ইবাৰিতা হন এরপ বর্ণনে, ত। इस्न रक् विशेष यामिनी याश्राम। তাই বলি হে পাঠক তাজি এ মোহিনী, তোষছে যতনে ধরি তোমার কামিনী। वन जादा धनि कदन " काथान माहिनी नार्ग उर कार्ड जिएक जानममात्रिन।"

চতুর্থ সর্গ।

"Power at theo (Freedom) has launch'd His balts, and with his lightnings smitten theo; They could not quench the His thou has from heaven.".

Thou shoutest to the nations who return Thy shoutings, while the pule approximations." W. C. Bry v.

কোধায় মোহন ? যদি পাঠক হজন, জিজাসা কর আমায়—কেব। জিজাসন क्तिरा १ क्वा भिष्ठक १ (क्वा ठाकि स्था, পরিতৃপ্ত उट्टरा कट्ड কাব্যহার স্বস্ত্রতি জীবনহারিণী, नव मानिशाद्र यथा आनममंत्रिनी। আজ্ঞাণ যথনি লও जानम उथनि, ব্যাপিয়া দে পরিমল রহে এ অবনী। হেন কাব্যহারগন্ধ ভাজি কোন চিত্র, উত্তমাল প্রপীড়ক প্রস্ন-গ্রহিত কাব্যহার-গদ্ধে বল প্রফুল হইবে ৪ পিকষরে তার্জি কেবা প্রবণ অপিৰে দিরাভীত-স্বরে বল ় সম্ভেষিতে প্রাণ, সান্তনা আছয়ে এক সদা সুধাপান करत यह छ्यीवन, नमज তিজন্ম পানে তার বাসনা

रश्रत्थां जानि यानत्म। कांबाबान यम माधित म कार्या (यम जिल्हाम मम। उत्रमा जामाद वहे-वह जामा-हाम, সহায় করিয়া ছ্থি ভুফা্ন ভয়াল ममाख मिसूत नीटर मम अञ्चली, ভয়, ভাসাহ সভয়ে, কত শত অরি আছে সে সিমুর নীরে: ধেষ ঝটিকার, धारम धारण (वर्ग वर्ष प्रतिवात। উত্তুদ্ধ তরন্ধ তাহে সতত উপিত, ৰ্বগারূপে, নমস্বার, নিরীক্ষণে ভীত 📑 মন তাহে অযুত্রী ভগ্ন কডকণ রহিতে সক্ষ বল ? পলকে মগন इंदर ता उन्नी श्रीन, यात्र कर्गशह, দীন আমি জানহীন। সে সিন্ধু আকার कदि विरमाकृत धर इसि कन्य उरह , কত কৰ্ণার দক ভাসান সভয়ে নিজ নিজ এত্তরী হন হাক্সাম্পদ। সে সিমুহইব পার? আমি ? কি আপদ . সমাজসিদ্ধর পার আছে বটে মন श्र्वी-श्रूमात्र-कत्र क्षांन श्रूमाकन। পঁত্ছিতে তথি দক যদি কেছ হয়, विश्वनारस विदाशन नड्या जासा। कृष्टिम देश कूड़ीत ध्वकामिया तम, বিশ্বান্ত করি তরী করে যে অচল। যাইব কেমনে তবে, হিনিব কেমনে कान्त्री स्थी-कद-भन्न-सान ? इज्रन

মণ্ডিত অঁকার জেনে। নর ভৰছিত, বিষধর, বিষ রে পীযূষ ' আক্লাদিত ৷ . কুমুম কোমল সম নিরীক্ষণে জান, পরশলে সম্ভাষ্ণে পাষাণ সমাম। সম্ভাষণে কেহ যেন বোধ স্থাসম आखामत्म जुजनम गंत्रम विश्म। ভাঁদাইত অমৃত্রী দমাজ দাগরে, नेशां-नक-कटत यमि यात्र देश उटन। পড়ে गिता यनि इंशा सभी निवधारन চরিতার্থ হবে আমি কেবা অপমানে গ কোথায় মোহন ? যদি পাঠক ছজন জিজাসা কর আমারে কর**ছ আ**বণ। মোহন করিছে বাস জলধির তটে, প্রকৃতি-শোহন-রূপ তারি ছদিপটে তথিকার মনোস্থাথে করিছে চিত্রিত, मथार रहेन गठ किन्हिन-हिन তথাপি নহিল তুঠ জাৰ্ম তাহার फेकीश गामना-निशा (ईति नात्रनात সাগরের রূপ নিৰুপম। এক দিব जनवाद्ध साहन अधीत कति मन लीन थक्ठि जनूर्स (अरम भूनिंदन माँ ज़ारम, नित्रभिष्ट मिन्नूरभाष्ठा छैरमग विमारत। निर्मग्न निर्मायकाम धीच वक म्य, লড়িছে না তৰপত্ত বত্ত্তপা অপেষ। नित्रीकर्ण उक-त्रांकि मत्न कान इक्र,

নিভর বৃহিছে ,তারা পেরে মহা ভর।

প্ৰন বহৈ বেমন শিকারী ছাপদ, पूर्वीषुठ निर्वाशिश पृगं श्रीजिश्रा প্রকৃতি - কুমরী - মুখ করি নিগ্নীকণ, कान रह जाटह धनी छेट्यटम मगन। যেন কোন মহা ঘোর বিপদ আগত, প্ৰকৃষ মুখানি তাই বিষয় এমত। রঙ কুছেলিকা খেরি অখিল ভুবন, আচ্ছাদিরা আছা মরি সোণার তপন। করি বিশোকন রবি ছেন জান হয়, गगन व्याष्ट्रा यन श्रीता तकमत्र ধূলি অভান্তরে পড়ি, আছা মরি মরি ভব ভাবিইখ ভাবি অংশুদালী ধরি रगन ८३ मिनन मूथ, दिनदित कनश, त मुशानि मनाकाटण इक्टन छमग्र। উত্তর পশ্চিমে ছোর কালিমা বরণ घनांवली (इन कारन मिना महासन। कर्ग मसर्वात्म मत्न त्यन कान इश्र, ধন বলি কিন্তু উহা খনাবলী নয়। भवन कदि धाइन कानिया दहन, श्रामा आर्थिष्ट एन्डे एडिएन कथन उारीत निकारतांभिति की क उक मन : দাঁড়ায়ে শক্তি তারা বলির ছাগল। निशंष्ठे बन्शंष्ठे अफ कति नित्रीकर्ग **अक्र**ि मडीद क्रश, इहेग्रा मगन काम कृत्री एता मुक्तकान मञ्जामक, অম্বেষণ করিতেছে কাল অভিমত

হরিবারে প্রকৃতির চাক বিমশতা, বিষয় বদনথানি ধার মুর্থদতা विवार्क दिहाइ जारे, यमन् कामिनी পতিব্ৰতা, পতিৱতা, পতি প্ৰণায়নী, লম্পটের পরশনে রছে শক্ষাত্র, - আতক্ষে বিহ্বলা ধনী বরণ পাওুর। মোছন দাঁভায়ে তটে হয়ে গুক্ত-মন, প্রকৃতি মলিন আছু করি নিরীকণ हिसांश मर्गन शीतः कृष्ण धनावनी আচ্ছাদিল বাযুকোণ. অচল আবলী দুর হতে শোভে যথা, বায়ু ক্রায়িত তারি পার্শে ব্যাস্ত যথা রছে গুলার্ড। शीवि धीवि भागरक्ष कविद्रां भवन श्चांत्रनारम अकवारत्र श्रामानि लच्छन পড়িল পাদপমাথে। ভীক তকদল করি নত-শির যেন ভয়েতে বিহবল ধরিছে প্রন পদে জীবনের তরে, হর্দান্ত হংখিত কোথা হয় রে অন্তরে मीनश्रथ ভাবি मत्न; (इति शत्रश्रथ পাষ্ড-পাষাণ-প্রাণ পার মহান্ত্র। म्यात क्रम्ट्स क्रांथा क्रांक्श छेमझ, উদ্যুক্ত যখন সেই পথিক সভয় ু নাশিতে দণ্ড প্রছারে স্থবিজ্ন পুথে, शिक धितित शिम मन्त्रा मत्नात्रतथ সাধিতে বিরত কোখা ? হলে নতশির, जमनि ভाकित थीना हिनित नतीत।

তঞ্জপ শাৰীর শির জারভ ভাঁদিতে করিল প্রম, মড়মড়ি চারি ভিডে পড़िছে भागभुष स्टब उग्रेटीक, रत्य हिन्नम्न स्टनं। धृतिना् करा উড়ি গেৰ কাঁক শাৰা শোভার আকর, गमल भेरीत काक कैंटि श्रेत बन्न। পৰ্ণ নিপত্তন ছলে তক্দৰ যত, বি**সর্জ**ন করে অঞা **চক্ষে**, অবিরত। প্রস্থন ভূষণ ত্যজে কোন তক্ষর, कान उर्क शतिखके कम मत्नाइतः वाइहर ग अरसम वाश्रमाथ शिक्, ব**ন্ন**ধা^ত উড়ি পড়ি যার গড়াগড়ি। जारत रत विष्ट्रभक्तमा, स्मिथि मर्गा उ**व**, কাঁদিয়া উঠে যে প্রাণ, রঞ্জিতে এ ভব তোরা যে শোভা আকর, পক সুচিকণ नित्रीकर्ण मां खुज़ात काकाद नत्रम ? ় প্রকৃতি সতীর তোর। তুষিবারে প্রাণ, (बबू वामाकश (यद्य, अनि ভোর গান निहिर्द (माहिल किवा १ मानवनिकत, সংসার স্থালায় যবে , দেহ জরজর তোর হুমোছন यत्र कतित्रा अवन, কুড়ায় সন্তও প্রাণ ওরে পাথিগণ। आंशां मति मंत्रि अटन अटन दा निक्ष, वृक्षीख श्वनकात रात्र श्रृष्टेख्य द्रष्ट्रि भूमात भौज इश्व कृष्टि कारत ! किन्द्र (कांग्रल थान कैं।एन एवं क्रूकोर्ट्स

বর্নতে তোদের হংখ বর্নিব কেমনে ? आंश्रिनीत शुंहि (मृत्र ' अ मम वर्गाम। ছুটিছে বারিদক্ল গগন আকণে জাঁধারিয়া এ সংসার জান হয় মনে জুলদ তুরজে শত করি আরৌছণ, প্ৰন ধাইছে রভে নাশিতে ভুবন। नीत्रम निर्दाय मिनि शवन रहात, ৰুদ্ধ করে চ্ছাতিপথ শুনে সাধা করি। পড়িছে অশনি বাণ করি বোরনাদ, উত্ত उक्त जार्ड विषय ध्यान। জ্লিছে শাধীর শির করি ধপ্, ধপ, লাগিছে গিরির গার র**তি সন্**্র कामिट्ड महिल निश कदि वाश्वाश। **जाबित्ह भामभ कून भक्त मज़ मिह**े गिक्टि जनम्जून अस गेरु गेर्डि। বহিছে ভুমুল ঝড় শব্দ গেঁমুগোঁ। পোঁইগাঁ৷ লাগিছে বাহু কোটুৰে শব্দ ভোঁ ভোঁ ভোঁ ভোঁ। উঠিছে কলোলফুল গরজি গভীর, ভাঙ্গিছে পুলিমে, করি অবণ বধির। মিশিয়া এ সৰ শব্কি নাক উদ্বিত, সে শব্দের দিতে শব্দ সম সাধাতীত। • बांगि अंगिक प्राप्ति इतन मंगूरिक, मारन यथीते अद्भुद्धिणना विखाविक निक्षेष्ट गितिश्रहा के क्रांकिक सम. मैं। ज़ाद्य भितिभक्तरेत । मिथिन स्माइन

এই ভয়হয় ঝড়, কিন্তু শহাশূর, रगारन मानन कक् नहिनादा कुन्। काठ-मीशाधादाः मीश-मिश्रात कृत्त (क् श्रीक श्रीकन मन। বহিলে বাহিনে ঝড় মূর্ত্তি ভয়ত্বর, **इक्षम** कि इश मीथ उम जाउरत। श्रुधीत मह नाफेटन मील-निशा मन, সচঞ্চল করিবারে ত্তাশ পান অক্ষ সম্পূৰ্ণ জেনো, কেনবা সন্থিয় · इहेरव स्माइन-मन शांठक • छ्योत। बन्धि खीरण पूर्ति कति वित्नाकन, करह क्यां भैन जरन ऋषीत स्माहन। " अरक त्रकारकत जर ध्येमी च नमन, . " अरे य पाड्मि उठ गंडीर मर्गन। " अरे य जिमात्र मिथ मत्न इतन जान, " তোমার ছদরে কোধ নাহি পার স্থান। " গান্তীৰ্য আংনি আমি ছিলা বসি মুখে, " জটন অচন ভাব ধরিছিল। স্থা " সে মুর্জি পরিবর্তিত কেন হলে: তেন গ " छेबाज पठन अरद माखिएन इंद रहन ! " अगांख पूर्डिविनिके नीत निक्के नड़, ' " নেহারি বিশাস কেবা করে অভংপর γ " जशका (इ शिक्तांनिधि नाहि मात्र छव, . " চলিতেছে এই ভাবে এ বিশাল ভব। " जत्रकत मृद्धि कियां (इति केंद्रिश क्षांग, " केंक्ट्रेंट्ड डिएझान सून शर्क उ नमान।

" वक्षे वक्षे छेत्रि वक्षे शहा । " লুফি করে সিশ্বতীরে কঁরিছে প্রহাম ৷ "সহল সহত্র হেন উর্থি ভরত্বর, " ভান্ধিছে ভীষণ গর্জি বেলার উপর। " উঃ ৷ উঃ ৷ কি ভীষণ শব্দ তাহে সমূৰ্ষিত " এ শব मामुभा मिट नव माधाजिछ। " श्राह (य जन कृतन कह्नान-उपन " এ ভাব বুঝিতে দক্ষ হয়ু সেই জন।" निगीथनी नगांगंड, करम उत्मातांनि, বিস্তারিল নিজ রাজ্য গান্তীর্য প্রকাশি। একে অন্ধকার নিশি তাছে ঘনাবলী आंदित नृशीकित नमार्थ मकि ; भरन भरन कान शंका यन उत्मादानि পুরিল নিজ উদরে ত্রিসংসার আসি। তাহাতে তুমুল ঝড় বহিছে সহনে, प्रतन्त्र भारतः जाग्र हिर्छ वत्रवर्ग বহিছে সলিগ্লোত; একাকী মোছন विजिशा गिति-गंक्तदि मंद्राम्ना मन। हिश्ख छन्छ-विवर्किंड आहिम म हम, र्भाइन-मानम তবে किर्इड् इंकन হইবে, পাঠকবর্গ! ভূত-প্রেত-ভন্ন, विष्ठिक क्षित्राहत स्मृह्म - इन्य অক্ষম সম্পূৰ্ণ জেনো; জানালোক যথা সমুজ্জ্বল করি খন, বিভীবিকা তথা কি করিতে পারে বল ? মোছন স্থীর, বিজনে প্রমুখী সঙ্গে প্রকৃতির।

প্রকৃতি সতীর রূপ নিরীকণ করি. হৰ্দান্ত পৰন ভরত্বর ভাব ধরি করিল বছল চেফ্রী ছরিতে সভীর गठीक ज़बन, क्रा जीवतम अधित। यटन इताणज किंकु कार्तेल पर्णन, পতিত্ৰতঃ যুবতীর সতীয় ধংসন অতীৰ ছুন্ত কাৰ্য্য, তাই ক্ৰোধভৱে, প্রকৃতির চাক শোভা নিল ছট হ'রে। লও ভও করি দিল শোভা অমুপম, मन्धर्मत्म मनाकात्म यञ्जना विषय। लम्भाटित प्रसाइति इत्ल श्रेश्वलि इ. मिथिनिक ब्लानभूना इत्र पृष्ठिछ। কোন কামিনীর কাছে হইলে লজিত, অপর রমণী কাছে বাসনা বাঞিত প্রকাশিতে দজাখুনা। প্রকৃতি স্তীব সঙ্গ-সহবাস-লিপ্যা নিজাতে অস্থির इरेला भरन: निगीधनी ममागंड হেরি, হেনকালে দম্মা যন্ত্রণা-বিগত हरेल भागम जातः जागास अधीव रहेत्रा इकांख अवर्गास बखनीत পরশি নে কোমলান্দ হ'ল অচেতন अटक (बाहा निर्मेशिनी जार अड**व**न। দোঁছাকার ভীমষ্তি কে করে বর্ণন ? **ठिलारवर्ग न्यम्**रीन 'इडेन इसन। म्भागरीय उक्रमन विश्व म्भामहीय, প্রকৃতি রুমণী-মুখ ছইল মলিন।

करम ভিরোহিত ঘন, करम ভারাদল वाहितिन अरक अरक ; गर्भनम् अन. ক্রমে হলো অপোভিত, অর্চ চল্লোদর रत्ना थाही नित्क जारा, किया लाजामत्र। তমোরাশি তিরোহিত, কৌমুদী বিমল, আবির্ভ এভুবনে: আবরি স্কল তৰু, ৰতা ভগ্নকায়; জ্ঞান ছলে। মনে বিশ্বপাতা ধিছাহ্নদি ছঃধসন্দর্শনে প্রকৃতির কালিম। বদন দুর করি, **उ**खवाम मडी-व्यक्त यर् करह धति श्रंथ भवारेना; कुछल काक्ष्मकून ওকতারা নাম (যাহাছেরি মনাকুল) यज्ञत चालिना, ननाहे नाजामधान -রত্বদিধি তারাকারে, যে জ্যোতি উজ্জ্বলে गगन श्रांचन किया, श्रूप माजाहेला। यना यम बरमार ज्यान डेमारेना। य यामार जाजन अकृति नमनी প্রনের প্রশ্নে ত্যজিয়া অমনি 🔩 দূর করি দিয়াছিল; জ্যানকী যেমন वांवरणव भव्रभरम , यस्त्रक ज्यन मर्या छिन मरनाइः १४ पूर्व निक्लिन। হেরি নৰ রূপ ছবি মোছন ছাসিল শ্পার আনন্দে, তার হলো চিন্তা দুর, নির্বার পতন শব্দ অতীব দলুর, छनि सम्जि इंड्राइन ; श्रव्हिज स्वस्त्री, थिश शूख मार्नात, रान, जारा मति।

निवृश कद्रग छद्र तम मेंधूद धनि क्रिएंड नागिन गंडी, यमिंड म स्ती निष्यं इः तथ मधीकृठां, यमन अन्नी আপনি যন্ত্ৰণা সহি করে স্থত-মণি লইয়া তোৰে তাহারে। মোহন-জাখিতে নিম্রা উপস্থিত হলো দেখিতে দেখিতে। **अकी डेलनश्रंट दाशि निक भित्र** শয়ন করিল ভূখে মোহন সুধীর। जाँवि गृट्ह निजारमरी इदा अर्दानन बाद ज्ञा शक प्रती अपनि यूमिन। স্নিক্রা উদ্দেশ-নিশি কোথা বল হয় গ म तकनी अक्षरमे मरमात्राका नश জোরে অধিকার করি; স্থীর মোহন যেমনি মুদিল জাঁখি অমনি অপন নেহারিল ভয়ক্তর-মুত্ততি ভীষণ নির্ধিল এক, তার মুদিত লোচন। অন্ন তালতক্সম দীর্ঘাকার, यसक धका ७ जान। पाछि कमाराह। भिरताशित मध्यान मीप अधाकार, बर्डेड्रिक मारिक यन भिक्छ मार्थाद । গ্ৰাকৰ সম ভাগা আন্তির গঠন, ললাট বিশাল তার ভীরণ-দর্শন। नांत्रिकां है। इस इस श्रीक्रमंत्र নাসায়ক্ত হটা তার কামাত গহার। চকু ছটা গোলাকার যেমন তপন, क्रमें के की मार्ग पृतिहरू नयन।

দত্তভা খেতিমুলা সম জ্ঞান হয়, নিরীক্ষণে রক্ত শুষ্ক, কম্পিত হৃদয় ! ় रख प्रवे पाछ। पाछ। इहर कमनी, ন।ড়ি ভুঁড়ি তুলে তার বদনে কেবলি। পেট মোটা দীহাকার বাযুভরা পাল, পদ ছটা ভত্তপ্রায় অতীব ভয়াল। ভীৰণ দশ্ৰে ৱাখি ভীষণ দশ্ৰ কডমডি শকে করি সম্ভাগি মেছন रुविन मीत्रमनारम-- अट्टा दि साधन, বাজি নির্ধিব তোর সাহ্য কেমন। চির অবহেলা ভুই করিম অংম্যের, ভালিব দশন এক চাপ্তাড় প্রহারে वाकि द्रा निर्दर्शिश, छाई . माग्रनमितन पुराहेंन जाइ जाइ: माथा अरु किल প্রারণ করিবে তোর উদর ভিভরে अमनि मातिर मुखि मखरा छे १८६। " এত বলি ভীষণ-শারীরী ধরি মুক্তি, ধাইল মোহন প্রতি করি মহা কঠি। निक्छे विशेष प्रथि (याइन सुधीत, रोधित्मक পরিকর, পলক आँधिর न। अफ़िट्फ, कहि स्वादमर्थ महाविम,-" ওরে ভীমকায় তোর ক্রোধ জনমিল কি কারণ ? নিরখিনি কিবা অপরাধ মোর বল্? তাই তোর ছইয়াছে য়াধ मम मदन वाक करा ; क्रिज्निदर मदन, তোৰ ভীম অন্ধ ভয় দেখাবে মোছনে।

कत्मवत्र जीमगम (मचि वट्डे उंतर, কভু না ভোহার সমে বিস্থাদ মেবৈ मखन दम् ति पूछे; किवा खीमकाय, मिथ তোর ছরাশর কৈন রে আমায় ক্ষিতে শক্ষিত বল ? দেখু তৈলপায়ী यमि वृह्द-काम इम धुनिगामी कृत काठकीठे काट्य, यात्र श्रष्टि श्रीप् যেমন রে মলিমুচ ফবে খেরি ছুরি लास यात्र किंकिमाद्व : वलि आमि जारे, তোর ভীমঅঙ্গ দেখি কড় না ভরাই।" এত বলি মোহন ধাইল তার প্রতি, লয়ে ধর অসি যেন সচকিত-মতি। মোহনে অগ্রাগ দেখি দে ভীষণকায়. চারি পা পিছন হাটি সম্ভাষিণ ভাগ। "প্রচুর প্রশংসা তোর, করি রে মোছন, অভুন সাহস তরে, শোন দিয়। মন छादि इके कथा दलि, इन्हांस जामांव, অবিহিত চিতে শোন মম মহিমার वाक्यावनी:--बन्दांख्या दाका कबि आमि, अभीम विख्यपूर्ण रक्ष्युमि-यामी। এই যে विभाग हाजा, वन, छेशनन निकृष मरमातक्षम, जाँकि आकर्षन कर्त्र विमानन कड़ि, भक्ति आमात्र, এ বিশাল বজনুমি মদ অধিকার। वक्रवानिग्रंग-हिक-निश्हांम्रानार्थित, করি আরোহণ আমি নিজ রাজা করি

निकणेरक निकाराम, रखरना रह भारन, অধিকার কি প্রকারে করি তব মন 🎤 তে কারণে মদ আসা: তোহার সাহস, कर्ति नितीका। अस अनुस दित्रम् হই গাছে সাতিশয়, করি ভয় মনে. তৰ সম সহত্ৰটা জ্বো বীর জ্বে यनि (त कडु अस्तर्भ, भम ताकाडाह . চাজিয়া পলাতে হবে কি সক্ষেত্ৰ ভার। বিজ্ঞানে খেয়েছি ভৌবে একাকী মোখন মাজি রে নিশ্চয় তোরে ববিব জীবন।" বলি তেন ভীনকায় বক্তমুন্ট্ ধরি, करमा ज्यामत श्रीमः महि माह करिहा শক্ষিত ভ্ৰায় ছেলে পেমিন ভ নয়, দে ছ': ফটর কথা শুনি ক্রন **অভি**শয় करेश, धाक्स वली धाक्ल जर्मा, গছজি গ্রহন যেন ভেক-হারা ফলি। कदिन थाहात भाग थन जानि कर्न. বিদল প্রহার যথা ছায়ার উপরে। করিল আযাত মেই, কোণা ভীম অক্স, कीम जल जलमूं अरमन जनका প্রহার করিল অসি যেমন মোছন, নিদ্ৰা প্ৰাইণ তাজি মোহনলোচন। কোথা দেই ভীমকার যুক্ত আড়ম্বর, ঘোহনের মাথা এক শিলার উপর। शिठक महमग्र! (कवा जीमकात्र. कानिवादत क्षृह्म यञ्जन। (जामात्र

मिट्डिइ कड्डे दुवि ; अन निक्रा मन, जीवन-भंदीदी अर्थ हम काम अनः। जानका देदाँव नाग इ शाठक जन, শত শত মান্তের কচ্চের কারণ। मानत्वत यठ कके अरे इके मूल অন্ধকারে নিজ শব্দে আতকে ব্যাস্থল। पानकात्र वनीष्ट्र कर्य कड नरत. ছায়া দেহি মনে মনে ভূত জ্ঞান করে। কেছ লা শহায় ভরি বিদেশ গমন मत्न करत्र ठिक यन कूछिल अमन। কেছ আশিশার করে হইরা পতন শমন ভবন ভাবে পোত-আরোহণ ! हेक्ट्रिड डेझडि-१४४ कट क्स इय, কে তাহা বর্ণিতে পারে বল স্থীচয়। 'वानिका रमि नक्यी' स्थामाथा कथा, মর্ম জ্ঞান হয় কার শকা রহে যথা: माइमी मामरगण अक टांद्र महत्र, লক্ষ বার মরে জেনো মত ভীক নরে। आनदारे अ कर्मेत भूनीपृत्र (रपु, আশন্ধাই সুরু ভাঙে ভরতির সেডু। जामहारे मार्नेटवर मन्तर नमान, वानका कीवरस प्रका मत्न करित लाम। **উठ छेठ बङ्गळ**न ४४ पिना-अनि, दान दान जानदार निर्द्धारम्हण क्रि। कें बल्बन कह (मज-डेबीलन, ठावि मिथ उर मना शुनिता माहन।

रत कहि श:शक्कात मना शनीनऊ, কাছারে বা করে। আমি মনোত্রংথ যত। কত দেশে কত জাতি এখাৰ্যা ভঞ্জিছে জয়কেত্র যশ-ভবে সমীরে উভিছে। निक् अल म्यूड्यून - ज्ञानद्रवि रहत, উঠি জন্মধনি সদ। প্রতিধনি করে। হেখার মোহন যেই মেলিল লোচন নির্থিল কিয়দারে মর একজন मक्षादिनोमील कर्त्र वासित्क समुद्रण পরিল গিড়িগছবর সে দীপ-মহথে। अर्फ जनपूना छान और अमिनी, जीयन बर्षिका करन नामित्ह (वैभिने । ादश उत्रक्षत्र रूप हेतिका अन्दर्भ মোহনে জাথাত কবি কেলিল সহরে। निमाख्य भी श-शास्त्र करि निदीकत. ভীষণ-শরীরী গায়া ভাবিল মেছেন। মোছন ভিত্তিল মনে বুঝি ভীমকায়, माहा धति आहमांकदत आमित् उंधात्र। क्मश्कातचूना इस् यः क्रवात मन তাঁর হ্লে হেন ভাব রহে কডকণ? পরক্ষণে চিন্তিলেক মোহন স্থীর, পाইয়া স্থোগ नशु अ निभि गडीत, হ্রিয়া কাহার ধন আসিছে গ্রুবরে, ুলুকাতে **লুগি**ত রত্ন **সভ**য় অ**ন্তরে।** সালো অথানর ক্রমে, মোছন তথন কাঁধি পরিকর করে করিল

निक पछि, निर्धन्न जन्दन गठकिए সে আলোক উপন্থিত দেখিতে। नटर छेरा जीमकात, मन्त्रा छेरा नह, নির্থিয়া পুৰ্জনে উভরে উভয়, रता উल्लामिङ यन, भार्रक जयन, জিজাসিতে পার উহা হয় কোন জন। ভূতা রামধন এই প্রভূপরায়ণ, নিজ প্রভু অম্বেষিছে সে নিশি ভীষণ। ৰাত্যাসমুপিত ভূতা করি বিলোকন, নিজ প্রভুজনা হয়ে আকুলিত মন कतिम बद्ध (प्रके। शक्ति आमिर्ड, नांदि मिन भेशासा म आना भूदिए। इएकत तुर्थ भाषा जाकि शक् करत, ভাদিন তাহার বাত্ বাধিলা অন্তরে। कारक कारक अञागं इहेंगा वागाय. নিজ প্রভুজনা যেন হিলা মৃতপ্রায়। गजीत तकमीकारम रम वाजा शामिल, अकुपदार्ग कृष्ठा अमनि छेठिम! यात्माक नहेशा करत खानि उक खा. कर्मे मुख्ये लंब हिल स्थात इः स्थ मधा। ভূতা হেরি নিজ প্রভু, প্রভু ভূতো ছেরি, উথলিয়া উঠিল রে হ্রপ্রাগরের स्वभीत तम तिकात ; तम निर्मिश की है, यानन कतिन मीट्य कपि किति दिर करणार्थकथरन माना, क्रांम निमा (भव. डामभम (भा**ष्ट्र**मन मृत **म्रामा (क्रमा**)

হে পাঠক शक्तमञ्ज कत वित्नाकन नारी अक कतिरवक कृति जाकर्ता। প্ৰন্যপ্ৰে ছিলা इक्नी গৰ্ভিনী, अगर क्रिन क्या नग्रनश्किती। ननवार्ग ऋदक्षित वर्षे किमनव. নবরাগযুক্ত আধ ফুল কুবলর। নলরাগে স্থরঞ্জিত নবদুর্শ্বচিয়, यद्यान नमागतम सन्दर्शमय। क्रकन (योजना नाही भून नवहारग, নবরাগ বিরাজিত নবধানা আগে। नवदांशमत्र किन्तु श नाही (यमन, নয়নে ত নিরীকণ না করি তেমন। नाम এর উষাসতী সহদয় জন, ন্তে হয় দেই উষা নিত্য বিলোকন कदृष्ट याद्याद्व किन्तु, यनि ७ (म धरी) নবর্গিময় ছের দেধছ যথনি। (क (ना देश) (मदे उँया ज या (य ना तीत. व्यवन गणिकावीर्या गर्छ ब्रह्मनीव। उत्भामग्र^{क्र}निनीथिनी जाहर श्र**ंक**न, মিলনে কম্পিত ধরা ত্রস্ত জীবগণ। নিৰ্ম্যুল গগৰ পরে চাঁক ত্রশোভন, निमाट डेमिंड डेवा नग्ननत्वन। মল দেখি স**হদ**য় এ উষা কেমন । এ হেন মনেশহারিণী রমণীরতন नवतार्ग भूर्न खरव म्हा कथन? छेमग्र इरेटव छेबामञी कञ्चन.

गृहि करत कान कक वन चार्शक्त। कत्त्र श्राठिकनं कीरन सम श्राठीकन। जाती कवि धानीनिक् अता छेशानजी, আলোকে উজ্জ্ব ধরা জীবে ফুর মতি। কিবা কমনীয় কান্তি কছি কছিছুর, লজায় ন। বাহিরাত সেই সে চতুর ৰক্ষরাজী কর ছতে গাকে লুকারিত, পাছে উষাসভী রূপে হয় (গা नाङ्गिछ। করি বিলোকন জীবে উবা আগমন इहेम उथनि जाता धरमारम भगन। माधी'পढ़ পाधीगंग পनि इष्टमन. উযাসতী জাগমন করিছে খোষণ। ফাছে: কি মধুর অর অবণরঞ্জন, এবণে না করে তৃপ্ত বল কার মন! বাত্যারটি ভায়ে করি ঘাঘিনী যাপন. लिन बार्रे लिए मधु दर्निष्ट असन। क्लान विरुद्धम वीम माथात छेपात. চকু দিয়া পুক্তভক্ত পরিক্তর করে। दृष्ठिवद्रवर्ग हिमा मिक श्रृष्ट्रभल, নিযুক্ত বিযুক্ত ভরে সে হাটির জল অংখ ধরি পুষ্ক ও হ রবির কিরণে, শুকাইছে পুক্ঞলি আফুলিত মনে। रकृत निकृष रन थ छ छन राज, ছিলভিল ছইয়া গো লোচনযুহালে. মবাক্ত মণারিমিত দিতেছে যন্ত্রণা: করি কলরৰ পাধী করিছে মন্ত্রণা

শাখার পানিয়া বেন ভগ্নবাদ তরে, করিবে নিশাণ পুনঃ মে নীড় কি করে। कर्म दिनगीं अिहीमितक ममूमिन, নর-মুখ-সিরু-নীর উথলি উঠিল। शाउक्षन शहाकरण मनःशम योत्र, ছিলা আকুঞ্চিত হয়ে প্রভাকর চার म्याहा महीर् पन पिना कृषे विशेष মরসমূহের হলে। বিক্রেরিড হিয়া। जनदर्ग जनस्म करन श्रीहर, भिनश नहेश मृत्य क्लिंग यात्रिनिक। পুংশীজন ছংখনন ভল পুছোপরি, न। ভায়ে দেখিছে তার গৃহথানি মরি। একহানি যার সাবে প্রভেক্তন বলে, ইংপাটিত হয়ে পড়ি রছে ভূমিচলে। मेडाबाद गांध ४० (एरलभूमि छोर জমনীর গ্লা ধরি কবে হাছাকার: কোন স্থানে কোন জন ভগ্নগৃহ ভার উল্লাক্ত কবিতে গৃহ পুনঃ সংস্থার। বল্পংকার তাবে কেছ কাটে শাখী, সারি সারি রহে পড়ি নাছি পথ রাখি। क्रमभी नैर्ानिष्ठ (काशा शुक्कदङ जात्र, जात्मिन विनर्त्री तम तथा तम योमिनी शहर। লৈরে হানি কর কাৰু কাদিছে জননী, তরীমানে বঞ্চিত হইয়া স্বতম্প। ঁ বামেতরে কপোল রাধিয়া কোন ধনী, মতীৰ চিন্তিত চিজ সক্ৰৰা তৰণী

মগন থকার নীরে হইরাছে বলি,
নাহি জন্য কথা মুখে ভাবিছে কেবলি।
মোহন ও রামধন আনি উপছিত,
হইল বাষায় লোঁছে মন চমকিত।
বাসা-গৃহ ,উৎপাটিত আছে ধরাতল,
গৃহোপরি পড়িয়াছে পাদপ সকল।
কিছুদিন সে প্রদেশ করিরা ভ্রমণ,
জন্ত দেশ ভ্রমিবারে উৎস্কুক মোহন।

পঞ্ম সর্গা

"I e gus of joy, the balm of so, .The soul o' life, the heaven below, is rapture giving woman."

সোম্মূর্তি নর কোখা? যাহার নয়নে, পড়িছিল মনোরমা মোহিনী ছজনে। হে পাঠক সহৃদয় ভবদীয় মন क्षिमल क्षम मम्, ना जानि कमन করি তব সরিধানে সে কথা কহিব-কেমনে বা ভার দশা দিখিয়া বর্নিব। প্রকৃতি বিচিত্র শোভা গোধুলি সময়, निश्रीकंग एट्ड इट्ड छेरकूर-क्रमय গমন করিতেছিল তটে সরসীর, (महे मोगामूर्डिनद अकून मंदीद। ন্দভাবের শোভা দেখা দূরে গোল তার, মোছিনী দামিনী ছেরি সংসার জাঁধার। माहिनी मिन्नर्ग देखि स स्मात नहा नरेग्रा क्लिन अर्क अक्कान स्टा তিমিত নয়নমণি খুনাজাৰআয়, অন্তর বিশীন তার মোহিনী চিন্তায়। ্বক্কণ সংজ্ঞাপুন্য পড়িয়া প্যায়, আছিল সেজন জেনো যেন মুতপ্ৰায় ৷ शरत ज्ञान **र्रे**म करक कथा मन जरन बाक्न

ं काथा जामि १ कि जानम। हिथा क जानम, , "(कान् नदांभटम गोटत दमभटन विश्वतः। ' আহা কি অপুর্বক্রপ কি কাভি ুষ্ণুর, " नेम्पर्याय राज्य (जीमार्या क्रमिय्रानि पृत्र। "বরণ চম্পক পুষ্পা বরণ জিনিয়া " आष्ट्रिक माधुर्ग मित्र मटनाटमा प्रनिज्ञा । ''वत्रन छेड्ड्रन भीत्र, स्माह कड्डन, "জিনিয়া বরণ শোতে শিরোকছদল। " काम हिक्शिता हुन गंडेन दत्रात, " जनिद्यंगी ल्यार्ड राम (यंड नवामत्म। "কি চাৰু যুগল ভুৰ কাল চিকণির', " শোভাস্পদ হরে রহে শুভি পরশিরা। " কি স্থন্দর সাঁধি হুটী ভার নীচে শোভে, " उद जारबनेग बिहा मि जुनेना लाएं। " চাউनिष्ठी कि खुंबत, চाहिन यथन, " मम जरम इरमा त्वन छ्था वित्रयग। " वह तमनीत पृष्टि . मिनिजाहि जामि. " अमन्त्री (डा कार माहि इस क्षति-गामी। ' क्विंग हिक्न मनि करम छन छन, " रेक्टा बन जना दंदीन तम जाना गुगन। " औषि इंडी (बाउनिसु मनि ति दिल्लान, " সে ভরজোপরি পড়ি লাগে গওগোল। " जुड़ाक ज्यद्रशामि छ्पेक विद्यित।, "জনুগ শোভিছে সহ ইপার নাসিক।। " कर्ण मक्तरीन मर्ग (यन काम चत्र,

" व्यवद-विश्विका (माटक व्यव्भव समग्र)

" পশিতেছৈ যেন তার হচাক বিহল 🐍 🕆 "জযুগ বিভূত পাখা নাদা তার অন। " নাদিকাণ্ডাভাগ চঞ্ নাদারন্ত্র জাঁথি, " তাই নাসা নির্ধিয়া মনে গণি পাথী। ' একান্ত ৰামনা মনে হয়ে বায়ুচর, " স্থাৰ ভূঞ্জি গিয়া তার বিশ্বিকা অধর। " किया इरत मभीत्र मिन मभीतरण, " দার্থক করি জীবন দে মুখচুষনে। " কিম্বা অর্থকার কাছে করিয়া গঘন, " इहेर्ग जानत्म अत जन-जाजदर्ग। " অরে রে রতন হার! কি কপাল তোর: " আছিল রে হদরে শুয়ে হরে মুখে ভোর। " ওরে রে কাঞ্চি চিকণ কি প্রম্যেদ তোর, " मिथि द्वर्थ जात्र समि ब्राट डेर्फ (मात्र) " अतः तः मृश्रंत श्रंती क्यू क्यू यत्त्र, "বোষণা করিছ সুধ প্রকৃত্ন জন্তরে ? " কণ্ঠহার, কাঞ্চি, আর বৃপুর ভূষণ, " সমধিক স্থী তোৱা বল্ কোন জন?" कर्श्या मर्ग कति कहिट्ह उथन, " अ अम जिल्हामा कृत नम कि कात्र। 🎙 श्वनदत्रत तांका श्रदत काँकि श्रमि'शति, कामिनी कमनकिन कमनीत कति।" काकि क्रम " अउ नम्र केमा । अस्मार, रूत (क्थ गय क्षिणा किया **हम**श्कात।" पूर्व मिठान बाजि कहिट्ड उपस् ''কে শোনেরে তৌর মুদ্ গব্বিত বছৰ্ 🔑

र्हितिक क्रिकेट करक स्थी जान करत, नहीं कर्श्यात काकि अतमिक नाता। त्य कामिनी अम्भाद्धः नाष्ट्रि (मक् स्थान, वियकुष्ठ भेशमूथ कति, भोहा काम।" धरत रत नृश्त रखांत कथा तासि मिरत, তোরি সহচর কর থাকি পদে খিরে। ' কি কহিতে কিবা কহি হইত্ন পাগল. करव: (ब्र मिश्रिव श्रीतः भन जारेत यम। **এट्टिन तम्बीत्रक मश्ट्याटम कीयन.** क्रीवन बिनदा गिनि विद्वारिंग भद्रन। वैंकि यमि अक मिन मटलागि देशादा. **कृ**क्षित स्मीत स्थ अमात मः मारत। " निजा नाहि हरमा जात हिस्सि। कामिनी, इ हे कहे नरकाशिक जाका निनिधिनी। निजा मिंडवांत उत्त पुमित्म नजन, মোহিনীর প্রতিকৃতি করে নিরীকণ। थना (त अनम ভোরে नेज धनायान, তোর ভরে এ ভূবনে যত পরমান। यत तम अभिकेशात इस अ प्राम, व्यक्तिःश्म ভात्रि उद्भ गनि मन् मन्। ভোর क्लबाम् याद्य करत्रदह छारात्र, जाबाब अरबाम किरत क्ष्रू जारह जात कंड कूलकावियोग कव नर्समान, क्छ वृद्धकृत गर्म तिर ध्यवकाम। कुछ 'श्रक्रांबाद कत्र, वाष्ट्रक क्षांबाहर कड इक छन करते नावि शात बान ।

পাপ পিশাচের যে রে এত প্রাক্তম, पूरे जार पून राधू नाहि जात खम। कि मानी कि छानी तम इडेक ना त्य छन, তোর করে কভু কার নাহিক মোচন। किया अ सम्बद्ध नत ! किथा वा निवाम ? জানিবার তরে সুধী অবশ্র প্রয়াস হইয়াছে তব মনে ? তব কুভূহল তৃপ্ত করা মম বাঞ্চা জানহ কেবল। वाम अद भ्नाश्त नामछी कीवन, গণনীয় বাক্তি ইনি অর্থ জগণন। চিন্তাপুর পলিআম নিরীকণ তরে, রহিছেন বাস করি সে পল্লীভিউরে। এমন সময় কাল হইল মোহিনী সুথ-সরোবর তার শুকালে। ভামিনী। পরদিন প্রভাষেতে করি গাজোখান, जीवन जाशन मधी कदिन जास्तान। বসন্ত নামেতে তার প্রিয় নহচর, আহ্বানিবা মাত্র এলো প্রভুর গোচর। कहिल जीवन जात " अन हर बमस, " গত সন্ধাকাল হ'তে মম প্রাণ অন্ত। " কছিতে পার ক্লি সখা কোন্স কামিনী, " नित्रथिष्ट् महत्रावद्य जिनि मोमामिनी। " जांशत जनमाधूती कर्ति नित्रीकन, ः " वाँठिए बाममा नाहे विहरन मिनन। " উহার সংযোগ यक्ति करा महत्रहेन " রাধিব তবেতো এই তালিত জীবন

" नजूर। निकृत मध्य कतिव भीरमः " नाहिक मत्मह जात्र छन (ह वस्त।" रम्ख थाजून कथा छनि भिक्तिने, कीवत्व वृद्धवहत्वं कहिए नागिन। " ঠেকিলাম খোর দায় বারু মহালয়, " नातिङ् পृतिত नाञ्चा त्रि मरकानत्र। " वहम दर्जन-वशु अक मश्याचेन. " করিয়া দিরাছি" তব করছ স্মরণ। " (व कांचिनी कथा এবে कहिছ आमात्र, "তার সঙ্গ সংঘটন অতি বড় দায়। "পতিৰতা সতী সেই পতিপ্ৰায়ণা " अकाल के कार्रातिनी मिर श्रामानना। "পতিজান পতিধানি পতি সে জীবনঃ " পতि जिन्न भन्न नन ना करत मर्गन। "পতি গতি, পতি মুক্তি, পতিই ভূপতি " मन्ति द्वारकादं मन्त्र करत्र तम्हे तम पूर्वी। " अ शिक्या नाष्ट्रियमा उथा नाहि तर, " পতिकथा छनि धनी श्रेक्त समग्र। * · "পত্তিকথা হয় যথা অবণে অন্থির, " পৃতিভিন্ন পরকথা, अवर्ग वर्धता " প্তি পতি গুনঃ পুনঃ করিয়া অবণ, - জীৰ্ন ৰদভে কছে সজুৰ বচন। " পত্তি পতি করি বে ছে হইলে পাগল, " শতিৰতা সভী কেৰা আছে ভূমওল ?ু " নারীঞাতি পাতিবতা গুণে বিভূষিত,

अ अवात अभित्र शांति (सामा यावाहित।

" गिल वर्नि गंगि जोटड कुमन (यः ऋग्र, " नाबीत खरुत रम् एवं काटन ना निकृता। " সত্মী [•] ৰদি করে ভান রমণীমগুল, " मूर्व होता-स्था नमा जलुरत गतन। " य यूवजी निम পতি छनिवास वड़, " তাহার হৃদয় জেনো শঠতায় দড়। " নারীর অন্তর যদি হতো দেখাবার, " হৃদর-দর্পণে তার শত বঁরুষার " দেখাতাম প্রতিকৃতি জীনহু নিশ্বর, " मोडा छ १ चूं ना कि (इ. बङ्कि केंप्र इत्र। "ভূমিখণ্ড দেখি নবতৃণ্-আক্ছাদিত, " गां जीनन था ग्र यथा मन अकूलि उ " जुक्किवादत रम ज्याना: तमनीम छन, "পুৰুষ নির্ধি হয় তেমনি চঞ্চল। " সে যুৰতী পতিব্ৰতা কিমা পরমভা, " জিজাসিনে ওছে স্থা শুন্ছে বার্তা। " म तम्भी कारात कामिनी मादि नन, " অসতী কি সতী সে বে স্থাস্ট সক্ষু " वादित इरेटव शटन, जानक सिक्तन, " पर्यत्र जमाश कार्यः किना महत्त्व ।" নিপুণ গায়কে দিয়া তাল বাল্ফুর यात्र यथा उपनि तत्र धनी-नइडर्जे • धनी-बाका शिह्नगामी किंदा (बारना बना) अञ्चिम यात्रवनि कार्ष्ट करह शिरह कवा। **उपनि नम्स अफ्-वारका निवा मान** कहिन अप्र, कब्देन कडाचित्रा जोता।

कहिर बाबूद्रमा बादा किहू मिंहा नह.

ে এ বিষয়ে দৃঢ় মোর আহতে প্রভায়।

ুঁ "ভবে যে কহিন্ন তার পতিবতা নারী

रक्षण वृक्षियात संग वृक्षि रहेटन आमाति। " अरे आहम् भग वस् आहि अक्सन,

"(म कामिनी-अगकथा जाराज ममन

" আবণ করিয়া কছি পতিব্রতা তার,

" আমি কৰ পতিত্ৰতা এমন : আমায়

" निर्द्भाध मा छाव मत्म वांबू महाभन्न,

" मोक छन्थ्या कि त्म विक्र कर्क् रहा।

" त्यांहन नात्यत्उ अक दूवक खूजन,

"তাছার রমণী এই ইন্থনিভানন।

"হলধর বাড়ুর্বোর হয় পুতাবধু

" आवत कुछ आवर्ग बांत वाकामधु।

"উত্তম সন্ধৃতিশব্ধ হয় এই জ্বন,

"ধাৰ্মিক সুৰিক্ষ জাতি প্ৰিয়দরশন।

"একটা সম্ভান সবে ৰোছন তাছার,

্ ত্ৰীল বিশ্বান বলি সৰ্বতে প্ৰচায়।

" क्रमुरजब अजि (पद कवित्र) थेकान,

् " विरम्भं खेमनं जरत गित्राष्ट्र धनाम।"

्राह्म विरम्प जार्ड कृतिहा अवन, जीवन-जीवन हरना धारमारम वसन। वमरेख कृष्टिम शर्दन वाका स्वधून,

মুখনিতি বড় ভার হয় হয় চতুর ।

" त्यांचन त्रमशी अरे इत्र इत्नाहमात

। प्रत्यावक सामी वरहे भारतरह ममना।

" (माश्रतक गृह सम आहरू भितिनत, " वृद्धिकीशी वर्षे मिर स्वाहिक दश्। "কিন্তু হার পরিহরে এইন রম্ণী, " প্রাণ ধরি প্রবাদেতে আছে দে কৈমনি। " लंबी भड़ा मिबि दूबि इस्त्रह बाडून, " তাজিতে শহিলে পারে সে ধন অতুল। " किया दुवि मम सूर्त्रा छाता ताहे जन, " তাজিকা বিয়াহে হেন রমণী-রতন। "তাহার অবর্তমানে পুর্ণ মনোরখ " করিব নিশ্চয় আমি দেখ ছেন পথ। " ना इंदें जात करे। माइन-कामिनी,-" वेर्षत्र अमाधा कांधा कि व्याट्ट सिनिनी।" কৰি কর অর্থে হর সকলি তোমার, দামৰ্থ্য না হয় অৰ্থ ধৰ্-আৰতার यथार्थ-मजीत बिद्ध मजीकृष्ट्रमन, শতীর সতীত্ব হরে কৈ ক্ষেত্র এমন ? ্প্লন্তক ,উপরুদ্ধিত ভুক্তভিট্টি মণি জীবন থাকিতে তার কে আহি ধরণী रतिए नक्य वन १ किता हेर उम्मि, হরিতে হরহ অতি সাবিতী রমণী। कीवन-बहन अबि बनेखहमात, সভাবি কহিল তার ৰাক্য অধাধার। · "পতিবতা বতী যদি ["]হয় এই নারী, "তবেতো তাহান্তে নফ করিবারে মারি। " সতীর সভীও বৃদ্ধি হরা যার হলে, " मजीत मजीक यनि इता यात्र वटनः

" कगमीन-महिंबाटन इटव कि नवीब, " यमनत्थ सञ्जान्य मिछोत्रेका माधः, " প্রহার ক্রিটেব ক্ষি নিরয় মাঝারে, " সতীরে করিতে জঞ্চী না কছ আমারে।" शामा-बार्ड बाकाइर्व मिन्ना छेड़ारेमा, कीवन वंगरस करण उरव महाविद्या। " তোমায় সুবুজিমান বলি ছিল জান, " निश्चमय कथा अनि अदव उवस्थान। "কে কৰিল ভৰ ছানে নিমন্ত্ৰ-সম্ভোগে ' সতীর সতীত্ত্বারী জীবনবিয়োগে। '' ज्वान इश श्रृंशार्गिट्ड कर्त्रह व्यवग. " বুদ্ধিভ্ৰষ্ট করিবারে কি আছে এমন ? '' পুরাণপ্রসন্ধ-কালে প্রতায় যে করে, " तुबिছारव जिथ मम हिंदू (मरे धरत। " जल्दाब-कीवीरमत कुनावात उत्त, " পুরাণলেমক ফাঁদ এদেশ ভিতরে " পাতিয়াছে জেনো মনে, কুজবুদ্ধি পাখী " পড়ে গিয়া হেন ফাঁদে আছা মনে রাখি। " बरेटन अटमर ४२म काथा जावा तत ? " দেহৰংসে আত্বাত্বিতি শিশুবুদ্ধি কয়। "ৰড় ৰড় চিম্বাদীন স্বিষ্ণু পণিত, " मेचत्रवृत्ति विरातः स्मन्धिकि। " यादात आहरः नृष्ट्र विवान, " যাহার বিশাস আহে অগস্থলে বাস : " তাহারা সভত বিশ্ব ঈশ্ব-চিন্তার, " ঐহিক হুখের তরে যুত্ব নাছি পার।

"বড় কাৰ্যা অনুষ্ঠান হেন লোক কাছে, া আশা করা সম আর মূর্যত। কি আছে ? " " অবনীন গুল ছিত যদি সর্ব নর: '' ইশ্বধেয়ানে লিগু করিত জন্তর " কোখা পাইতাম ভবে সব জনস্থান, "মজার সংসার হতে। অরণ্য সমান। " অধিক বসন্ত আ'র কি কব তোমাকে 🦠 " अग्रनीम शहकाम कथा म श्रामाद्य " শিশুসম কথা জ্ঞান হয় জেনো মনে, " देश्वत थाकित्न कर्रे कडू ७ डूबरन 'নহিত সূজন শুন, জনক কংশন ' পুত্রেরে পীড়িতে এড কোশর্ল স্থাপন " कतिए भारत हि मथा १ एवं मर्गामझ, " সে কি হে কখন দক্ষ জননী-সদয়-'' স্থিত পুত্রবারে নিতে ? ঘেই দয়াময়, " তার হেন কাষা কভু সম্ভব না হয়। " দয়াময় নাহি পারে অন্ধ সৃভিবারে, " मश्माश छन कि (इ शक् करत कारत? "অতএৰ কহি শুন বচন স্থার, " त्रेयटत विथान करत जम्म नृषि धात । " जीवत्य याप्ति कीत्व करण् वृक्षिशीन, " मकात जरमारत मका लूठे रम किन। " (य कार्या नाधितत छ्थ सन्दा छन्त्र, " म कार्या कड़ र मथा निर्देश-सनज्ञ। " य कार्या माधित इस तम कत्रदम शीश? " এমন যে কয় তার সহিত আলাপ "

जीवत्वत कथा अनि वमसक्षीत्र, অপ্রতিত হলে কছে বচন সংগ্র। " আৰি কৈন ওনি বারু তব অনামত, "कगनीरमं मरशासन ५३६ मञ्छ। " পুরাণপ্রসন্দ হলে উঠে ভাব-রস, " সে প্রসঙ্গে আজি কেন এমত বিরস। "কত ভক্তি অহুরাগ প্রকাশ পুরুষ, " সে কাৰ্যো বিস্নাগ আজি শোভা নাহি পায। জীবন তথন কছে মৃত্ন মূল হাসি, নফা মর-রেখা তার প্রকাশিতে আসি। "শুন্তে বগন্ত কৃছি সুসার বচন. ' বোকা ভূলাবার कांम नेपदा পূজন। "नेषरत यनि मा भूकि यठ मूर्यमन, " মোর অপ্যশ পৃষি পৃরিবে ভূতল। " इक्टिं गरमार्व क्रूब मूर्थमल नहा, "তাই হে বসুত্ত রহি সভয়ে সভরে। ''করিবে ভাষারা ভয় ঈশবে নিভাস্ত, " করিবে অভজি যোরে ভাবি বৃদ্ধিভান্ত। " তুবিতে তাদের মন পূঞ্জি হে ঈশ্বরে. " नेवरत छ।विन। क्ष्रु अ मम 'अष्ठरत । " त्रेषटत ककर् छत्र. मक्रः मानव " बकान्त्रुष्टि योजा अम मिन्न कति मन " मानमंशमंग ऋ(थ मा एवि मेश्रतः, " नेषरप्रद्र - कर्म क्रे निहेद करता। " भूमिछ कतिया जाबि यटन विम् शाहन, " ভাবি श्रश्नमंगीत श्रांक वहारन।

'कडायां के केंद्रि यद ध्रांशी वेचरत " বাসারে প্র<mark>ণাম করি জানিছ অন্তরে</mark>। ' বাখাজাতি পুৰুষের ঈশার সমান, '' ধর্ম অর্থ, কাম, মোক্ষ, লক্তি নারী স্থান। " या किছू ज्थमाम्धी जाह् अजूनतन, " (मिरी (म त्रमणी-त्रक् श्वनक श्वनरण। " বসন্ত হে ভূমি অতি বিশ্বাসী আমার, " ব্য়ুভাৰ অনে। জান নাছি মদ আর। " গৃঢ় কথা তাই হে তোমায় বলি আমি, '' इश न। अन्द कथा (यन जनागांभी। " এরমণী मन यांटा क्य मिलन, "উপায় ভাব বসন্ত তাহার এখন।" अवर्ष अभव कथ्। दमस निन्धिः, জীবনে কছে তথন বদন দশ্তি। " ७८गा राजू मर्झानग्र जार्शनि शिक्ड. " তর্ক করা তব সনে না হয় উচিত। " कारलकुक वहन लाज करि अधात्रन, " मार्थक कट्डकू बाबू जाशन जीवन। " য। কছে পণ্ডিত জনে মুর্টের ক্তা নীতি, " মুৰ্থে অন্তৰ্ভূপ করে পণ্ডিত কুরীতি। " जाभनात कथ अंत्र ताथि विद्याभित, । " उन माम उर्न कति किन्। तूकि धितः। "না থাকিলে মমুপুর্বে পরকালভর, ूं भोगामिनी जमनात्री जटन मक्तमत्र "দিতাম মিলন করি কত যে কেমনে " কহিব এখন তাহা নাহি আংগে মনে।

" या হবার হইরাছে চার। নাহি তার, " इन्दा निर्देश धर्टन . इरेन आगारः। " य जाजा कतिरव नांदू कतिव मंन्यत्र, " পরকাল ভয়ে মন মান্স আচ্ছর "कथन निहर्य जात्र कहिल निका, " মানস করিব সিলি নির্ভয় হাদয়।" এত वनि প্রভুষ্টনে सहसा विमास, विमिन वमस खंना मिलन छेशाता। অপরায় সমাগত ছেরিয়া বসন্ত উঠিল ত্বরিত মন যুক্তি করি অন্ত। নাপিতিনী বাস অবেষিতে চলে তুরা, একটা বাদক সজে ভাবি ধরাসরা। वालक बमारख करह किছू मृत शिक्षां, " অই নাপিতিনী বালী দেখুন চাহিয়া।" এত ৰলি ৰসন্তুরে প্রস্থান করিল, নাপিতিনী ভবনে বসন্ত উত্তরিল। "नाशिष्ठिमी मात्रि" विहा क्रित्रन जास्तान, यूनिन गुरेंदर यात नागियाहयान। বাহিরিল নারী এক বয়স আব্দাজ जितिरामत मान नर्थ यात्र नानः माजा। যৌবন-প্রস্থান তার হর্মে বিক্সিত. নবরাগ ধনে সে গো যদিও ৰঞ্চিত তথাপিও মাধুর্যোর কিছু আছে ওঁড়া, चुद्रमा इस (म यथ। इहे(ल ७ दूष्) बारक अधिकात कहि किছू श्रुरभाखन, হেরিয়া বাহারে ভাব কতই নতন



উঠে वर्न भने किटिंग ; 'यथार्थ जिमनि नव इंडार्ट्याम्ब इम् देति . अ ब्रम्की । " भाकागाका वर्ग रेकू छेड्डान श्रामन, म मिन्या कारह काथा भाषित छेज्जन ? বদনমণ্ডল জার করে ঢল ঢল, পুর্বে দৌন্দর্যোর এবে পরিচয় ছল। অপাঞ্চের ভাব তার হায় কি স্থন্দর, ৰণীভূত করে যাহা যুৰক অন্তর। ् अकर्कारल मरनाष्ट्रत इति भरत्राभव, তুলি শির গরিমায় র'তে। নিরন্তর। সভাব বন্ধ কুলান এবে গেছে তার, मिनिंगा स्थारण अस इताई वादात। তাই ভারা নতশিরে হ'য়ে ফ্রিয়মাণ, निज जम वारम एकि वाचित्राटह मान। श्रहन दम्गी वक 'वमस-मन्तुर्थ, দাঁড়াল ভলিমা করি হাদি হাদি মুখে। দাঁড়াল শরীর তার হেন ভঙ্গি করি, मर्गाटकत मेन यान नहेटक हित्र; क्षितिकवश्रत रहित वमछ क्रमात्र, मचावि कहिन जात नहन स्थात। " ওগো নাপিতিৰী মাসী ক্ষম তব সনে, " আছে গুপ্ত কথা কোন কহিব গোপনে। "" অতএব চল বসি তব দরজায়, " গুপ্ত কথা কহী নয় বসিয়া রাস্তায়।" শুনিয়া বসস্তবাক্য নাপিতিনী কয়, " जनाथिनी बाटम आकि डाटमत छमत्र।



" जनाबिनी नाभिजिनी महन कर कथा, " প্রিতের সঙ্গে কঁবা রাখালের যক্ষা। "যার মুখ দেখি আজি উঠিয়াছি প্রাতে. " নিভা তার মুখ আমি দেখিব প্রভাতে। " कि कथा जांदह भी बाबू उप स्मान मत्न, " চৌকি আনি দিই বৈস, কছন গোপনে '' এ পথে কদাচ লোক বাতায়াত করে, '' কছন কি কথা আছে নিঃশঙ্ক অন্তরে। '' এত বলি নাপিতিনী বাটী-অভান্তরে. চলিল চৌকি আনিতে দহাক্ত সংরে। ক্ষেরিকবধুর কেন, হে পাঠক জন, वनारक बगरस बादा ना मतिल मन, जवन द्राक जाति मामक माने, (तिम स्म ज्याक जान हिट्स नर्भ-हाई। मंगवासं नाशिजिनी अर्वागंत्रा घरत, কার সনে কছি কথা যেন মুকুলরে वारित कतिम होकि दाँधिल निकन গৃহদ্বারে, মুখে তার হাসি খল খল। সচকিতে মাপিতিনী আনি চৌকি দিপ, বসিরা বসন্ত তাছে প্লরে সন্তাবিদ। " ওগো মাসি ভন শুন জিনাসি ভোমায়. " (शतकार्व अस कथा माहि (यम यात्र) " মোহন ভৰনে তৰ আছে ৰাতায়াত ? " हिन कि सोइन-मोती कई शो शेष्टा । ' কেমন স্বস্তাৰ ভার বিৰয়িয়া " उर्गा गामि वन वन चनानि जानक। "

কছে সে কেন্দ্ৰিকবধ্ মুচকিয়া ছাদি, मृष्ट्र मधु वारकः वमरख मखायि। " ওগো বারু মহোদয় মোহন-ভবনে, '' সদা করি যাতায়াত জানি পুরজনে। " গোহন-রমণী সহ জাতে পরিচয়, "কি গুণ তাহার কব ওলো মহাশয়। " যেগুণে দক্ষের গৃছে প্রতিনিন্দাতরে, '' তাজিল সতী গো দেহ निर्देश अस्टर्सः " যে গুণে জানকী নিজ প্ৰতিভক্তি তৰে; ৺পতিসভে বনবাসে গোলা হ্রান্তরে: ' যে গুণে লক্ষীর এত ভাবে সমাদর, াবেই গুলে সরস্বতী পুডেল সর্বানর , · (म मर्स्वत थेन जारह दरह डेक्नियः, ' দে গুণ বর্দিব আমি কেমন করিয়া। " (य श्वरण दमनी काठि मानददद शीहा, " (मरे छ: १ विভृषिता अरे(गा सूधीता, " (य छर्ग क्रमगी इश नत-कर्श्वक्रांत, .. " সেই গুণে সমুজ্জুল অন্তর ইছার। " বাগানে পুৰুষ জাতি যক্ত নানী-গুণ, ্"বসি কেছ যদি তায় করে দক্ষ গুণ, "তবুও ভাছাত গণ নাছয় বর্ণ, " আদি নাপিতিনী তাহা বৰ্ষি কেমন। " कूनवाना शौशी नाती कथा मूर्य उर, " मतीत मिरुत अनि आंत्र कियां कर।" नाणिजिनी-कथा छनि वमस् वनस् रामा ज्ञाम-इविटंडरके क्रूम विममा

क दिना वम्रान वर्षक् करके। प्रान मूर्य, শিশু-জাসা হয় যথা পেলে তার তুক। চালাকি ঢাকন দিয়া বদনে তাছার, কথা অবশেষে ৰসম্ভ কুমার। " কহিছ তুমি যা তাহা পারে সত্য হ'তে, " পড়েছি বিণাকে বড় কছিব কিমতে। " आमारमंत्र अरु बांबू हिति सा सामिनी. " পাগলের প্রায় ভাবি দিবস মামিনী। " यनि न। जुर्दात मत्न इस मचिनन, " निक्तत्र विश्वित वातू . यार्थन कीवन। ৈ " অতএৰ ওগো মাসি ইছার উপায়, " করিতে হউবে তব কহিছি তোমায়।" अबि नाशिजिनी-वर्ष मिल कार्ण शंख, বসম্ভে সম্ভাষি কছে তাছার পশ্চাৎ। " ওগো় বারু মহাশয় আর বোলো নাই, " जामि म कमन भट्य काटनन भागीहै। " বয়স হলে। যে এত বলুকু দেখে কেছ, ু" আমার চরিত্রে কাক আছেগো সন্দেহ। " অনাধিনী নাপিতিনী থাকি একাকিনী, " छमत्र भूति भा थांछि निवम यामिनी। " थानतीत (थामुक्क मम क्य नज, " আপুনি বলিয়া তাই রকা মহাশয়।" কৰি কর ভাল ভাল খোল দেখি দোর, ছাতে সাল বলে চোর "নহি আমি ছোর।" वंगल दुविद्या मर्ग होका- मुहाजना, मिन नाशिजिनी-कृत्व मर्क्टमायकृता।

(इति दोशावंस-मूच नांशिविनी मन. श्राम् अवीज्ञ ननी जेशत (यमनं। ना इइत् 'किन खेव नांशिजिनी-मन, গলাতে মানব মন কি আছে এমন ! সুধীমন ত্রব করে পূর্ণ হুধাকর, ञ्चनीयन ज्ञव करत भ्रष्ट् मशुरवद, किन्तु (दीशाधक-पूर्व मिठीन (यमन. कि अवा शाह जुवान विदेश अमन ? যে পামরে কোন জব্য জব নাহি করে, मुक्तां क्षू क्षू करत अरदा भर करता किर्म मङा मिथा। करत ? मिथा। मडामम ? किट्म धर्म अध्द्रम ? अध्य ध्रम ? এ প্রশ্ন উত্তর দিতে চরহ ত নয়, দোবছর-রজত চন্দ্রমা প্রীতিময়। কপঠাদ-বদন করিয়া নিরীকণ, নাপিতিমী শির নত নাসরে বচন। চাতুরীবসনে ঢাকি তাছাব বদন, বগত্তে মুচকি ছাসি কছিছে তথন। "कि वनिव अर्गा वांबू छव मिश्रारम, " अक कन धनी कछे शाहेरहन श्रीरिं। " প্রাণ দিয়া উপ্রকার করিবারে হয়, "মোর অপ্যশে বদ তবে কিব। জয়। "বাছাতে তাঁহ্বার হয় পূর্ণ মনোরথ, "করিব উপায় হেম করিত শপথ।" ঁবসম্ভ তথন কছে "শুন ওগো মাসি, 🦫 " হলে। তৃপ্ত প্রাণ শুনি বচন হিতামী।

"মোছন-ভবনে তব এখনি গমন 🔭 করিতে হইবে ওগো শুনছ বচুম। " हिन्छ अथन आमि जानम बाजात. " সন্ধাকাৰে আমি আসি তাকিবো তোমাঃ "यनि पृथि कार्या मिक शाह कहिबादब, " प्रदे भेज ठीका वांत्र निर्दिम त्लामारत । " এতেক কহি বসন্ত করিল গমন, इता छेडाडेन खाँउ नाशिकिश-मन। এक बिटक अर्था मांज जमानित्य खत्र, আকুল করিল অতি তাছার ছদয়। कट्ट कथा नालिडिनी निक मर-गतन, " বিষম বিণাকে আমি ঠেকিন একণে। " পতিব্ৰতা সতী অতি মোছন-রমণী. "কছিব এসৰ কথা না জ্বানি কেন্দ্র। " জথবা আশন্তা কিবা দিয়া প্রক্রোডন. " ছরিতে তাঁছার মন করিব গতন ' " यमि कार्शनिधि इग्र मछिव ब्रह्म, " ना इडेरन कार्यामिति छग्न किया भन ? " ठोका मन करना नां उ जीवां व अथन, " मिर्द कि अ है।को इ'रम विकल घउन।" गांड लाँह छावि वालिंदिमी तिशा घरत. পরিধিল খৌড়বাস ভাতীব সভুরে। দাঁডভরা কালমিসি গাঁৰভরা পান, जनक हुपूछि करत (रुद्धि कार्ड थान। চলিন नाविमी गीख (माशिजिमी याम) মুদ্দ মুখ্ ভাত আত্তে তার অবিরাম।

(रामहे। होनिया जाध मंद्रिया मर्गाम, पर्नातक करे। कतान क्वांनिया मधानं : ধ্যতাল, পরাকার্ছা করিয়া প্রকাশ. / চলিল দামিনী , হরা মোহন-আবাদ। (इ १/१ कि मझनग्र अवह वहन. খৌমটায় স্থিয়াস না কর কথন। ষোমট বলিনা খারে কর সম্বোদন, ঘোষণা তো নহে দে যে চাতুরী ঢাকন। चनश्चिम अखाखरत दमगी-नग्न. मत्म कति (कार्मे " चैट्ट श्रूकर-मंभम। ঘোমটা তো নাছ মে যে ইসারাজাবাস, ভটত হাক ঢাকিতে যের, যোরা বাম : উপভিত নাপিতিনী মোহন-ভবন, " কোথা গো বছর মেয়ে " পরে সম্ভাষণ। (माहिनी कुक्त ही (इथा विमान) विकास. নিযুক্তা আছিল। রামায়ণ অধায়নে। दामाग्राम महे जश्म शिक्ता कामिनी, यशांग जार्भाक वान जनक-निमनी (विकिञा द्राक्रमीशर्भ मानमवनम्। वाजी मारक भृगी राज त्राचव-वामना। जानकी-इ:थ-काक्रिभी कति व्यथात्रन, মোহিনী-অন্তর বোর বিগাদে মগন। नवनीछ मम मब बाहात (कामन, তার হাদে পরহংখ যেন রে অন্ন। क्यनिनी शक्क इम्र कर्छक स्यमन, পরছঃধ 'কোমলার অন্তরে তেমন।

পড়িতে পড়িতে চকু অঞ্নীরে ভাসে, मीजांद्रक्ष मह निक विशाप धकारण। " ওগো মা জানকি সতী রমণীমগুলে " রমণীর শিরোমণি তুমি ধরাতলে। " उव द्वःश मान निक इशार्थत कृतना, " করিলে পলায় হংথ ইন্থনিভাননা। " याभीत विरम्भन्यां क्रमग्र-मः वारित, " পুনঃ শক্রপুরে বাস পারাবার পারে: " मर्था मर्था (हिक्ट्रिम्ब कथात यञ्चणीः ं यर्था यर्था मनारच्या काय-छेकीशन।; "কতই যে ধৈমাঞ্চণ আছিল তোমান, "তার কিছু জত্তা হয়না আমার " नकाः (भंत्र जरु जरुग जर देश्या (गरू, " मम द्भाग इत्य मृत आहि कि मत्म ह। " अमन ममद्र माणिमीत वाकाखतं, প্তছিল মোহিনীর প্রবণ কুছর। সুণ্ডোপিত পাজিসম উঠিল মোহিনী, मिथिन नचूर्यभारत माङ्गरत मामिनी। मामिनीटत पृष्ट् याटका कति मुखायन, কহিল মোহিনী ধণী প্রকৃত্নিত মন। " धरमा ना गिलिमी वर्षे गरमा कि इकन, " वह मिन (मध्य मार्च वम कि काइन।" मायिनी उपन कहर डेरज़क धाकामि, " নারি গো দেখি।ত ক্লেশ যারে ভালবাসি। " ये जन्मि कर्डापाद गाइन अनारम, " आंगितम अ वारमं मम हत्क कार्या आंत्म।

" এ दिन स्थिति उद अकृत कमन, " यिविन । अष्टंन - मधु करत छेन मन। " এ इःश् किश्व कारत. डाट्ड मारे ज्लि. " ছতাশ অপন মৃধু শুষ্ছে কেবলি। " कत (कांध कि कंतिव यमि वनि आमि, ্ৰতি অৱনিক জন হন তব যামী। " ছিট। কোটা রম বোধ থাকিলে ভাঁছার, " এমন নারী তাজিতেশ্ইচ্ছা হয় তাঁর ?" প্তিনিনা নিজ কর্ণে করিয়া অবণ, (माहिनी उनन कटक मना भिड मन। " अर्गान नाणि जिनि निका ना कह नार्थंद्र, ''সকলি জ্ঞানিৰে মম অদুফের কেব। 'মম থেম্মর ওগো দরার দাগর, '' নাহি কর নিন্দা তাঁর না জানি অন্তর। াসহিতে সকল কট পারি এ ভুবনে, " নাথের নিন্দা শুনিতে না পারি অবণে। " দামিনীর মুখে আর ফাূরে নাহি ৰাক্ (माहिनी डांकिशा निन नाशिजिनी कांक। वह करके पूर्थ जात कथा: वाहितिम, (माहिनीद्र वह क्रांश शद्र मञ्जावित। " यामी सात्र ने जमि जाहिन यथन, " তাঁর নিদা শুনি কর্ণে স্থানিত প্রবণ। " वर्गातक हूटना गेउँ इस्हाट्ड कान, " এবে নিন্দা শুনি তার হা পোড়া কপান " জন্মে কি ক্লোধ অন্তরে 🎮 ক্লেশ দিনকত, 👙 " কোৰা রহে দেই ক্লেশ পেলে, মনোমত

"রসিক পুৰুষে বল, হ্রথ বিগুণিত " इंग्रे जना मालू (क्षेत्र इतन मश्यक्ति। " অপর পুৰুষ সহ প্রেম যে নারীর " নাছি, ওগো, জেনো তার বিফল শ্রীর। " সেঞ্জন প্রেমের খার কড়ু নাহি খারে. " প্রেয় কি অমুসা ধন নাছি জ্ঞান তারে ৷ " आता मध उब इःथ नाहि य छाविन, " তার সনে প্রেমালাপ কিবল হইল।" मामिनीह कथा अनि याहिनी स्मही, কাঁপিতে লাগিলা কোন্ধে খর খর খরি। किरिंछ याचेशा कथा कथा माहि ऋदि, ভর্জন করিয়া কহে কৌরিকবধূরে। " ওলো ছুটা ভ্ৰমাত ভোরলো এমন, " কছু নাহি জাৰিতাদ জাৰিত্ব এখন। " মিষ্ট কথা কৰি তুষ্ট করিতে অন্তর, " মুখে মধু ছদাছল অন্তর ভিতর। " দূর হ লে৷ বাদী হ'তে ভাল যদি চাও, 'খলুরে কছিব যদি ক্ণেক দাঁড়াও।" श्वनाबाह अब नाहि आह नामिजिनी, मृत्य शिन गोक्सोन उकार पाहिनी। উপস্থিত একবারে আদি বিজ যরে, দেখির বসভে বসি রাভার উপরে। দামিনী বসন্তে দেবি ক্লোধে ছুলে প্ৰাণ, कट्य कथा काँकि काँकि छोत्र मिश्रीन। " ওগো বাবু তব তরে কত হুঃৰী মই," " (म इ:ब कहिएक मूर्य कथा मरत करे।

' পরের ইফ্ট গাধিতে স্থামিট প্রধার, " হলো ভাল দেখ বাৰু পৃষ্ঠেতে আমার। " কি কহিব নারী জাতি দেখাবার নীয়, ''নতুৰা বসন খুলি বাৰু মহাশয় " मिथाजाम शृष्ठिमाल श्रहारतत हिक्क, "হইয়াছে ভগ্ন হাড় মংশ্স ছিন্ন ভিনা। ' আমি জানি সতীলক্ষী মে হন-রম্ণী, ' তার সমা পতিত্রতা কে আছে অবনী গ " বুদ্ধিমতী সে যুবতী কথা বুকে চারে, " প্রলোভনে ভূলে দে কি বলোগো আমারে।" বলি ব্সনেতে আবরি आहरित नाशिजिमी कहिएउ कमन्। বলিছারি ও স্থারি হোমার কারার, ভূলাতে বসম্ভে কর কতই উপায়। ाहि लाव छोका किस्त सा मन्ना (ना नाहे. কেন কর জঞ্পাত বলি আমি তাই। मामिनीह करा अनि वमखकूमाह, পড়িল নৈর।শ-হ্রদে কথা নাহি আর। ধীরি ধীরি উপস্থিত আপন বাদায়, किंद्रम निक अञ्चल कथा ममूमाता জীবন এ সব, কথা ক্রিয়া এবণ, विशामि मान्य जात इहेन मग्न। পাগলের প্রায় চাহি বসম্ভের পানে, কহিতে লাগিল কথা জ্লান বয়ানে। " अदह मधा औत सम्या शाहेब क्रमात्र, " করহ উপার হেন বাঁচি না জীবনে।

्रिय अर्ग

" त्म स्वाही थान काफि नरेहर सामाह, " প্রাণ্ছাড়া হইয়াছে মম দেছাগার। " भूनारमञ्च इरेशारक, तन कुछ निन, " জीत्त्र-कि जीवनभूना मद्र कष्ट्र भीन।" रमख उथन कर्ष्ट " वांतू महाणंत्र, " সে ভার জামার রহ নিশ্তির হদর। " मिनारेश जारं नक भीत्र आमि नित। " কোনু সতী সে যুবতী নয়নে দেখিব।" ह् शाहेक. वमरखद समग्र-गगरन, পাপ রূপ চিন্তা-রান্ত ভয়াল একণে সমুদিত আদিবারে সতীত্ত-তপন; **डेजनि य पाहिनी** क्र मानग-गगन চির মরি রহিয়াছে; মুখচন্দ্র তার, সতীত্ব তপন কাছে আস্পদ লক্ষার। तमणी-वनन मर हारमत कूनना इत द यमानि द्वि उत्र कि रतना সতীত্তরতন সহ উপমা রবির, अमानित छेन्दांतित स्टामा अविद्रश পাতিব্ৰভা দিনমণি যে ছদি গগনে, কেৰা চাহে তার পানে লপট লোচনে ? राष्ट्रिक मोस्सर्ग १९ इन्ही जानम, অভিনিক ক্ৰমায় সভীয় হৈত্য मण्यूर् पृतिं : रेक्ट्रा; यथा नियक्त, भद्र-सथ-जीक्न-कटड (मर्टथ (कान् नद्र? यथार्थ एउमनि रक हारह गजीत शाःम ? (मर**्मधीक्**ण करत सनरम नेशास्त्र)

,

नगय-क्रमश्राकारम (मवि'-भाग प्रोह, দিনমনি সকোচিয়া শত রশ্বি-বাছ कांपिट कांपिट मिला त्र शंकरत सांध, ধরিয়া রজিমা বর্ণ পৌয়ে মনকাপ। **मिवम विग्रम गूर्थ कतिल ध्यञ्चान.** वायुष्ठत शलाहेल निक निक कान। গগন তারকারণ মেলিল লোচন, নির্থিতে বসন্তের পাপার্ড মন। मभीत्रन किहूकन उज्जादन तरह, বসস্ত মন্য জ্ঞাত হয়ে পরে বছে। ছঃখ ভার মমাচার কছে তৰুগণে, · ঝর ঝর শব্দে তক নিযুক্ত জন্দনে। (मनिन जांशां जारे महत्वातां इन, খদ্যোত নয়নরূপ করিয়া ধারণ। তিমিয় গঞ্জীর ভাব করিয়। ধারণ, পাহায় করিতে এলো বসন্ত মনন। বসন্ত-বাসনা যে ছে কিবা ভয়কর, ত্রবণ করিলে স্থারি কাঁপিবে অন্তর। না জানি কেমনে আমি করিব বর্ণন, শরীর শিহরে উঠে কম্পিত জীবন। कतिवादत जुड़िश्मा कश्यासम्बद्धी, প্রার্থনা করি পাঠফ তব কর ধরি कनकान ; शूत्र द्वाशा /मत्रा ध्यकानिता, এ অবধি দেখা শুনৰ ছল আখাসিয়া, হয় না হে শেষ যেন; থৈর্য তোমার নিঃশেষিত করিয়াছে দেখনী আমার।

यामिनी अम्दातियाँ क्वार्ट्य निजा मित्रा, रिश्वाक्षात भूत कथि सब रेथवा नित्रा।

र्वर्शमर्गः।

"The cloud-capped towers, the gorgeous palaces. The colemn tomples, the great globe itself, area, all which it inherit shall dissolve."

প্রায়টকাল, গ্রানমণ্ডল কাদিখিনী খেরি এই ভবস্থল ক্রিল জাধারময়: হেমন্ত উদয় যেন বর্গছলে, কুছেলিকাময় ३८म गगन आश्रेष जूबि कामश्रिनी क्रट्य, জনদকুল কুয়াসা স্বরূপে মোদের (मत्वत अजीग्रमान, अर्भमद्भावत्व. दिक्तिक क्यनिनी स्थार से आकाद, इत्ना द्वि एक जारे प्रथा नाहि यात्र, নক্ত কমল কলি সভাৰ্ছিত তায় ৷ कामिश्रमी नेशिया निमी (मीडिंग्रा) রোধিল রবির পথ দাঁড়াইয়া कारभ বুঝি তাই দিতে দোঁহে বিরহ-মাতনা ঈর্বান্বিত। কামিন্তীর এমনি কামনা। तकनी अर्थम अयनिः जाभात, বরবার বরিষণ বড়ই মজার। कांत्र शक्कि? मक्डिमलाब (यहे छन, तमगी-त्रजन श्रृतः मत्नत्र मजनः यिन बुटि कार्या जोत लाहाये। लागात्र, এ হুতের সম হ্রথ কোপার ধরার!



वास् असम् इसि इस् अन्ता अक्षात्रे, তৰণ যৌৰনা নাত্ৰী পৌতে কাছে তায় अफ़ अफ़ फारक त्यच कारन खफ़ कारन, अत अत अरत जन कुलनेत श्राम। তড় তড় তড়ে তোয় তকর পাতায়. কড়মড় কড়ে বাজ দশতী রদায়। সুমার দাম্পতা-সুথ অসার সংসারে. **डेश्टल वत्रवाकाटल त्थाय-भाताबाटत** ? मक्तीमल मण्यजीत मिर्छ वर्षाकान, महिट्जात वर्षाकांन कि वन खत्रान। পর্ণের কুটীরখানি তাহে ছিজ শত, টুপ টুপ পড়ে নীর তাহে অবিরত। বসন ভিতিয়া যায় বরিষণ ছেলে, নিজা নাছি হয় যরি আর্জ ভূমিতলে। ভিন্দার্থে বাহির হ'য়' বড়ই হৃদ্র, वाम् वाम् द्रकि इत कक पात्र पत्र। कर्माय भूतिंड श्रेष कांत्र माधा छल, 'বাহিরিলে ভিজে অল বর্ষার জনে। वह करके अक पूछि वनि जिन्हा कर्हे, উনন ভিজিয়া মরি জিজাকার্চ, যুটে , কুংকারিতে ফুংকারিতে চলে নীর করে, अर्क निक अप्र ज़ाकः खूटिना छन्दत। मजाब जरमात धारे श्रथ-प्रध्य-मञ् अक हत्क रबद्ध कांत्रि ज्वा जारा वज् । **এक शार्श्व विश्वकत्र व्याह्य हम्मन,** जन शार्य विका गर्य बात्र त जीवन।

ज़र्के शार्थ नैकन-कोगंतन छक मन. जना भार्य विनृश्रात की मात्र की बन्। आंगठ वत्रवाकांन धतापूर्व कटन, य शार्थ कितां अ जांशि नीत हेन भटन ! श्रवधूनी भूगेकात्र त्यां अत्रवत्, रेगतिक वत्रंग मीत भारत मानिकत। क्रांत निहाइ (क्यांत ; इकेंट मिक्स , বায়ু বহে বেশবান তরী ছুটে দীন। তরণী বিশেষ এক ছুটে পাদ ভরে, माँ जि हात्रि खन विन मासि हाल धरत। ভিতরে হুইটা নর, তার এক জন, वारमज्दर निया गछ ऋडेनार्भ मन। नश्न जाइरी जीत जाइ मरनगन, উত্তরে কোম্পাসস্থচী থাকে রে যেমন। क्रमत्कन्न मन किया थांकरम रायम, यत्व मात्र। अञ किनि विम्हम गमन। কি দেখিছে তরীন্থিত সচিত্তিত নর क्रिमिर्स १ माहि (यन मंदी(द जखद । প্রকৃতি-মুদ্দরী শোডা আত্রিদীতটে : কার চাক শোক্তা হেন কছ অকপটে? काथा अभाम अस्थानी नमी उत्हें भारक. य माधुती मृतीक्ठ करत् मनस्कार्छ। कमच कूनूम (कांच। त्राह विकमिछ, যাহার সৌন্দর্য ছেরি মন প্রকৃরিত। হুচাক দৌরত তার কাড়িয়া প্রম, পৃখীদতী আঁত করে আদরে অপণ।

हकू वृति क्रिश जानि (तरे वानद्यक्र शूक्त शरकः स्टान कक्ष[े] छेड़ि क्**स्**रमन উপরে বসিতে আছে হাধু যদ্বান, म जाबाटन जनिमिद्य जाएक मिजमान। কেতকী কুমুম কোখা আছে বিকসিত, মু-মুরভি চারিদিক করি আমোদিত। কেতকী কুমুমসহ বারব্যকার, **ज**ञीन (म डेशरवांगी डेशमा निवात। কেত্রী কুমুম শক্ত্র, বারাজনা ধর, পृष्टी आমোদিতকারী টামে অদি: নর। পড़िল हुँ शांत कारन हुँ र काठा भन्न, জীবন ভুঞ্জিতে গিয়া অজীবন কর। কামিনীকুত্ম কোৰা শোৰে তৰ্ময় याशांत जाजारन कानिमानि मृत क्या। कामिनीकूच्म उक, विश्वा उक्नी, कुननारा नम लिटिश अरे यह अनि। কামিনীপাদণ নাছি হতে কুন্থমিত, इरे हाति मिन मत्था त्रीव्यर्था नार्किङ। **उपनि वक्षत्रभी योवन समात्र**, इरे निन श्रुट्थ कार्षि शक्तित्र रूपदा **शहत शिंतुकूलिक विश्वकि**्यक्त, योवन खड्ड ७३ वर्किंड त्यांछन। কোন ভক্ৰৱে বসি বিছল্মগঞ্জ मधूनदर नानकदन अन्तिङ मेन। कान उक्वन-शाम आह्न वीत अन, भविष कि विनिर्देश करि कन कन।

कि विनिष्ट हैं यनि दर्भी ठेक मक्ता । **जिल्लामा कह जामार्टन ७५ ममूम**हाः "ওছে" তক্ৰর তুৰি নাছও ছঃখিত, ''যদি ছে দপ্ণ তব এবে, কলুষিত। " লতিকা-দক্ষিতা-প্রীব। করিয়া গ্রছণ, ' পড়িয়াছ নত হয়ে দেখিতে আদন " जाकरी-जीरम तथ कनूम पर्भरन. " কেমনে দেৰিবে স্পষ্ট জোমার শোভনে! " षाञ्चर रमञ्ज, श्र्नः कूच्य-ভূষণে " स्रामां डिल इ'रतः पूर्व विवन जीवान " (जिमात मर्थन होक) (मर्था (इ धरमारम, ' ৰাজ্'ইয়া অন্থ্ৰাম ৰাজায়ে আমেচে।'' ध्यमक्षक यथा कहि मधूत वहन, সর্থ সভাবাপর মান্তে বঞ্জ করি মনায়ালে নিজ কার্ঘারিত্রি করে, তেমনি জাছবীলন সেই ভক্ৰৱে (गतन अखर यात्र) कहि मिठा कथा मध्म विर्मुण उद्ध क्षमना मर्ख्या। महत् मबंदी काथा नीतम-निर्दारक, 'শাৰি-ক্লুর পুৰু _{প্}রি ব্রিতরে সভোবে। ज नबर जबूदेच , किंची मित्र मेखद्रव, प्रतिशे **उ∖रमत हर्य मुहुके खीवन**। **गृ**जन कीवन (शास्त्र काथा (छक्तन), केटकः बदद वर्षं कदन अस्पादि नग्न। जागीतवी जीम कावा चत्र नाममत, विजन श्रीजिकंत्र स्लाग समग्र।

उद्गति भोष " डेंक भून पृत्रीमतन, উচ্চ ভরুপুঞ্ল পরে পূর্নিত খ্রামণে। উচ্চতর তবদল পোডে তারি পারে, তাল নারিকেল শির শোডে সর্কোপরে। ক্রম-উচ্চ কার্ছাসন অভীব স্থার, শোভিত থাকয়ে যথা নগরাভাতর; वक्का खर्ग खना सम्राडा थाएएम, জনত্রেণী শোডে যথা স্থােভিত বেশে। প্রকৃতি স্থলরী যেন তেমনি আসন. गठनिम इतिगतन 'मिश्र' उक्गण। তছুপরি নানা জন্ত বদি ছর্মন, क्षाइरीत कमकल मिठान यहन अवन क्रिडि मृद्य धकाण इहेश्रा, स्वभूनी-स्वक्ठा छत् मन मिशा। " ওছে বিহল্প, কীট্ৰ, পতল নিচয়, ' " ভ্ৰমিয়াছি বহুদেশ ছতে হিমালয়। .. " দেখিয়াছি বহু জন্ত-মভাৰ, আচার, " मार्नदेवत्र मेंड किल नर्ह दी जि काता। " जिरह, बाड, मर्न आंति हिरख खर्डेगेर्रा. " ভরত্বর বটে এবং এই সে ভূবন। "মানৰ মতন কিছাট্ৰ কেছ নয়, " কোৰা লাগে সিংছ বাতে ? পার পরাজর। " बाज मर्थ जानि जरु बड़ा बर्छ बन, "मानत्वत्र क्छं यम मौदि जूमधन। 🚬 " बित्रकि कारात जन्ना त्निवादन मादत, " অন্ত পত্তে কিবা কথা দোদৰ ভাতাৰে

" विभाग कंतिए क्रिया में उठ यंडन " मर्शिक दुविभान इटल तिहे कन्। " मगिंधक वार्थ छे भाकान योन करत्र, " দ্ব্যা উছলিয়া উঠি ধরে না অন্তরে। " ঈর্ণা পরবল ছয়ে তাছার ধংসন, ' একাথ মানদে করে নদা অথেষণ। " অপরের কাছে তার সলা নিন্দা করে, * विशेष इडेटल दूर्य ४८त मा ज्याहरता " जान, जूराहति, मिथाकिथा, धारकना, " শঠতা, লাম্পট্য দোষ, বীভংস বামনা, " ডাকাইতি চৌর্যান্ততি, আর কপটতা, " তাঁড়াৰি, ভণামি আর নফীমি, ধুর্বতা; ' ইহা ভিন্ন আর আর যত ত্তপ্রতি, "' আছে অধিকার করি মানব প্রকৃতি। '' ददक्ष विचामः कद वाडि, जुजक्म, " না কর বিশাস নরে বিজ্ঞিত ধরম। ' সত্যপ্রির বলি কারে উপলব্ধ হয় 🖰 ' মিখা ভিন্ন লাহি জানে তাহার ক্দর। " সরল স্বভাবাপর জান কর কারে? " তার মত বক্ষমন নাঁহিক সংসারে। " দয়াবান্ বলি কৈছ দেখায় অন্তর? " দয়া যে কেমন জব্য না,জানে সে নর। " किर माननीम विम (मथात्र क्यामाय ? " দণ্ডবৎ করি দানশীনতার পায়। " অপর কামিনী কেই মাই জ্ঞান করে ? "লম্পট তাহার সম কোঁথা পূণী'পরে।



" বাছৰ বলিক্লা কেই দেখার ভোষার 🕆 "শত শত দশুৰ্থ বছুতায় পায় ৷ " হাসি হালি মুখখানি দেখিছ কাহাঁর ? " পুলা নিষে আছে তার তীক্ল খুর ধার। " मश्राकरण अवन कर--रमधारव रव ही छ, " অবলা ভাৰিবে তাকে তার বিপরীত। " भन्न अहे कथा क्षति जब कवि मार्या. " की करम पानम जीटन ना गिटन दह काटक । " দেখিছ কোণায় কেছ মাইতেছে নর, ' সছজ্ঞ করের তার থেকো ছে অন্তর। · अमनि मानव (कारनां, इदेश) मानव. " मानदात आगिष्टिम जडीव छेटमव। " गाउँड वर्ग कांकि नाम वर्ग महरू. " মানব বলিয়া ভায় জ্ঞান নাহি করে। " नाम वर्ग सब भूनः श्रीत-वर्ग नत्त्र. "म्लिक जर्कंडि इत्र क्वांबर्ट कराउ । "শারীরিক হছর্মন হ'লে কোন স্লাভি, " **তার ভাগো কউ ভোগ হছু** দিব। রাতি। " কাড়ি কয় রাজ্য তার। দাসর শৃথকে 'বাঁধিয়া তাৰাৰ পদ পড়েনা ভুডলে। " अब खगडार नारे महीत इसन, " অপরে শীভিত্ত কোৰা আছে হেন হল গ " निर्माकारम फाकाहेकि वनि करत कह, " १६ दर्श यात्र कात्रा जार्द्ह कि नटक्द। "দিবদে ভাকাতী কিন্তু রেই জাতি করে, " बीवव ध्यकाम जात्र एक गुणी'नरत।

अंके के में

्यांविन्होटभावन कानः । स्यांविन्होटभावन कानः । " निर्मात डांका उपनि 'नाटम अक नकः ." "দিবদ-ভাকাত নাদে প্রকৃত্র অন্তর ' महत्त् महत्र लाक 'यक मध्ने बारक, काब माश चारम कारह अधि अख बार्ज া একৈর সন্পত্তি হরে রাতির ডাকাত, শতের সম্পতি হরে দিন-দত্ম-হাত। " अधिक आम्हर्या अद शह **सह**गान, "দিবস-ভাকাতী অতি গৌরৰ কারণ। ं मिबाब जाकां कीर्डि खार्य कविगय, ' পाठक छक्तन स्थी भारत स्म वर्गन। · अड अर क्लांग्ं मान्दर विधान কভুনা করহ শুন থাকিতে নিখাস।" कार्री कीवन कति कन कन दव। मञ्जित्ह अहे ज्ञाला की कहा मर। ंड जीटन (धानी वस इटा जिन्मीन, একম্মে সে বক্ততা করিছে আবণ। কিবা রমণীয় ধেশ করিয়া ধারণ ৷ দে শোডা নিরধি মুগু নছে কার মন ? অনিমিবে তাই সেই তরীছিত নর, দেখি শুনি ভাগি জাৰি উদাস অন্তর। অন্তর-বীণার-ভারে বেন ধর ভাছার, প্রকৃতি-হৃত্দরী কর করিল প্রহার। जर्मान वाकि छेठिम तम जन्म-रीना, দেধনি ভনিতে পেলে রাজত লীছি নাৰ र जन - जलत - रीना चत्र रिमपूत, মরম বুরে হংগী হচিতুর। কা হার

े प्रक्रम - ज्ञास्त्र - बीगा - व्यत स्माधुत्र, এজগতে হে প্রাঠক অতি স্থাচন। প্রকৃতির প্রীতিকর শোক্তা বিদ্যোকন করি ভন্নীত্মিত নর প্রমোদে মগন ৮ शकरिता यीत यीत सर्दर हिन निमगन स्टा छेल्बर छेल्छर । धक्रित अन-कार्ने (माखाद पामारक পংঞ্জির অবীভূত দেখি সেই লোকে তारे भट्छ मित्रा कत महिख्छ पन : अवन ना शत हक्क सा करत मर्गन। मामिता मा जान भाग जुक मा भागम, ভিহ্ন। আৰু দিন ভ্ৰমী স্কলি আৰু । চিত্র পুত্রলির সম তাই সেই নর, भिरुका स्वा करत विम गर्छ मित्र। कर। (स शांकिक मक्तमत्र (कवा अवे नतः) জ। নিতে উৎস্থক অতি তোমার অন্তর। এজন তব জানিত হে পাঠক জন, वितर्ह जरुगी वृद्धि स्थीत साह्त। शिक्तम अरमम मिरिवादत बाङ्गा जात, कमि-वाम्भ-धारन गांजि देवसूथ वांधात। (महे (म कारक उती पत्रि जात्वाहन, বিলেশ অমণ তবে চলিছে মোছন। বনদলে নজ্তদ আছিল আছ্য়, निममा। हिंगा छारे विद्य दिशह। यथा ना निरकोड़ी शकी छनि अक सान, সরসীর জন্ম জংগে হয় ভাসমান।

তেমনি ত**পন** ডুবি জনদ-দাগরে, इक्दारत जामगान पेन्टिंग आहरत। दहिहिल अडझन इरेट प्रकिश, धनावनी यात जाति जरम इस्म कीन निश्मारिक श्रीह जुशहारक भनादिन, জ্মনি রে দিনমণি ভাগিয়া উঠি।। मयल निवम हिला अधिरत आफ्टर, দিবস বদন ছিল। বিষম বিষয়। ব্যাব বদন ছেরি দিব্য স্থাতি, হ: দিয়া উঠিল যেন হয়ে শান্দিত। নে দিবা সহাত্যমুগ কিন্তু হে পাঠক क्रमश्री भग (अम्म) अमीभ-भागक শিখানিবলৈ উন্তে: যেমন ছানিল. शक्तात इरेट उमेर अमिन शामिन। यमि अजिकान दाशी (म निवम-दामि, কিব। মিষ্ট ছেন হৃষি বলনা প্রকাশি १ গস্তুমিত রবি-কর তক্-শিরে শে;েড, कविद्र मानम-शाथी (य मोनम्या न्याइ भरनाझारम वटन गिश्रा क्यूज्गिति'लरत দ্রীকৃত করিবারে আবিদ অন্তরে; ফেরিবারে গ্রন্থটি_ন বৈশাস্থা প্রীতিকর, ष्ट्राटि मधः (माठम, मस्थ पस्तः, দংকীর্ত্তন করিবারে গ্রন্থতি সুষ্মা, ধরিবারে শশু করে স্থের চন্দ্রমা। কিন্তু মার হং-শনী ধরে কেবু৷ আরে ? त्म बाक्षा विकल यथा धता हत्यमादत।

 (अ) उच्छी (आठ क्रिंग हिन मिल्न), काँगे इ**रमा** रमवर्स (जात यम-शीम। क्रात नमत्र निक्रु नाह धानद्र। করির। আছিল নদী করি আলিজন। मिट्ट कति क्रमामां सूर्ध मर्गाभम, इड्राक्त निक्क कत करिना कृथन। नारथत वित्रदश्मणी छाडे छावि कीन. मिसुत्र श्रेकां क्षेत्र के किस् मिक्ता সদ্ধা সমাগত হলে তিমির আইল, मोकात माडित गाङ्गि नाविक विमल। धारक मि अरमाय काल, उद्देंगी छेश्रव পুনঃ তাহে, পুনঃ সেই মোছন-অন্তর। বুঝি দেশ সহদয় সে অস্তর-ভাব, দে ভাৰ বৃদ্ধিতে মম বুদ্ধির অভাব। श्वितम शेख (इक् भामभ मासाहित. কিছু পূৰ্বে রবিকর আদি জাৰি ছারে उज्जन हीद्रक थंध हरका जान मरन, उक्कैंकि नित किया आद्योध नहरून। এখন সে জ্যোতিঃ আর দেখা নাছি যায়, তিমির রোধিল মরি সে চ্যাক লোডার। लोश इतमां उहरह मत्ने त्यन उक्शन, निजा लिखांत उत्त बूमिन नहरा। কোন কোন তৰুবয় পূৰ্ণ আৰুঞ্ন करिया जनम फांच कतिन धाइन। निविष् भागभा भेज मीयरी जानह, एक-शर्न नाम। इतना (यम शर्ममा।



े উড়িছে रिकार्ट्स परमद डेलार्ट्स, निमीविनी आँवि (यन मानटम विकाटम । मत्म मृत्म कान इत्र त्यन निमीवनी, চক্ষু মেলি নিজ রাজা করে নারাবিনী। জ্বালিল নাবিক্যাণ দীপ ত্রী'প্রে, তারি প্রতিবিদ্ধ পড়ি বারির ভিতরে रानरम व्यव्याध यम क्षे क्षूमिनी, আছিল বিষয় যেই হয়ে অনাৰিনী। শিবাগণ বাঁধি দল করে আবেষণ प्रजामक नमीजाहे इत्रविज सन। मैं। एड़द्र **পंडन - सक** नमीद डेश्राहर রজনীতে কিবা হর সমুপিত করে। শুনি দেই মধুষর স্থীব মোহন, দেখি শভাবের শোভা, সহক জীবন। विज्ञासमाजिनी निका धीटन काटल महा, **उत्री'পत्त यमिल्लक खेक्**ल श्रमस्य। िखानकं यन **शत्क** स्निजः। (यसम मटकोषध, मक्तमज्ञ, कि आहर अमन मन-मोनि-इत छ्उँविध ७ कृतता! निजारमनी मिछा निजा प्रिन मारूटन। यामिनी याशन कार्त जन्मी - छेशरह, পর দিন তরী বাহি হার্ব অস্তরে চলिन। नाविकशंश (मार्डन - जारमर्ग, চनिया उत्ती छेड़ि शोड़ि बाना मिटमा व्याजनजी हतना त्मरं धहे हतना काम? कर्ग शत्त्र नमी (गांडा श्रूनः मृश्वयान।

र्थहेत्रार्थ मंनीबाक त्वधन कतित्र। **চলिय नारिक्शन उज्जी दाहिला** আদি উপস্থিত তরী-সিদ্ধাপাত শাংশ, শত শত সিদ্ধাপাত মধায় বিয়াজে। ष्यादा गाँव किवा भाषा खेगहक याह, गगन गदिन जारह हांशि कार्ड मात। नागिम जामिक्क जिती दिन अस्त चार्छ, शूनि मिल त्यां इत्यत मामन कवारहै। শত শত ভরীলেণী আরোহী পুর্মত, সক্ষেণ হয় পার থার বিযোগিত मर्गक खर्मरा मनः मन चर्कितः সময় বিশেষ হয় শোভা চমৎকার। নানা জাতি নর তার বেশ নানা রপ मिशिया बाह्य छात हेटल छातकुथ। कर्महान किनिकाल। महरू कतिरह मकरम पत्रा ममवास मन। गाड़ीर शर्यत भंभ, अन कमत्त्र, म्बाह्य कि मधारा कि मन छेखा। *(क्षेत्र (क्षेत्र नम करन व्हेर्फ हेचित्र,* মিশিয়া এ সৰ পান ক্লি, শব্দ বিক্লান্ত मध्यिक स्टब्स लाटग केंद्रपु - क्र्ट्टब, मानरंग न्यगंदत श्रीमी कृतात्र जखरत। তরী হতে অবতীৰ হইয়া মোহন, গাড়ী চড়ি কলিকাতা সহত দৰ্শন कतिएक हिना चना मानंत्रे छेबारत, कडर बाम्ध्या वस जीविषाद आहम।

जिउन क्रिक राज लाएंचे मादि मादि, চু েধবলিত অল কি শেবতা তাহারি। খেতহংল-বৰ্জিনি শুন্তগৰ্-শোডা, इवि श्रिष्टितिय शृष्टि श्रम्का गर्नारमा छ।। ন্তম্ভ - শিরে কাক্ষকরি কর্ট প্রকার, . যাহার হ্রমা দেখি লাগে চমৎকার। এ হেন ভবম কত কে করে গণনা, জীবন ভোষিতে কড় কৌশন ভাপন।। शंगादीकि शिक्षंभं माना अवि नाद, नश्रम-शांदक-सवा (शांटिक श्रद श्रदा দেখিতে দেখিতে শোভা কথীর মোহন আসি উপস্থিত দথা রাজার ভবন। आका मति किया बाखाश्रातिमिध-पात्री, यहमा छेष्ठारन भोत (भाका शतिशाही। दालक्षिनियि-बारी शार्च हाति छात्र, मिथ वृतीक्र करम मानगं श्रीभात। धन क देश्याकजाडि, मन ध्याज्ञान, नद नाम गार्थक कदिएन विमावितन। मानव रजामता वहे, नह - बिरहामनि. अहन स्ति श्रावित अवनी করিলে ছে বুজিবলে ; কোঞা বাস তব ! काश भागि बाहबत्त कृषिइ विख्य। পঞ্বিংশ শত অফ হটদ হে গত. কি লশা আছিল তব ? বনা নর মৃত अवना नगरत अव^न आहिन दम्हि. করিতে চিন্তিত অজ দেখাতে দুর্ভি



जताजिक्रामात थटर बात जीवत, नामांक बारमा हिए साम भार्मन नमन कदिएक स्थान नकमन जारन, त्रामात्ने : कुक्रवत्मः चाक्रिटे मगटन । তব ৰাসমীপ - দশা কি ছিল তখন ? পর্ণের কুটীরময় কর ছে স্থরণ। जूरनमहियी धटन मध्म नगती, কি ছিল তাহার দশা দেশ দেশি শরি। অন্তত পরিবর্ত্তন কিছু শত শকে, मानरम श्राद्धाम अरक् किम धक् धरक i অন্তত পরিবর্তন কারণাথেষণ, कत्रक् बनाशि (कक्, कत्रक् धार्ग। खड़ांख भंदीत अम, निः मंद्र - समग्र, **डेब्र**ि माथन रेक्श, जात धर्यु छत्र, একতা, স্তীক্ষ প্রজা, সতাপথে মন, ভাতির সহৃদ্ধি হৃদ্ধি করিতে কারণ। এ मनान दिवर्णिंड इस स्परे कार्डि, তার ভাগো দার ছত্ব অরাতির লাখি। जब बाठि कांड़ि मर्व ब्रोका अंक हरड़, विनिष्ठ हरेट हिंदू मानेष कामर्छ। **ওছে बज़्छन " मिथि देश्त्रांख - চরিত,** आद्यांक्य उव कृट्ड ना स्त्र किकिश् रेश्द्रारक्षत इद्यवृत्ति जङ्ग्राजि-कम, তাহাদের স্থগুরুতি তব° পক্ষে বদ। व्यानककू देशीनन कर रक्षन, भरीका कतिहा तब उर चाहत्र।

আলন্থ **কো**ণ্ডেতে নিদ্ৰা যাবে কত কাল, ু অজ্ঞা কুপেতে ভূবে বন্ত্রণা ভরা<mark>দ</mark> महित्त, देश काल मिन १ नदा गण्यान, তোমরা বঙ্গের আশা, ভরদা, ভূষণ ৷ কিছু বন্দসতী দেখি তৰ বাৰহার, মনোছ্ৰে ভ্ৰিয়মাণ বদন তাহার। विश्वविष्ठानश्य यत्व कद्र अधात्रम, তৰ বুদ্ধি কাছে বল কাছার গণন ? কোন জাতি পরাস্তনে বৃদ্ধিতে ভোমায় ? পূণী'পরে ছেম জাতি না দেখি কোখায়। हाजायका उर त्यन मिनिमिनी स्थला, पिश्रित सन्ताम हक्कु, भक्त आँथि प्रमा। ত্রি পরে আলক্ষ আঁধারে খেরে মন, আৰু ফুল গোলাপোতে কীটের দংশন। ওহে নব্য বঙ্গজন হেন গোচরণ, তব **পক্ষে অভি দু**ষ্য করহ প্রৰণ। य मिट्न बरेन क्या जात जेशकात, না করিল যেই জান ধিক্ জায় তার। कांक कि कीवत्न हात्र यमि क्रिश छत्व, मिट्न कि इकि रेक्ट्र मान्टम ना बदव। (इन देक्टा युद्धि निर्दे, धिक् रम क्रमरम, भाक्षे इत्र नित्रविष्टम (महे नदा्धरम। ওছে নবা বঙ্গজন হয়ে এক-চিড, माध जेशकांक मत्व म्हानं किथिए। मिट्या विश्वम रहात शहर वक्कन, একবার তব চকে ন। কর দর্শন।

वंत्र-विमा।-छेमादिन छ के द्विमां खन्नानः जानियारह अक्टो रह कानलक कान । थ्रमे समुविविभिष्ठे स्थानिक गर्भ, अंग्रिक्ट कानडक सानिना कानरत কাটুরার ভীমুখার কুঠারের ভবে, अष्ट्रश्च रक्तमद्वारक्ति क्षणत विकास काजानिनी रक्तरही इक्ना क्रम्रीन, कैं मि बाषी जिजानेन स्थी बक्कारन ! क्रमम श्रम कि कडू इत्राष्ट्रा व कन, निकार हिएलत काएइ विकल कम्बन! (मध बिक्क भेर्च महत श्रद्ध पक्षक्रम, शक्तिए के काम जन मिन्द्र भठम। माहाया विभावा (कह कहद विभागार्ग, रेमशिमा कि इर्फ छव मोशाबा अमारन १ कृष्य **गर**व अक्षित **अस्य व्यक्त** वक्रविमा - जेमार्ने मक्रम माधन कब्रह धकां थि हिएल, बाम बाब छटत, लंगि मर्या गणा एक त्यामका (ए मरन। **डेब्झ मिनांत्र कक कामउरगार्**ग. क्रेट्ड क्छ क्लेम्ब्र_{्स} क्रिव क्रम्पा श्रांडिकात किছ येनि मोसि राम अह, कि कठि बंदेरचु उन मनवर्र हिंद পাইৰে ইহার ভাল, বুলোনা এখন, कुलिक् भाक्ति रम्बि जाकन क्रिका। मैं। डाट्य (माइन (इश) मिश्र शंट क्या, वास्थितिमिक्तिकि । स्टब स्वीस्त्र ।

তঞ্জিকার শোক্তা দেখি স্থীর মোহন करक कथा मन-मटन मंतिखंड मेरा। "কি পুরুষা হয় মরি কি চাক গঠন, " চক्ষের বালাই যায় করি দরশন। " य भार्ष किताहे जाँथि मिथि जवाहाक, " নয়**ন কা**ড়িয়া **ল**য় চাক শোভা কাক। " जरम-वजन-वृषि (घद्रः मीश (तान, " ফটকে গুহরী কেরে রক্ত চক্ষু মেলে ! " সন্মুখে ত্রেমােদাান চাক তক শেভি " লতা প্রপা রেলে বৈরি দৃশ্য মনোলে।ভা। "নানা জাতি ভরপতে পড়িলে নয়ন "মগর(ভান্তরে যেন পদীর সূজ্ম। " উত্তর, शक्तिम, शृटर्दा, श्रीमान कुनन्द्र, " সারি সারি শোভা পার জুড়ার অন্তর। "দক্ষিণে হর্দ্ধর গড় অরাতির জুকু " अक्र क्ल आमियादा मछरुडी कक्र ' তিম শত বৰ্ষ পূৰ্কো কি ছিল এছল। " कि मरकह छिल हेटा भूति उ क्यम। " कि मरम्बर हिल हेरा गांख निवस्ति, " কালসৰ্প বাসন্ত্ৰী ভয়ন্তৰ অভি। " विष्तिष्ठ एवं प्रेंग दिश्वक्रकांग, "'मंदे ऋत्म विष्ठतिरहः मद जगणनः। " मिरे कृष्म नाम नाम नेन निवमित्र, " भूव कि निवह का भा आ भने स्वयं छन् " कामरबार्ज गैंडि जंडि चिष्ठिं मर्गन, " চিন্তিলে ছাদয় মাৰে কন্দিত জীবন।

" कांबा कान-त्वांड-उटि उटि जनपनी

" (कांशा ना नगंत्र छश्च स्टेट्स् कार्यन में

" काबा वनक्रम की है कि क्रमक्रम,

"काथा जनपूरम भूर्व इंदेरह जम्म।

" क्लांबा धडाधत मग्न स्टेट्स मार्गरत,

"কোধা বা সাগর পোডে ছাউচ্চ ভূবরে।

" काथा जीनिशान शाका ? काथा वा कामान ?

" अकर्काटम यात्र मटर्ग भृषी कण्णमान।

" কোণা রামরাজ্য ? কোণা কুফরাজ্য বল গ

"काम खारित नियगनं इरेन मकन।

' কোখা রাবে এই যে মগর কলিকাডা

"কিছু **শত শক পরে? জানেন বিধাতা।**

" এই যে नगद्रभूष लक लक गहर.

" किथा त्राव अहा वन वर्ष भेड शहर !

" এই শত শত নর হুমোহন বেশ,

"कडर यज्ञान महि किहारिष्ट कम।

"-सरम धकमारे तैथि वानारेमा कूम.

" अशोह गोर्ड ब्रेटन गरन गर्क मनाकून।

" िनां कां हे परकाशित अकी वानारम

" मश्मभम करकाशितः महिन्दर्ग छ वास्य

" স্থানিত হইয়া উড়ে শৌক্তা পরিপাটি,

" कान भिनुमित्मू बूठे वकतनातमरू आहि।

'' চরণাবরণ খলি জুতার উপরে,

" বিক্চ ধৃতৃরা পুলা শোভা আছে ধরে।

" করে তিক রোপো বাঁধা ধূর্নিত সমনে,

" 5 निशा यारेष्ट्र खानि महाव फुन्दन।

" ক্ৰিৰা বৰৈ ভোষনা হে দিনকত পৰে ? 🎉 না ভূলিয়া কণে সেচিস্তা অন্তরে 🖰 श्रम व्याधित भीत अस्तत छेशत, জোধ তব অভূচিত এরা খোলা নর। থাছিক দৌন্দর্যা তরে শশবাস্ত যারা, ৰড় মন্দ্ৰ লোক হুধি কন্তু নহে তারা। দিল-খোলা লোক তারা হথ লুঠিবংরে, भतिशादक कमा अके मकात मः मादत । माता इरे अञ्चलात मानव निषम, মিটমিটে ভান মোর। ছেলে থেতে যম। পুস্তক ষ্থন দিখি ধর্ম অবতার, कार्याकारम मामाना नरत्र वावशाह। 'আমি অতুকার মম নাম জীইশ্বর, आमात्र त्वथनी कारह निर्द (कान् नह।' ' আমি কৰি মম কাছে কোগান স্থান গ রচনা অমিত্রাকর যার প্রবর্তন। অমিত্রাকর যোজনা বাক্লা ভাষায়. হাত্যাল্পদ হুধু মাত্র শুনি হাসি পায়। क्षेमरि कथा श्रमा अवन कर्शात শুনি শ্রুতি স্বৃতি,যায়ু ক্রোধে হৃদি ভোর। না হইবে জোৰ্থ কেন? কৰিছ শক্তি मा हरेशां यम किना मर्छ हरना मेछि! भग बहनात कारक मांभरवत रमशा क्रांनिमान कौंवा कारह नवा क्रांचा (मधा।' 'विहरमत्र गेण्यं छन। छनि इनि शोग्र, যেষনি লেখার হটা লক্ষ ভুল তার।

न्नाद्या यद्या क्रिकिठा छनि प्रदेश कर् जिज्ञीन काराज नूर्य अनि शूरत व्यान हर् '(मामध्येकाम मण्डाहरक विश्वासूचन, निधियांत्र कि थांत्र शांत वन , स्थीक्रन। বাঙ্গালা ভাষায় প্ৰস্থ প্ৰায় ভাল নাই, मिथिताहि इ खंबामि जामि बारे ठारे।' मम धौरू धौर्र छ उत्त स्वीखन, করিতে সকলি ক্ষর মম জীবন। গুপ্ত ভাবে ছোট লাটে পতা লিখি কত. मश्कुल फेठारेया वार्काना व्यस्त **ध्यवर्क्डिज विमानिता करा मम्**डिज, (भनमाद्ध धूनागक बड़रे विहिछ।) गश्कृत ना डेशारना स्कन रह शांकि? नहें(न देक इतन मय वाक्रान् श्रह्म १ निक अबू बहनात्र धर्मरमा निशिशा, **७७ ভাবে मन्यामत्क विषे शांत्रोहर्रा।** नुजन मिथक मिश्र केशिय काज्य. হোক্না দে বন্ধু কেন বন্ধত। অন্তর। महत्र कृडक-भारण थाकिन। जानकः रा**द्वर (नर्क य्कि क्रा**क् छेपनद्व, হেন বন্ধু সনে কন্ধু রাবিদা আলাপ, এর পেটে এত বৃদ্ধি একি বসন্তাপ। ভাবিলাম যারে এত দরল মানব, रंग चांचात्र धोषु मिर्थ एक्टव रङ्ग न्यव : , अमन रर जानि धायुनात किनेश्वत, দার পেটে এতা হণ, ধর্মের আকর

जारूक नौन क्षेत्र एक मिक आरमानिक, তারীত পুত্তক মরি এত সমাদৃত। বলিছারি ও সংসার করি যোড় কর, অন্তরে নরক ছের। আননে আতর। निजा निजा अरेक्स्भ स्थीत साहम, मत्नामात्म कतिरमक मस्त्र जम्म। নগরাভাতরে যাহা ছিল দর্শনীয়. निद्रिथ कतिम जुक्ष मर्गन-इल्पिय। वकु वकु लाक बाँद्रा जाहिमा नगरत, माक्नार उँदिन महं कदि इशिखद वक मभारक्षत्र मना श्रमिना कोष्ट्रक । वाजिन राज्य मम माहरमत बूरक। गारमक साइम शीत त्रविद्या नगरत, जानातम् अभिवादा छेरसूकं जल्दा। य मिन विरममं यांचा कतिरवक शीत তার পূর্ব নিশি নিজা মোহন জাঁথিয় जाहिना वह जलदर, नाहि तिथा निन, विद्यान्त्री नद निभा द्रश्रु जागदिन। চিন্তাসতী সহ কৰা হুইল যে তার, **७न एशीवन गरेव**्यतंत्राङ् जारात्र। " ওমা বৰ্ষতি তৰ সভাপুঞ্জ রীতি 🕆 " চিস্তিলে মানল পথে উঠে বোর ভীতি। ' সভ্যতার জ্রোত বহি দেশ পূর্ণ পাপে, " छेशीड़िन विबंडक साथि बहि काँदश । " (य शास्त्र कालिएत करत मत्रके नम्, " य भारभ कें।जित्र धति है। में नीज वन :

" (य शार्शः मानव इत्र शंखतः नेकातः, " (य. भारत डेव्ह्न यात्र यंड जनकार!।. " (मःभाभ शतका आतं धरे ता नगरकः " গর গর এনগর পাপজোত ভরে। "সজ্ঞতার জ্বোতসহ হুরাজোত বহে, " श्रवादम्दी अ नगरत वाम कति तदः। " প্ৰৱাদেৰি ৷ কিবা তৰ কমনীয় কান্তি, " दक्तिमा बहर्ग जीवि मिदि हिट्ड खाँखि। " বুদাদী দেখিতে কিন্তু ভিতরে ফাঁপর, " ভুরা নারিকেল যথা চিক্লণ উপর। " धत्र धद भिष्ठ कम् भगम सुस्त्र, " তিজ্ঞ ভাছিমা আদ ভাম কঠফর। "কতু ৰা শয়ৰ তব শরণী উপরে, "কছু বা শয়ন তব খানার ভিতরে। " (दन दानि भेर मम माहि छन् छन् " क्तिहरू बमरम किया मर्गम - त्रम्य। " छेमर यङ्ग्छ वड़ शाकिरमंदे इग्न, " बदक एका बका ठांब हुनि क'र्छमन। " यमबादत नदेशादत पूमि भी गहिनी, " वाबाकना बाद्ध नुद्धः पूमि भाक्-मी। " मर्बन्दांच कत्रियाद द्वि (ग। माविनी, " बाब्र बानाएं पूमि शर्रे संदर्शिंगी। " अमन त्य स्कारमनी नर्सनान मून, " সহুৰে, করিয়া বাস বিদিতেহে পুল। " मीपू-मधी खनक-वज्जा महाबास, " कतिन नगत्रनात्री कति जीवसाछ।

" সভাতার 'শহ্চর ুব্যভিচার " কেলি করি যরে যরে লভিছে সম্ভোষ। " ব্যক্তিবৰৈ নাছি দোস, যাতে জন্ম সুধ, " मि कतरम भाभ किया ? सि कर्ष विमूच ! " इकायन कोयदिश्व कदिल मखागः "কভু কি হইতে পারে ধর্মের বিয়োগ। " সভ্যতার থাম্বে হেন আছে ভব্য নীতি, " दुक्किवीरी अद्भद्र छ। आहर धरीिछ। ''নমস্কার সভ্যত্তি থাছে শত শত। · হেন স্বুজির পদে শত দঙবণ্যু "যে পাষ্ড কহি হেন মধুর বচন, " হরে কেনি কামিনীর সতীত্ব ভূষণ; " जाहात मिथितन मूच जुतन व्कार्थ धान, " हे ऋभ इन व्यक्ति सदि कदि सान योग। " जवना महना नाही कान द्वि नारे, " মিঠা বাকা শুনি ছুলে কাছারে ছ্বাই। "বদ্ধে বাজিচার দোষ এমনি প্রবল, " चरत चरत कार्या मिकि महल रहल। "নাগরিক মানবের কুথাইতে: নাই, " সভাতার শৃহেংপরি লুঠে কি মঞ্চাই। " এর পরে রাজঘানী বিচার প্রার্থনা, " वाकानि छेष्ट्रतै निष्ठ भूति ह्यू कामना। " পিতা পুত্রে বাদ করে জাতায় জাতায়, " অভিযোগ জনা পরে রাজধারে ধার। ্'্ছইয়া গভস্কৰ বিচার আলয়ে " गात रत ज्यजन जिल्ला किता

"विष्ठांत्र धार्यमा गणि जान, ज्याष्ट्रिक " गानवीन, शकाकान, विवाद प्रदेति " मिण्ड छेल्ड मणे कहि इः व कार्त, " অস্থতাপে দৰে বলি বালাল ভাতায়ে "মরক কুওেতে দেখি সতত পতিত, कि जांदर वन ता मन देशन विदिछ। " র্থামোদে লক লক মুক্রা বার হয়, " युकार्या किल्ही मिर्ड कृष्ठित समग्र। " जुकार्या माहाया करा वह पूरत बीक् " ज्रुकदाम थड़महरू मिरिया ज्याक् ! া ধন্ত রে সভাতা তোর চরণে প্রণাম, " जुलिए कउंदे भाग नाहि यात्र नाम। " महरतन मणा जात ना बान हिसन, " नदीत निश्द डेर्ड क्लिंड कीरन। " ना ब्राटा कर्नन जात अमन महरत, "ন্দ্রার সভাতার যাবে। দেশভিরে।" (मध (र शांठक ऋषि माहन नज़न, বাজালি বিষয় পাপ ভগ্যমি দুৰ্শন ना कहिन, जांद्र श्रांम ना शांचेन शान, সরল অন্তর বার শাহি দ্বুবে ভান। **अरह ७७ दशीलन मोहानद्र शान** शिल शिव्रवांग वटहे स्वयाद्य वजान र्द्धारकूर्क गठउ इक्द वनिछ। কৰি কাছে পরিজাণে কি কর বিহিত। मर्गन चत्रभ त्य व्ह कविसन यम, ৰাতে প্ৰতিবিদ্ব পড়ে মান্স গঠন

অপরেং, তথ মন লুকাবে কেমনে ? मत्नावित उव शिष् मानम मर्गरन कवित्र हरिष्ट् जमा, लूकाबाद नत्रे, कवि दूर्य उव जाव या छाट्ट कनन ! नाहि रान करिक्कान अशादात मानि, ति । कार्य क्षि भन्न अवर्ग। ওছে ভণ্ড সুধীক্ষন তোমরা ভয়াল, जुना ७ जशस्त्र कहि उठन विठान। गएकांश अञ्चलात एपि कान कतन, প্রকাশ আহ্লাদ হুমি তোমার আননে। অভারে চিত্তহ স্থু তাঁহার ধংসন, কার্যা পণ্ড হবে কিসে তাহারি যতন। প্রকৃতি প্রদত্ত যদি কবিছ শক্তি ্দেশহ কাজার তুমি, হুঃশে ময় অছি। हिए मत्न श्राडिकाल जाँशात छेट्यूम, সদা ভাব কিসে হবে তাঁর বন্ধু ভেদ। স্থাজন কাছে গিয়া তাঁর নিন্দা কর, বাসনা হইলে সিদ্ধি প্রফুল সম্ভর। उश्मि भक्डि उर अमनि धरन, दू (अ ভाব ত वन क्या नतन। मिश्ठ हिराताचीना श्रुकूल कमन, তার মধুছানে কিন্ত আছে হলাহল। পণ্ডিত বলিয়া সবে জানে হে ভোমায়, করি শত দণ্ডবৎ পাতিত্যের পার। निष्यत कमला नाहे किছू निविवास, নহ কি হে হয় হলে অন্তে গ্রন্থার।

कविदत छेदमां इ.स. " इ.स. एटल" (बाटन নাৰিক নিস্তার তব কবি নাছি যোগে। श्वादत ज्ञामि जात प्रतान धानाम, না করিতে পার ছুমি নাহি ছেন কাম। अरत ता ख्यामि पूर्व क्षाता जामात হৃদুক্ত, অন্তর কিন্তু বিষেত্র আধার।

[505]

সপ্তম সর্গ।



"Beauty is Na. hre's coin must not be hourded, But must be current; and the good thereof Consists in mutad and partaken bliss, Unservery in the enjoyment of itself." Cowns

How beautiful, if wrow had not made Sorrow reste beautiful than County's soif Krais,

টিপির টিপির নীর পড়ে ঘন হ'তে, इब निएत इरेक्स इलि याग्र भएथ। वर्षाः भन्नीयाम कर्माम भृतिज, গমনে শ্রীর ক্লেশ হয় যথোচিত। চরণে কর্মভন্ন সিক্ত গাত বাস, পঁতভিল দোঁহে এক গৃহছের বাগ। पृह्लामी यर्थाहिङ कति समामन, ৰসিতে আসৰ দিল প্ৰফুন ্রাপকথম পরে করি তিন গ্রহামী পাতি কর করিল গ্রহণ হুই শত রোপা মুদ্রা সহাত্ত অধরে, थक्त ना इसं (करा द्वीका शिटन करत ? युका छिलि दौंधि रात्मः मह शुरुक्त গৃহস্থামী কোথাকারে করিল গ্রাম। इरेंगे मानव मंत्रा त्यामा मृत्ति नव धारविमान मर्गिक्षारम विभिन्न ভिত्य। जर्भत्र मान्य श्लैम यांची इट्ड हिंग. একটী মনুষা গৃহেছ इहिल কেবল।

পরমা রপদী নারী ছটা তারে পরে, প্রবেশ করিল দৌছে বাটী-অভ্যন্তরে। তারি মধ্যে এক নারী বদি দর্লায়, সম্ভাষি কহিল অন্তে এরপ ভাষায়। " उत्ना उत्ना थानमहे ध जात कमन, "না করি দর্শন যে লো কোন পুরজন। " কোথা গেল তর মাতা ভাই ভগ্নিগুলি, "বাটীর বাহির কডু নন্ যিনি ভুলি।" अनिया श्रामिया करह जाश्र कामिनी, "গোরাছেন নিমন্ত্রণে বালীর গৃছিণী। " বাদীর বাহির আজি নাহি হ'য়া যায়, "নিমন্ত্রণ রাখা সই আজি শোভা পার ? "निमञ्जर्ण यारेवादत कतिल वांत्रण, " (कानगढ़ ना कतिना निरम् अवग। "এদো সই তাস খেলি বসি ছুই জন, "তাস যে তোমার কাছে ছইল স্মরণ। "किहूकंग रामा महे हुए जानि जान।" এত বলি গেল চলি অপব্রের বাস। रागित राश्ति जानि राधिन कवाहे, मिथ स्थी-सम भटत किव। इत नाहै। लाठक महनम वाणि-अखाखत्त्र, প্রবেশিল কোন জন ছত্ত্ব শিরোপরে। কেৰা এ রমণী আর কেই বা এ নর, জানিতে উৎস্ক অতি স্থোমার অন্তর। পরিচিত ছুই জুদ নিকটে তোমার, ভন প্রধী-জন দবে রভাভ ইহার।

रमली (माहिनी जांत शुक्य कोरन, বাটা যার মোছন-ভগন-সরিধানে, माइएमव अजित्वमी मिन अजिशासा যে কণ্টিনী চলি গেলা আনিবারে তাস. মনোরম। নাম তার, হয় কি বিশ্বাস মেডিনীরে মনোরমা আনিয়া কৌশলে मिः इयुर्थ प्रभी किलि भाना प्रति इरल : (माहिनी-इतिनी धरिवारत अहे कैंप्म। অর্থই প'ডিলা এই যত প্রমাদ। বসন্তকুমার জীবনের সহচর (को भारत गाधिन अहे कार्रा छहत्रह। मत्नादम् वर्ष निया है। का छड़ भार, क्रिन छ। हार्द्र स्थि अकार्या मध्य ! দত্ত অর্থলোভ ভোব চরণে প্রণাম, না কথিতে পার ভূমি নাহি ছেন কলে। তোর লোডে কত নারী পরিহাই লাক. জলাঞ্জলি দিয়: বাংশ করিছে : ক:জ। নারীর স্কৃত্য গ্রু স্তীর-রত্র-পরিভ্রম্ভ হয় ভোর প্রাপ্তে প্রনোভন। **গত্ত অর্থ তোর লোভে ক্ত** ১দীজন, माधु वावकारत थानानिएक नमर्कन। তোর উপরোধে কত বান্ধব স্বজন, আত্মীয়তা ব্ৰুতায় করিছে বৰ্জন। তোরি লোভে রে পাপির্চ নারী মনেরেয়া মথী ব্ৰহার তাজি হইল অধমা।



कौवधनक मधी देमटलांत्रमा! भाकिमीत, म कि न। इरेन मृठी जिल्ला धनीत कुन, भीन, नड्या, खत्र, द्वःथ कहि कारत्र, ধনা রে পিশাচ অর্থ সাবাদ ভোমারে। ह्यांग्र औरन पिट स्याग जागउ. বাহিরিল গৃহহাতে প্রকুল্লই ক্ত। ব্যাধ যথা নভশ্চরে হেরি নিপতিত, জানায় মাঝারে হয় মন বিক্সিত। পরে গুটি গুটি গিয়া ধরে বিহলম. विष्टश (वड्रांड (यन मधीर्यक वस। বাহিরিল গৃহ হ'তে সেরপে জীবন, গাশকায় উড়ি গেল মোহিনীর মন। মোহিনীর মনোভাব পাঠক কলন চিন্ত মনে একবার, পার উন্তাবন ক্রিতে সে ভাব মদি—কি কছিছি আমি গ (म जात कि शूक्रक इत्त जिल्हां भी ? महलक्षमश माशी পভिত्रका नाही চিন্ত গোল্ডাম্বা মনে অনুর ভোমারি অধু সক্ষ ব্ৰিক্ত মেছিনীর মন, (माहिनीत मरना जाद हरता कि उभम। হে পাঠক সভাদয় নয়নে ইকণ করেছ তত্ত্ব কি কোন রমণী-রতন नक्कामीना कृत्योदना विश्वा विश्वान हृद्ध यद अक्किनी किया, मधीमान जनवाम विष्मािष्ठमा श्रीलिक योवतन, ना एतिया विद्यामिनी बद-आशमद्य।

इसकारल स्मी इतन श्रूक्य अश्र জাদি উপস্থিত যদি হয় সুধীবর, नकाभीना (म स्माती कि करत उथन? किशिष्ठ नुकार धनी अमृना योदम, ঠাহরিতে নাহি পারি বাস আকর্ষণ করিয়া কোমল করে করে আবরণ লজ্জামাৰা মুখণানি কিন্তা তত্থানি, ঢাকিতে কেগ্ৰন বক্ষ মনে অভ্যানি निर्द्रारमम भूछ बर्ड ना शांव वगन, আবরিতে উভামান বাহিরে যৌবন। **6िट अध्य वदायमा পृथी इटल हि**द, প্রবেশে তাহার মধ্যে পলক আঁথির रा लड़िएंड, मक्कांगीना गाकरम मदरम ; ভবেত ধনীর রহে সরম ভরমে। বদি হে পাঠক হুধি রমণী এমন তব চকে করি থাক কথন দর্শন, তবে মোহিমীর ভাব পারিবে বুমিতে, নহিলে সক্ষম নও সে ভাব চিন্তিতে। অপর পুরুষে দেখি হঠাৎ সশুখে, আৰ্দি আশহ। আদি মোহিনীর সুধে। লজা ঢাফি লক্ষাশীলা পলাইতে চায় অমনি জীবন[']জাসি সন্মুখে দাঁড়ায়। জীবন সন্মুখে থাকি কহিছে তখন, মোহিনীরে মধুবাক্যে করি সম্ভাষণ। " আজি কি হুখের দিন মম চন্দ্রাননি! ' मश्मारवव मात्र वश्च मश्रुरथ जानि

" जीवन शविज इतना श्रीचल नहन, " मः भारतः मात बख कति मदम्म। "তোমার যৌবনরূপ চাফ সরোবর ''অগাণ অতলম্পশী করে থর ধর। '' পথিক তৃষিত আমি উৎক্ষিত প্রাণ, ' দেক আজ্ঞা বিগুমুখি করি নীর পান। " (र्घावन महमी उर राम छेनमन, ' তাছ(তে প্রকৃল মরি ও মুধ-কমল, " योक्'त भीन्यश-भाष्ट्र काल जारमानित. " ভবিত পথিক ভটে অ'নি উপস্থিত। '' আজা দেহ ইন্মুখি কৰণা প্ৰকাশি, " जिक्कि (ना शिशामा साइ, ७ (शाक् शिशामी।" जीवत्न मर्गन कति तम विक्रम छान, সাশকার উড়িছিল মোহিনীর প্রাণ। ভरका कथा जात खिन या धनी, পাণ্ড বর্ণ ছলে। মুখ সভীর তথন। माहिनीत मुथश्नि इत्न यन हिरु. প্রকৃত্ন কমলে বহু পেলে আকম্মিক। কিয়া যথা আধকুর গোলাপ প্রস্থনে लाशितम शक्क सम नात्म (नाइ-७८०) क्करात हिट्ड धनी थाकि सोनी इत्त, দে চিন্তা অন্তর পুনঃ ভাবিয়া হৃদয়ে পাছে হুষ্ট গাত্ত স্পর্শে প্রকাশিয়া বল, ধনীর গৌরব জঞ্চ তবেভ সকল। ভাবি মনে বরাননা করে মনে ছির. क्व कथा अत मान या देलहा विधित।

কহিতে থাইনা কথা কথা নাহি ফুডে लाशिन विषय धाँथा (याहंग-वश्दरः कर कथा वड़ करहे. त्याहन सम्बर्धी, ল জাবতী সাধী সতী লজ্জা পরিছরি। " ওহে ভাগ্যবন্ত মর তব কলেবর, ি নিরীক্ষণে জ্ঞান হয় দয়ার সংগ্র। 'হেন দেহ মধ্য হতে কাক্য বিষ্ময়, " अवर्ग हमिक छैठि ध सम क्रमश् " এ দীনার সতীত্বের পরীক্ষার তরে " বুঝি এ নিষ্ঠুর ভাব পরেছ অন্তরে। ''নতুব। মন্তব নয় এ বাক্য ভোমার, ' বারিধরে বিষধারা বিশ্বাস কাঁছার গ " कति गङ्ग विभि मिथ तमगी क्रमारा ं शूरेल अकी धन या उटल जूबाता " नाडी कक्छे-स्थानमार्स अहे म जूरतन, " যে জন্মে নারীরে হুধী নারী বলি গণে। " म धानत अखिशान मञीव-तटन, " দে ধনের কাছে কোথা কাঞ্চন-ভূষণ, " রতনে খচিত গৃহ ভূষণে ভূষিত, " চতুর্ভিতে চাকচকা চিত্ত চমকিত, ' রজনীসময় যবে শোডে দীপালোকে, " নছে প্রীতিকর তাহা কোন্ নরচোকে। " নির্বাণ করছ দীপ শোভা অন্তর্দান, " কোথা রত্তরাঞ্জি-শোভা ? স্থ্যা প্রস্থান। "তক্রপ রমণী-ছদি পূর্ণ গুণরাজি, '' সতীত্ব-দীপ্তি বঞ্চিতে, আঁধার বিরাজি।

"ভূষণে ভূষিত গৃহ ভাষ্ট দীপালোক, "যথা অন্ধকারময় তমঃ হেরে চোক। " নারীর অন্তর জেনে৷ তেমনি আঁধার " দতীৰ আলোক নাই হৃদয়ে যাহার। "থাকু না সহতা গুণ এ গুণে বৰ্জিত, " কে করে গণনা তার ? সব অন্তর্হিত। "শুন হে প্ৰযোগ্তম এছেন রতনে, "হইলে কামনা তব পাইবে কেমনে। " कतिया औधात क्षि, এ अमृना धन " প্রদানিতে দক্ষ হয় বল কোনু জন। " বিধিদত্ত হেন ধন ত:জে ঘেই নারী, " কুলকলঞ্চনী জেনো অভিধান তারি। "দে ছটা করিতে কম মকল করম, "বিচার নাহিক তার ধর্ম অধরম। " এ ছফ্ট কামনা তব কর পরিছার, " সামাত্র হথের তরে হেন অবিচার "না করহ কভু তুমি কহি সৰিনয়, , " धर्म-धन महाधरन कति विनिषय, "ভগ্ন কপৰ্দক সহ ন। ত্যক্ত কখন, " ভগ্ন কাচে আশ। তাজি হীরক রতন।" माश्नीत राका छन् जीवन उथन, करह कथा हानि हानि विकानि मन। " শুন লো স্থন্দরি, নারী তুলাবার তরে, " পুৰুষে মিখ্যা রচন । পুত্তকাভ্যস্তরে '' করিয়াছে শত শত, বাক্য প্রলোডন " প্রােশ করেছে কত কে করে গণন।

' কিন্তু দেখ শশিমুখি ভাবিরা অন্তরে, " পাতিব্ৰত্যগুণ গণ্য কি জন্ম ভূ-পরে।

'' অকার্য সাধিতে নর কত্রই কৌশল

" तित्राहि अस्मर्था कि कर्ड मकन?

" চিরদাসী নারী-জনে রাথিবার তরে.

"नाना छीटः अनर्भन कतिशाह नत्र।

· যে কর্মে উপজে মুখ সে কর্মে পা^ক ?

"কহিতে আসারে হাসি, একি মনস্তাপ।

"পুৰুষে অপর নাবী ভজে কত শত,

" সে সময় নাহি পাপ সে যে আছবত।

" সামুমুখ ভরে বাস্ত জাটাগাটি পরে.

" জাতি কি অজাতি নাই সে যে আত্মতার।

" সারও দেখ চন্দ্রাননি করিয়া য চন,

" विधि गंठनिल छात त्रमगी-त्रज्म।

"তার স্কুমার অলে মাধ্র্যা মাথিয়া.

"তার স্থকোমল করে মধু রদ দিয়া।

" भीनार्यादानि-मश्युक्त अक्त जानत्न,

"मिमारेशा मधुत्र गुक्तिन। विकरन

" প্রকৃতি হৃষ্বী, রূপ দেখাবার তরে,

" আবরি অবওঠনে ক্রামা - সুধাকরে,

" गृहमर्था लुक्:शिंठ नर्ह 'थाकिवाद्य,

" मि मिमर्रा किना कन कह ल। आभारत !

" अकूल अञ्च मर मिन्या जूनना,

"কিছুক্ষণ শোডা দিয়া শুন লো ললন।।

" विश्वक इरेग्न। जये रग्न स्टामाजन,

" কে করে আদর তার এই সে ভুবন।

"যদিন আহে যৌবন লুঠ মজা ভবে, " ছ দিনাত্তে যোঁবনের চিহ্ন নাহি রবে। " योजन बूद्धां मनुष ना कतिरल वाश, " दाथित (भेठक मर्या किन् म्लामत्। " অর্থ আর যৌবনের না করিলে ব্যর্থী " পাকা না থাকা তার একি লোকে কয়। ' অভএৰ চন্দ্ৰাননি কৰ্মণা প্ৰকাশি, "জুড়াও সন্তপ্ত চিত্ত সন্নিকটে আসি।" এ হেন দাৰুণ বাতা শুনিয়া মোহিনী नाशिन क्रमग्र (यन बार्ड जर्जाक्नी। মুখে কোপ প্রকাশিয়া আশহা জনুৱে. मधाविन अहेत्रार्थ (महे प्रके नाइ। · কহিতেছ রে লম্পট সতীত্ব-রতনে ' अवसर्या भेषा सर अहे स्त कुनरस। " তোমার কামিনী কেছ যদি এইরূপে " চেফী। করে ড্বাইতে ভ্রতভার কূপে। ' ভোমার অম্বরে ভবে উঠে কিবা ভার' "ভাৰ কি বাসহ তবে অসতী ষভাব " তোমার কামিনী হৃদে ? উঠেনা তথন "তৰ আনন আকাণে মলিনতা খন **৷** " मस्छ-नियोग-सफ नाहि वन होत्न " সুং-তৰু শান্তি-লতা অম্বর-উদ্ধানে ? " नामिनादत म लम्भाष्टि नामना-विद्वार-" নাহি দেয় দেখা? গরজি তাহে কিভুত '' ঘোর ক্রোধ-বঁজি কণে ফণে নাহি ছালে? " विशाम गैत्रल-त्रिके रेश्या-वैभ जल

" প্রতিক্ষণে নাহি করে? করিবারে কর " रेपर्धा-वीम । क्ठ. जीवे अमरत जैमर ''ইহা ভিন্ন কে করে গণনা সাধ্য কার? ''তোমার রমণী ভ্রম্ভা হইলে ভোমার " কিখা বুঝি ও অস্তরে নাহি হয় জেব্ধ! "তোর হুদে সুখরাশি উঠে হয় বোধ। "করেছিল্মনে তুই পাইয়া সুযোগ '' বাসনা করিবি পূর্ব ? তোর স্থধ-ভোগ '' मज्थ कतिति जूरे अहे भवकारण ? ^{প্} দুরীকৃত কর্তোর হেন **ম**ণ্ আ**শে**। " প্রাণের অধিক ভাবি সভীয়-রতন, '' বাধিব কি এই প্রাণ বিয়ে গৈ গে ধন দ "ত্যক্ষিব তথনি প্রাণ মবে তোর কর " পরশিবে এই অঙ্গ শৌন্রে পামর। * কাজ কি জীবনে ছার সতীয়-বিহনে ? "রমণী-ছদয় খুঞ বিনা সেরতনে।" माहिनीत कथा ख्नि कीरन-जन्नात ক্রোধ-রাজ্ব সমুদিল কাঁপি ধর ধরে। बाह्य यथा धानिवाद यांत्र सूर्यकंत्र, সেরপে প্রদারি চলে ভার যুগা কর। एक गङ्गात करत्र मर्गन श्थानिधि, ब्रोड यटन श्रमादि जानन। ममर्गन कतिशाह हसामात मन्। माहिनी इहेन किंक त्म क्रि विवशा। अमातिक अकं कात भरत, भरत मनी, ट्रिन काल इत्ना चारत गंग सन सनि।

मीर्थकांत्र मत धक छालिया कवाहे, धारविमन वाणि मंदश माति मानमाछ। ममल भंदीत जार्थ कार्ण बत बह. कैंिन अभन ७ के मस कड़मड़। त्रावं क्याप्ति हत्क हाहिन मानत, माहिनीत स्थतानि, जीवरनत जत, করিল যে উৎপাদিত; দিবা-চক্ষু যথা দিবাচরে দেয় সুখ রাত্তিচরে বাখা। वहन उर्भना भारत कतिन मा जन जीवत्मत भारत हाहि; स्रभा विविधन (यह ब्याहिनीत शक्कः: गतम निक्रम (মন্থ্র-ভারতী-দতী-আটে-বিনোদন) मिर की वन अस्ति आहा कि मामर? কঠোর বচন তার জালি দিল দেহ। 'भाषिनीत जार्था कांत्र हानम म नद्र, ञ्चर्थ अरविभिन धनी व्यापन व्यवहा হে পাঠক সহ্বদয় কেবা এই নর, জানিতে উৎস্থক অতি তোমার অন্তর। কেমনে এগুপ্ত কথা ভাবণ গোচর হইল তাহার তুমি জামিতে তৎপর। শুন তবে ফ্রিজন রভান্ত ইছার, ত্রবৰে ভোমার হবে আনন্দ অপার। দামিনীর বাদী তব ছয় কি শারণ ? मामिमीत कथां जिल्ला अरे कम। वमस मधन शंन नाशिजिनी - वारम, नाणिजियी हिना गध राण छेणहारम

थर्ड श्रुक्टरक मत्न ; मिहे मि कार्रात. तमास मामिनी-मादा ना मिन आमन। मामिनीत महिशात्न हकाल मकन শ্রবণ করিয়া তার চিত্ত সচঞ্চল আছিল অতীৰ জেনো, হইতে তথন गत्न मत्न मिक्कान हिला अहे जन। মাধৰ ইছার নাম মন্তপ।রী ছোর প্রেমালাপে দদা রত রক্ষ্যুদে ভোর। মোহনের একপাঠী, সরন ১ অন্তর বিছাধনে আস্থাহীন সুধু সুখচর हेल्फिश स्ट्रप्थत मनो, श्लाना मन-मात्र, माहरन वानिएं जान कुना नाहि याते। মোহনের পিতা শুনি এসব রুতাস্ত উঠিল ক্রোধাগ্নি ছদে যেন রে কৃতান্ত। मत्नात्रभा-वार्ष करक कतिया उर्कन, " দেখিব রে ভোরে বেটা ভুই দে কেমন। " রাজ-খারে অভিযোগ কলাই করিব, "ছদিনান্তে আমি ভোর গৌরৰ ভালিব। "যার বলে হইয়াছে তোর এত বল, " मिथिव कड मि जोत्र आहि धन वन। " ভिটা-माने अक ठानि ज्ञात निव करत्र, ''একর্ম-কর্জারে লবে। স্থদ জীঘরে। '' দে হংথী বাদাণ শুনি কথা এ সক্ষ **च्या जन ज**ड़मड़, हिंख महक्ता **ভয়েতে इ'द्धा विस्तृत (मरे नीन नह,** কহিল এ সৰু কথা জীবন - গোচর।



জীবন আশাস বহু প্রদানিল তারে. ভীকর ভীকতা ভাঙ্গা আইনে কাছারে? হে পঠিক সহদর হর বি অরণ ज मिन इकिन दिन विदि विदियं। इत हिनित हिनित संमुख निवम, নিরবিয়া প্রকৃতির মূরতি বিরস, कात ना गांनरम इत जालक छेमता ! নভন্তলে মনাবদী পৃথী তমোময়। निविक नीजममान जाम्ब गर्गन, টিপির টিপির নীর তাহে বরিষণ। मर्था मर्था वरनार्शात स्थल मोन्मिनी, भर्या मर्था गेद्रक्रिष्ट् चन कामित्री। मधाक्क ममग्र मद्गा यन आविङ् छ, निदीक्त करम डेर्फ डारना अहु। পিপীলিকা পেরে পক্ষ ডানা প্রসারিয়া, चूंब भरश मरल मरल विकास वृद्धिस्। ্বায়দ বায়দী বদি তৰুর উপরে, छेড़िছে विगिष्टाह वास्त्र छेमदबब छदब। शक्षां अ भिशीनिका धरत करन करन পরকাণে বসি ডালে নিযুক্ত ভক্তে। স্থার বিহণ: পক্ষ শোডা চিকণিয়া, वित्रवर्ग कर्छ जुन इः वित्रविद्या। छेटेकः बरत रछकगरन करत्र कनत्रन, मह्त मह्ती नाटक शारेका छे पता रेखेक निर्मिष्ठ हात्म याति शब मित्रा वर्गात मनिष्ठ छल वर्ग मूड़ारेशा।

मिवम - वर्म "किर् ठेरिकिट नाद्य, সদ্ধা সমাগত পরে হলে। একবারে। अरक जारामश निमि जार घनमन, আক্ষম সম্পূর্ণ করিয়াছে নভস্তল। मश्रूथक बख जाँथि तिथिनात नात, নরকুল অন্ধ্র যেন ছইল জাঁধারে। कर्ग कर्ग क्रमधा (मश्रीहर्ष क्रभः, তমঃ তায় ধরিবারে একান্ত লোলুপ। প্রসারিয়া কর ছুটে ধরিবারে তায়, যন পার্ষে দোদানিনী অমনি লুকায়। ওড় গুড় ডাকে ঘন শ্রুতিমিষ্ট অতি, গগনে ছইছে যেন দেবের আরিতি। মুচাক খদ্যোৎকুল বেড়াইছে উড়ি। পৃথী'পরে পড়িতেছে যেন বান্ধি পুড়ি। কিখা জ্ঞান হয় তারা হইতে গাগন থসি পড়িয়াছে তার! এই সে ভুবন। नित्रिंदिङ मान्दरत भागविक मन, রজনী সময় যাত যোগ আগমন। वामनात विভावती वज्हे मञ्जात, যাহাতে দাম্পতা ত্রথ উথলে অপার। वाश्तिम गर्ज इट्ड मिलाइत्रगन, নিজ নিজ **খীছা** তরে ভ্রমিছে কানন। হিংঅজন্ত সিংহ, ব্যাব্র, ভল্লক ভয়াল, धितत्रा छीरा पूर्कि ज्या यन कान। পৃণীন্থিত সৃষ্ট জন্ত মধ্যে কোন্ জাতি, ধরে ভয়ঙ্কর মূর্ত্তি যবে আসি রাতি? ্র্ন্ত নাছিন কোৰা। ইন্স নর্গ। এ প্রেশ্ব উত্তর দিয়াৰ বল কোন্ জন ? ति के के कशान माति, उन कि किमान অভিধান তার পাবে এই সে তুবনে। शूहे शूहे अक्कात हिन् हिन् नीत, नम्भरहेद कि ऋरगंग भाठक ऋशीत। जतन-धनशा नाती मकावात जत्त, পরিকর বাঁধাচাক চাক যঞ্চি করে। मस्रक डेकीयर्गाङ। हामरत निर्विड, সীধুর হুগদ্ধি কিবা লাম্পটা বিহিত। य-डेक थाहीइनद्रेश्वतक डेझक्वन, व्यापित व्येडिया गत्न निकृत्त मिनन । পরে कांদে পড়ি লাভ পাছকা প্রহার, এর সম মজা কিবা ভবে আছে আর ? कामिनीकून - क'छेक कून - कनकिनी कामिनी काशांत्र गाँदें इत्य डेमानिनी, **ভि**ত্তि थाएं। स्था काम करत धनी, नहन-इादिनी क्रि नक्का (म क्यिनि। कान शाम मिन्न हरेह वारित तिक काष्टिवात जरत मानम अधित। वह अममाधा अर्थ वह निवरमत्, আছুসাৎ একবারে না পাইলে টের। অৰ্থ অধিকাৰ স্থু অপৰাধ তার, धत मम ज्लाताथ किया आहर जात ? কোৰায় রাতির দক্ষ্য বাহির সদলে ভয়ত্ব एकि धति क्षांति मन्त,



পড়িছে ধনীর গৃহে গৃহ লুঠ তরে, কাটিছে বিদিছে তার নিষ্ঠুর অন্তরে। কিবা অপরাধ তার। জাননা পাঠক ! क्र श्रीम अधिकां क, ना याद मखक ! धनीत मछक सुदू याटव वर नग्र দস্থা পাবে অর্থ রাশি মজার আলয়। ধন্ত ধন্ত নর্মণ ধন্ত দিই শত, কোণা হথ ছান আছে বল পৃথী মত। मश्राम मामव मम जक (करा आदि? আত্তহৰ তরে নালে কে বল পিতারে? निभीधिनी इथइत निस्क पूरन गरधा गरधा खग्नवांगी नेक निश्जन। मर्था मर्था मिया जीउ करत कमहर, পল্ল-পদ্ধিন-জ্বলে ভেকের উৎসব। मर्पा मर्था विवानन जारक छेरेकः खरह, नान क्रथ छारु छारू बाना कारकान्द्र। রজনী ডিমিরারতা সময় এ শ্বর, উদ্বেশ করিয়া তুলে শিশুর অন্তর। শিশুর ভালিলৈ খুম এর মাঝে মাঝে, আপনি আশহা আসি সে হুদে বিরাজে। जमनि जानि धरत अनुनीत गन्।, বক্ষে তুলে অমি তার জননী সরলা। সুকোমল শুন ধরি মুখে দেয় মাডা, তুড়িতে শিশুর•ভীতি সে এব্য বিধাতা मृजिना त्रमण रक्त, मार्ट्स इंगे काज, <u> निखत जानका पूर्ड, शास्त्रंत का संख्रा</u>

् निगीधिनी इथरत निस्क पूर्वन, मतन गान्यगणः, निकातः, भगनाः, মোহন-আবাদ বাচী হে পাঠক জন, তোমার মানস চক্ষে কর দরশন। मण्डन मञ्चा करत खुनिত मण्डन, আর দশজন করে বলে তরবাল। কাল মিসমিদে বর্ণ দুখ্য ভয়ত্বর, क्रिक्ट मानक्क दौंधा शिक्तिता. गाँदा नक्ष जृपि कन्श शमबात्श याद्र, हरूकात, भंका कांत्र विंद्ध कर्वात। मानगांहे, कांहे कांहे, ठांहे (मधि जन्न. धन धन, नकस्य, शर्का धर्का इस। ভনু ভনু, সে নিশ্বন, প্রবণে যঞ্চির जब काँ त्था, याद मात्था, मानम जब्दित। बेहेत्रार्थ कृष्टि अन मञ्जा छत्रकद्र, ষেরিল মোহন-বাটী কণেক ভিতর। करत्रक कूड़ानि श्रांत छानिन कराहे, व्यातिमन वाणि यद्धा मात्रि मानमाछ। প্রভূ-পরায়ণ ভূতা হুটী সে বাটার, রক্ষিতে প্রভুর ধন দিল ছটা শির। পরে দন্তাগণ গিয়া পড়িল দে হরে, যথার মোহন-পিতা ছিলা নিজাভরে। আকর্ষণ করি কেশ বাছিরে আনিল, অপ্রাহাতে হিন্ন ভিন্ন শরীর করিল। অক্সামাতে শিরশ্ছেদ করি অতঃপর, अरविन भारिनीत ग्रह - जाकासता

চাহিল দহারী তার বাস আভরণ, হৃদ্ধী মোচন করি আপন ভূষণ निर्क्मिति क्रुगंगर्धा मञ्जाभंग - कर्त्र, পরিধিয়ে চীরবাদ ফেলিল অন্তরে सम्मत दमन जात कांनि शत शत, জ্রীজন-মূলভ শঙ্কা শুকালো অধর। मर्किय इत्र कृति (ग्रंस प्रश्नागत. তৈজসাদি না রহিল অর্থ আভরণ। यामिनी थाङाङकतम, डेर्डिन कन्मन মোহন - পিতারে শব করি দরশ্ন। त्माहन-जननी कांट्र विद्याद्य প्रित्न, म जन्मन अभि हिल कात इसंखित? মোহিনীর গওদেশ অশ্রহণরে ভানে, क्रमग्र विमीनं खिन म प्रःथ धकारम। হে পাঠক হুধীবর, করেছ দুর্শন মোহিনী প্রকুল আতা হলে। কিছুক্ণ। कत मन्दर्भन थार कि मूथम छन, বিষাদ বসেছে তথি চপলা চঞ্চল। यन छलना छक्षन १ काश को मामिनी लारग मि मिंग कारह। धरत ना मिनिनी উপযান मে রূপের জেনে। সুধীবর, द्रमती त्रमगीनिधि जान्न छे शत, वियोग विगटन भटा भाकि जिः शामन, ठिक यन श्र्याकरत कमक मर्मन। ঠিক যেন অলিবর শ্বেত পদ্মোপরে र्ठिक (यम जादा ल्गाएड जाँचि-इन्हीब्द्र।

394

ठिक रचन कूँ हे करन का निमा मर्नन, ঠিক যেন শিশু চক্ষে কজ্ঞান শোভন। कृतनत्माहिनी ज्ञभ अत्क मार्नीकः विशान विभित्न उथि कांत्र मन चित्रं? षाल्यनास रवनीवद शर्फाइ धनीत, जानत्न छेट्ठेट्ड गिशा नकन कथित। চম্পক - কুমুম - বর্ণ একে আমনের, রক্তিমা সংযোগে যেন বর্ণ গোলাপের। ক্ষীত সে মুধমণ্ডল ক্ষীত কাৰিছয়. ग्राप्तरम् ज्ञाभाता मत मत वज्ञ। मिन्द्रा-मागद्र यन इट्ड विकादित, কচি ভরে ভান্সিতেছে মানদে প্রতীত। वाकम धमन काल वांजि अভासात, সেও অগ্নিভাপ পেলে কিবা শোডা ধরে। (महिकना नित्थिएंड कडरे क्रेंगिड. ति जात्रे धारा मिन्द्री विकेता कि जाक्का (इ शांठक उदन (इ दनना, তাপে क्रथमत्री करव क्रथमी मनना। मिन वमन हीत मञ्जामक शति, পদ্মিনী রহিছে যেন শৈবলে আবরি। यायम स्माहिनी क्रथ धक्छि मडीव, क्टिनिका छाकि यम गत्न दश हित। कुमती बम्गी आंत्रा विगत वियान, शुक्तक जीवि शक्त रहरे ध्वाम। আমার ৰচন এই সতা কি অদীক, शांक्रक मझनश्र भेरम जान ठिक।

शिक अञ्चलता व्यवनी यादाव সুন্দরী বলিয়া গণা পদ্মীকা তাহার **धकवात** कन्न जुमि, कामा ज नमंगी, বিষাদ রমণী আত্তে শোড়ায়ে কেমনি, জানিতে পারিবে তবে হে পাঠক জন, অভভৰ সে ভাবের সম্ভব কণন ? সর্বাথ হরণ করি গেছে দস্তাগণ, খাণ্য জব্য কিছু নাহি ছিলা সে ভবন। श्रुक्तन काठाइन किंदा जनगटन, হঃধানুদ জঠরাগ্নি শুকালো আন্দে। मत्था मत्था छेठिन तम जन्मत्नव त्रान, ব্যাপ্ত করি দিল দেশ ভাকাতির ঢোল। লোকে লোকারণা হলো অন্তর বাহির, প্রতিবেশীগণ হলে। শঙ্কার অন্থির। नाना लातक नामा कथा करह भरा घारहे, নাহি অন্ত কথা আর দেই পল্লী ছাটে। এ ডাকাতী-কর্ত্তা কেবা হে পাঠক জন ? कॅगिरिंव उव इत्या कतिर्म अवर्ग। পার তুমি করিবারে এর অহুভব? 'मांत्रिरक्न मर्था विष काथात्र मखन। कीवरनत कार्या धर स्म प्रशेखन, यकार्या माथिए अर्द की भने मंद्रन। নিজ ইলটিয়াল ধরি দন্তার আকার, गर्सनाम कतिरमकै याहन (बहात। জीवन यमि ना এই করিত কোশল, কেমনে কামনা সিদ্ধি হতে। ভার বল।

े बाजवात्त्र जिल्हांग इंट्रा श्रवनिन, े शिष्ड के आन-कारन यथा जारन मीन তবেত জीবন, তবে তাহার ১নন इरेड भूग कियान येन स्थी खन। · অভের জীবন ४१म निक स्थ তরে? এমন স্থিত কাঠা কোথা পৃথী'পত্র। অক্সের লইয়া শির প্রমোদ ভুঞ্জি, এছেন মজার কার্য্য কোথায় পাইব। **पर्श्वत**्महेत्रा भिन्न शास्त्रा व्यवदानि, কহিতে এ স্থ-কথা মুখে আদে হাসি। খেকের লইয়া শির তাহার রমণী. कृषिव भेद्रमानत्क (म स्थ कमिन्। কাড়িয়া অন্থের জমি হবে নিঞ্ক বাটী, কোথা পাৰো ভবে হেন স্থ পরিপাটী ? **अत्यक्ष इरेटक द्वाम निक स्थ उ**दा ध रहन मजान कथा काथा भृषी भरत। जुरुका कदिशा निका हरन निक यन, क्रिटन जस मकरन स्थू मात्र नन। किंद्रा भरिमाणिति भन दव आणि विन. रहेर जामि ठाकूत जात्म इत्र (छम्।, जर्ज म'रव जामि मिर्म अगोरदाकि उन।। वनश लामका वन वन वनगंग, আখার এ বাকাগুলি 'হুমিষ্টা কেমন। रम रम नद्रगंग ज क्यी सर्गं আৰ্ড কি নাহি জুড়ায় ? সুধা ৰয়িবণে

ভাদে नाकि उँव अल व वाका वर्गन ? (र्मिक एटनना अर्झ धाराका अर्थना ? তবে থে পাঠকুজন স্থীর জীবন, কেন না করিবে এই করম এমন। जीवत्व ना कह उत्व कडू मन लाक, করে থাকে ছেন কাজ বাহে জ্ঞানালোক।. পরিপাক বিভার্ম যার হৃদে হয়, ধরি থাকে হেন বঞ্চি তাহার হৃদয়। বুরিমান এ জগতে হয় যেই জন, এ হেন স্থকার্যা হয় ভাহারি মনন। क्रमारुवि वृक्षि यात वृक्षित्व त्रमत्न, কত সুবোদর হাদে সংক্রব ধংসনে। जीवन मञ्चात काशा कदिल (गःभरन, প্রকাশ্যে করিল ক্রোক ভূমি ধরে ধনে। মে:হনের পুরজন পায় **অ**রক**ন্ট**, (माहिनीत्रभगंधूर्या करम इरना जरे। যে মুখমগুল রূপে মেছিত নয়ন, म पूर्वामि मित्रीकर्ण कॅंग्राम्द्र कीवन। मिन मिन उच्च की वाहित भक्षत, প্রাণ ফুকরিয়া উঠে বিশুক্ষ অধর मुम्मर्गन कति, जात, वर्ग, नितीक्रात्, জান হয় পাংশুৰণ আবুরি আননে। পরশিলে যে শরীর হতো লোছোদয়, म प्रकृ कतिल हिन्न अस्त शारकमता। শনে মনে জ্ঞান ছেন যেন রক্তরাশি, -নির্গলিছে অভ্রুত্রপৈ চক্ষু'পরে আসি।

শরীর শোণিতজঞ্চ হলে। সে কারণ, পাইশুবর্গ আবরিয়া তাই সে আনহ। পরিধান ছিল যার সুধৌত বসন, মলিৰ হজীৰ্থ বাস পরি সে এখন। শোডিত যাহার করে কাঞ্চন বলয়. পিতল বলয় তথি আহা মরি রয়। ষে বক্ষে শোভিত চাৰু অৰ্থ কঠছার. পঞ্জর-আবলী তথি কণ্টক শোভার। বেণী পাৰ্ছে অৰ্থ-ফুল শোভিত যাহার, ধূলিরাশি রাশি রাশি উপরে তাহার। চিকণ পর্যক্ষোপরি যাহার শয়ন, ভূমিশ্যা আহা দরি তাহার এগন: চর্ব্যা, চুষ্যা, লেখা, পের যাহার আশন ; মোটা অন্ন এক মৃষ্টি তাহার ভক্ষণ। এ কষ্টের ছেতু কে রে ? সৌন্দর্য্য-রতন। त्रभी - गोम्मर्यात्रां कि करकेत कांत्रन। ধন্য হে জীবন দিই ধন্যবাদ শত, না করিবে কেন ভূমি কার্যা অভিমত। य माहिनी-त्र' लाएड कर हन काज. क्टा मध्य धकरात, शांत कृषि नाज । চেয়ে দেখ একবার মোহিনীর পানে. আনন্দ বিভৱে কিলা যন্ত্ৰণা প্ৰদানে। रम कि ना मम्। उव हाइ अकवात, रत्र कि नां नत्रा छव ? कि खब जायां । मना म कमन जारा जान कि जीवन? দয়ার যোজন অভে তোদার ভ্রমণ।

দরার মুখমউল পূর্ব অধাকর, দয়ার**় লোচনগুগ**় যুগাঁ ইন্দীবর। সরোকক ভাটা হটী বাত্ দ্বয় তারি, পদ হয় হুটা জ্বস্তুস্তের আকার। নবনীতভাভ সম অবয়ৰ তার কৌমুদী সদৃশ রূপ আস্পদ শোভার। (इन ऋकूमात जिल्हा यादात गठन। লৌহময় হৃদি কিছে তাহার আসন? বদি গৃহে এক দিন মোহিনী স্থানরী, अक्ट **बर्ट महम्बर अनारम कर**ही। শরীর নিতান্ত শীর্ণ দেহে নাহি বল, ছায়া মাত্র আছে অধু ধনীর কৈবল। হেন কালে অৰ্ক হন্ধা নারী এক জন আসি উপস্থিত হলে। মোহিনী স্দ্ৰ। কেশ গুলি অৰ্দ্ধ পাক বিউনি তাহার, ্ৰুড়ি মাণী তৰু বাঞ্চা মানিতে বাছার। ठम्मत्मत्र काँछ। इते ल्याट ठाक ভात्त, ইফলৈব পূজা চিহ্ন হরি হরি গালে। করে শোভে জপমানা স্পন্দন অধর, লড়ে মুখ লক্ষ বার পলেক ভিতর। यूर्वाकात्म ह्रम्मिन हिल् हृति जीत, কোটরে প্রবেশ এবে বিষাদে প্রস্থির। নাসিকার অঞ্জাগ খুতি বি্থাভাগ, ধরিতে যাইয়া চাক বাড়াইছৈ রাগ। অর্দ্ধেক দন্তের পাতি পড়িয়াছে খিসি, গণ্ডদেশ ভাবি ভাবি পড়িয়াছে বিস।

W.

্বোধ হয় যেন মহন প্রেনির্বচ্ডরজ, थार्यम करत्रह गिडी तारे गरे पंचा (वाध इश यन महन मिन्नर्ग-उत्रक्त. হেন আত্ত চড়া'পরে করিতেছে রছ। রক্তিমা অধ্র ওষ্ঠ তান্ত্রল ভক্ষণে, हूँ ि नारे आहि किहू शम धारकशात। তাই হে গাঠক স্থাি চলন স্থন্দর. দেৰি থাক পাবে ভাব তোমায় সম্ভৱ। श्रुर्थीं वर्मन थानि जाम श्रिशाम, **প**দোপরি বাস-শেষ বাম করে টান। **रहम भगर हिमा रहः** अठातित. তিরোহিত তাহা নাহি मनी পেয়ে আর। मिहे मि काइन अत्व धर्म-भाष मन, পূজাকানে পূর্বপতি শতেক অপন। এ হেন রমণী এক আদি উপস্থিত, মোহিনী अन्मती कार्छ वनन इमिछ। मिहिनीत शास हाहि मिछे मछायत. पुषिट धनीम मन छन्दुक अकरन्। " একি লো নাতিনি হেরি আহা মরি মন্ধি, " मागाइ श्रुक्ति थानि लोह अह धित । "कूत्र भंडमम मम याद्यात वम्न, " विश्वक नेबिनी मम म प्र भूथ अथन। " नव किमनई मंग कशान हिक्श " जिला-इन रंग कशारम करत्र इ कर्नना " তাই সপ্ত শিরাকারে চিন্তা-হল-রেখা, '' (चें छ भं उमन-मत्न की ग्रेट्यानी (मर्था।

" यात्रात कंग्रेकिशाटक अधात कत्रन, " সে দৃষ্ঠিতে হয় এতে বিষ বরিষ্ণা! " যে সেশিগ কান্তি ছিলা কৰিত কাঞ্চন, " লৌহমর জবে যেন তাহার গঠন। " गोलाल गोलाल बार गोलाल नहीं है. 'প্ৰথের কিবা কথা টলিত লাহীর भानग-भक्तज, अभ कति निहीकन, " সে শরীরে আহ। মরি কি আছে এখন। ''ভোমার ছঃখের কথা শুনি লো নাতিনি " তব **হঃখ দ্**র তরে আমি আকাজিকনী। " কেন এত কফ সহ মন বাকা ধর, " ভাষিতে ভ্র-সাগরে তোমার অন্তর। " गरनाहर अद्वोशिकः छेशस वम्हि " হইবে নাতিনি তব. সুখপ্রদ অতি। " मार्ग मानी मन जन '(मर्विटव छत्र), " भन्नीत खनियां किटन कार्कन-जूबन। "পরিধান পটবাস অভীব স্থমর, " আতর-গোলাপ-গন্ধে অন্ধ ভরভর। " চর্ক, চুষ্য, লেক, পেয় ভোজনের ঘটা, " मम मित्न बाहितित्व भूकी क्रथ-इछ। ; " এক জান ৰড় লোক তব ঐতি মন, " যাহার দৌশর্যা-রাশি কুর্ন নিরীক্ষণ " आमि तूज़ी मांगी आ कि खिल हेक्दा कति, " তোমার তো কথা নাই যুবতী স্বন্ধরী ঃ 🍾 इकांत्र वाका खबन कतिया माहिनी, তর্জন করিয়া কছে ঘনধনি জিনি—

" কি কহিৰ তুমি ইছা ভজির ভালন, " দিতাম নহিলে শিক্ষা তোমায় এখন। "ব্ৰাশ্বণের কন্যা তুমি এই বুদ্ধপা "কহিতে এ কথা হলো কেমনে ভরসা। " কি তুমি দেখাও বুড়ি অর্থ প্রলোভন. " কি ভূমি স্থাধের কথা করিসে বর্ণন। " যদি অর্থ রাশি পাই এ সংসার ভরা, " অधिकात मम यनि इश वस्त्रद्वा, "পূণীন্মিত যাবতীয় যদি নর্মণ " मम जाज्जाकां दी इ'रत्न ভारत मम मन ; " उथानि ७ की रन ना इम्र प्रकन, " স্থামেক সদৃশ রবে সভত অটল। '' দারে দারে এক মুঠি যদি ভিক্ষা করি, " তথাপি কি পাতিব্ৰতাধনে পরিহরি? " হজীণ বসন যদি পরি অক্ষোপরি, " তথাপি কি পাতিব্রত্য-ধনে পরিহরি ? "यनि এ क्रीवन किह नश थरका हति, " তথাপি কি পাতিত্রত্য-ধনে পরিহরি? " शिकृ तम नादीत श्रीति धिक् मिडे मेड, " তাজে যে সতীৰণনে হয়ে বুদ্ধিহত। 👑 " अक्ति हिन्द्रा यां इन्टि मधूर्यं, " जिका स्पेति देई है जान व कर्य विमूध " इंड पूर्वि अ जरिंद, केहि अन कार्रा, " बूज़ा कारन दिशों भन किছू धर्म शीरन।" नाहि शाम मिहे हका शब शमाबान, লক্ষাভাৱে জড়সড় কথা নাহি আর।

युवजी तमगी कि खुँग कि निम,
जीति महावि करह हरंत्र ममूथीन।
"खन लग माहिनिनिनि, कि छुछ कथा
"मान जूम हैद्दा खनि, विन वाका यथा—
"कि का धनी लांक लामा नहेवारत,
"भूगोहेरव भालिक मह मगी काहारत।
"नहेत्रा लामारत यारव ध्वकानिया वन,
"कित्रारह महे इसे 'छेलांग मकन।"
समती म कथा खनि खरा कड़मछ
नहेन कि की मानी मरक मछ वछ।
भनाहेन भिजानस्य छुछ छारव धनी,
खरार विह्वना हर्त्य माहन-त्रमगी।

अक्रम मर्ग।

"For when to the view
Forth from its rayen fringe the full chance fice
New with such force the swiftest arrow flew.
"Tis is the stake late coil'd who pours his length,"
And hark at once his venom and his strength."

Downess.

" অন্তি কাবাদেবি, তোমা করি আরাধনা विश्वा इहेल मीन शहिशा (मध ना সৌদ্রার অমূলা রতু, দভিতে যে ধন চির আকাজ্জিত আমি: অদুষ্ট কেমন মম ব্রিৰারে নারি, করিতে মন্থন क्रथा, डेर्क इनाइन जानाग्र जीवन। उव उद्भ कावारमिव, महि कछे कड, कीवरनत सूथ मम क्रेन विगंछ। তোমা সেবি কোখা দৈবি. হবে অংখাদয়, खागारमार्य इः थ-श्न रिधिर् कमग्र। शुक्राम्भव वनि यादा शुक्क कमि कृतन, (म (कन इन इ-क्नि विव निश्नां नित ? ভুলেও পরে মন্ম ভারিনা হাদয়ে, কুৎসা-তীরে বক্ষু ভেদে সে কেন নির্ভয়ে? কেন তব তেজাকুর রোণিলা অস্তরে, ভাইতে। গো এড জ্বাসণ সহি পৃথী'পরে। नाया कथा कहिनांद्र किन भी मिथातन, धर्वाजीक कति (कन किमिना जक्षारम।

তোমার সেবাই দেবি; অনর্থের মূল, তোহা সেবি আরু নাহি স'বো নিন্দাৰ্শ্ন।' **এ** वित् काथ और निकारि लिथमी, শর্মন শ্যা। উপরি করিছ অমনি। বিরাম-দায়িরী নিদ্রা আসি উপস্থিত, অপুর্বে রমণী করে দেখি চমকিত। েখিল রমণী এক রূপ চমৎকার, চক্ষের বালাই যায় দেখি কচি যার। কবরী বন্ধন ঘেরি শোভিছে গোলাপ, जन्मर्गत्न त्य माधुदी यात्र मनलाश। চাৰু কিসলয় যুক্ত পল্লৰ চিকণ, मर्था मर्था जार्ड् यांत स्टाप्न थासून। नाना कूनमञ्ज मिंथि भाजिए मीमास, মানি হইয়াছে শেষ যাহা অচতি-অতে। শ্ৰুতি নিমে ছুলিতেছে পদ্মকলি ছুল, লড়িছে স্বাকিছে সেই সৌন্দর্য্য সতুল। নাসা নিমে শোভিতেছে পুষ্পানয় মত, ক্রির নোলক যাছে ছলিছে মতত। मलिका (कांद्रक दिनिर्धिं मूकावनी, উজলিয়া রহিয়াছে উচ্চ উরস্লী। कुलगय हूत करत, भूगील बलग याशका मान्यका भाषि मन का ज़िलका। किवा क्रे शांक भन भनता लाक यूनिक यानम छेडन ए मिन्स लाएक। নিলীমা-বরণ-বাস অতীব স্থুন্দর, बरकारंजन अन बरक यारह मरनाइन।

नित्रीक्त केति वंटि वनारं बमनी, गानहर्गः अशुर्ति हिस्रा धा जात्र कमनि। দেখিড় দেহ উপরি যেন রে তাহার, वहिट्डि नमनमी आर्द्रे भारावात। ভূধর স্থউচ্চতর শোভে স্মূরি সারি, निर्वात वर्वात वीति क्षां मेर्नाहाती... তৰুৰর নান। জাতি কিবা ভাতি তার जाँथि मत्नामानि पृत रहेति कि याता তারি'পরে মধুস্বরে পক্ষী করে গান যেমনি সৌন্দর্য্য তার তেমনি রে তান। লতাগুলা নানা জাতি ফলে স্থাভিত, সরোবর মৈনোহর পবনে কম্পিত। शृङ्ग भनग्रानिम जक्त छे भरत,." হইতেছে প্রবাহিত কিবা মধুষরে ! কুস্ম-স্বভি কৃড়ি মূহ সমীরণ বহিতেছে মৃত্ মৃত্ হরিয়া জীবন। নক্তা নিকর শোভে স্থাংশু সহিত, স্থান্থি কোমুদী মন করিছে মোহিত। भयाजिन अर्ज्यन इहुन। मम (यन. कथन नज़न ज़र्भ हिर्दिन ७ हिन। শরীর নিতাস্ত থকা তাহার, উপরে, এত শোভাময় ত্ৰা শোভিবে কি করে। বধা যেন স্থীবর মসুণ মুকুরে, অনায়ানে ধরি থাকে প্রকৃতি বধুরে क्ष, जांत्रजनयुक, किश जन थटक " रिनं यथा भरत क्षेत्र मार्जरक 🖈

335

त्म दमनी क्रें गरकरना अमृति छेड्यून ত্রিসংসার প্রক্রিতি পড়িয়া সে ছল। – পার দেখ হে পাঁচক এ চিন্তা অপন, नहित्न भन्नी मात्य अ मृश्व मर्गन। য। হৌক পঠিক জন হেন এক নারী आंति डेश्रक्षेत्र रामा मधूर्थ अभाति। मीत्र श्री क राला मम भैगा छन, পুলকে পুর্নিত প্রাণ দেহ স্থনীতল। অনিমের চক্ষে তার দেখি রূপছটা অন্তর ভবনে মোর আনন্দের ঘটা। जानि नावी धीति भीति जामात्त्र महावि কহিতে শাগিল কথা মূহ মূহ হাসি;--'' উঠ উ'5 উঠ বাছ। হঃখ পরিহ্র "নীচ বাক্যে চ্ছাতিপাত কভু নাহি কর। " कि ना करि थाटक नीटह खंडज मानदन, " গেয়ে থাকে গুণী-ম্লানি নীচে এই ভবে। " কুকুর স্থাংশু ছেরি ডাকে উল্লেখনে, "म ज्या कि स्थानिध मरमाइःथ करत ? "কোথায় কুৰুর আর কোথা নিশাকর, " কোথা তুমি কোথা নীচ বিস্তর অন্তর। " তোমা প্রতি দেষ ঈহা করে যেই জন, "এক রূপ জেনো তব প্রশংসা কীর্ত্তন। "নীচৰাক্য আকর্ণন করি ৰাছাধন; "না চিন্তিয় করিবেক ত্রপথ বর্জন 🔭 " य श्रथ धरिका जाइ या ७ त्मरे श्राथ, " किছू পরে আরোহিবে তুমি যশোর্ধ।

"তৰ্ম ভাসিবে তুমি আনন্দ-লাশকে; ^{*}" সে স্থ^ৰ তুকনা কাছে কি জ্ৰুৰ ভূ'পৱে"? " কহিতেছ কৰ্ম যাবে; এ ফুথা ভংগে, " यट्यां ठिउ भगः व्हंडे इटना में क् मटन। " চাকুরি কুকুরি বাঞ্চা করে বেটি জম, " তোজোহীন দেই মর এই দে 💐 🔠 " অর্থ উপার্জন পথ আছে কত শত, " তাহা তাজি চাকুরিনে তব মন রত ? " কহিতেছ 'কাবাদেৰি তব আরাধনা, " 'कथन मान्टम मम जान कतिव नः। ' " मम मांग कादारमंत्री खंदा वाहाधन, " না করিবে বল মোরে কেন আরাধন? * পাইতেছ কট বলি ? এ কট তোমার "तर्व नां कश्म अन वहन आधात। "আমার অর্কনা মেই করে আরম্ভন, " কিছুদিন তার কট ছয় বাছাধন। "তাহার কারণ যত ক্র্রারিত নর "পুঞ্জিতে দের নাঁ হয়ে দর্শার কাতর। " যার প্রতি আছে বাছা আমার নয়ন * ভাষার উৎসাহতঙ্গ করে কোন জন ? " अक्रिक इट्स क्र मेंम क्यांत्राथना, " इरेट निम्छन्न जर्ने सकन कामना। *তৰ কটা হৰে দূর আমন্দ বছল " লভিবে তব জীবন নাছি যার তুল। " উঠ উঠ উঠ বাছা ধরছ লেখনী," এত ৰাদ অ্থাসর

मम गतन टीमानि मूळामश हाउ, वति, " धरे गर वर्ष छव भूतकात ।" र्गाबद्ध नीज्न श्लेमा चीयन जामाव। मिह भूक्शमीत श्रीत ग्री हमएकाता यूइएर्डक मामह नाही बाना अस्तिन, वश्ता निक्षि यन तम भारी आन। ভালিল আমার খুম ধরিছ নৈত্র লিখিতে আরম্ভ কাব্য করিত্ব অম্থি অংগত শরংকাল গান মণ্ডল . আবরিল প্রীতিকর নীলিমা উজ্জ্বল। निर्माल नाष्डामधल नीलिमा वहल, পূর্ণ চকুমার যাহা চিক্ণ আসন। ভারি'পর শশধর রজনী সময়, নক্ষর নিকর চর সহিত উদয়। তাহাঁর সুষমা কিবা নয়নরঞ্জন," তাহার মাধুরী আঁকা স্বপু আকিঞ্চন। শরতের নিশাকাল পুরিমা সংযোগে, मट्योयथ नानिवादत अत् विखादतारग । শরতের অ্সম্পূর্ণ শশী নিরীক্ষণে ं छेथनिया नार्हि एम काराय जीवतन ? ं क्र्युमिनी निख्न नात्थ कति नितीकन, সরোবরে বিকসিত হসিত বদন। निश्वे नम्भवे हैाम जाबि ैस्वर्श्यन, একেবারে সমুদ্ধিত সরোবরতল। जरे तथ नाती भार्य थिडिवियक्टल, कृथिएक निक तमनी वननम्**धरन**्



ं त्य याचादत्र जान्द्रीदम् रूदतः किना करत ? नक कान वादशीत रख नाती शहत। मानजी कोमूनी दुर्भ वेदननादका श्राम, मधी (भारत मधीना स्मेनीरत जानि। শুভ বৰ্ণ কৰা কুল কুল চতুৰ্ভিতে, आहि कि। दिन जता आँथि आनिमाउ , भंतरः छ जागरम यन शृकीमजी हर हो डेरिंच श्रीत स्टामिश व्यक्ति। গ্রেক্ত ধাতে পূর্ব রূপ চিকণিয়া, यांश्रत माधुती (इति উट्ठ उथनिया হৃদয়-সরসী-নীর আনন্দ স্বরূপ বরষার বারি পাতে; কবি ভাব কুশ मर्खारव मञ्ज करत हैनमल हैन। थांश्रासक कवि कावा डेकीशनाश्रम। শরতের জোতশ্বিনী নীরে থর থর, यादात मोन्नर्गातानि क्लाग्न जलत। জাহ্লবী-জীবন বেগে হয় প্রবাহিত, মোহন সহর ছাড়ি চলিলা সুখীত। তরণী ছাড়িয়া দিল নাবিক জুয়ারে, ছুটিল তরণী বায় কে ধরে তাহারে! শরতের প্রাতঃকাশ অতি মনোহর, তাহাতে মোহন পুনঃ ত্রণী উপর। উঠিছে শরৎ-রবি मদীতীর হতে, যাহার সৌন্ধ্য তুলা আছে কি জগতে? হইতে পশ্চিম তট রুবি নিরীক্ণণে ক্ডার ন্রন মন চাক হলোভনে।

উদিত রবির মুর্ত্তি পার্ভু গন্ধানীরে, अधिखंख छेटठ यन निमीति भीदत । পুরু, তীর, হতে পুনঃ নিরধি পশ্চিম, मानव-क्नरत, इंग्र जानन जनीम [🔪 সুরমা হর্ম উপরি পরকলা শোভা, নর-মন মুখ করে প্রভা মনোলোভা। কাচখণ্ডে রবিরশ্মি প্রতিবিশ্ব পড়ি, কিবা শোভাষয় মূর্ত্তি আহা মরি মরি! প্রজ্ঞানিত ব**দ্ধিশি**শা গৃ**হ অভ্যন্ত**রে, জুলিতেছে বোধ হয় দর্শক অন্তরে। নিশা শেষে শরতের রুফি নিপতনে, স্মৃদিক রহিছে করি চাক তক্গণে। তাহারি উপরি মরি রবি-রশ্মিষ্ট। উদ্ভত করেছে আহা কিবা রূপছটা। শরৎ আনন্দে মাতি যেন তক্ণাণে, আবরিত করিয়াছে কাঞ্চনভূষণে। ুর্ফিফোঁটা ছলিতেছে তক পত্রময়, তাহারি উপরি পড়ি রবিরশ্মি রয়। লক্ষ লক্ষ গজমুক্তা শারদ তপন, সজ্জীভূত করি যেন শাধীর আনন। याकात ऋषमा ृ (इति छक्क ऋषीमन, যাহার সুষ্মা করে আঁথি আকর্ষণ। श्राक जनगीत्थानी हिमार वाहिला, পড়িছে তরীর জার আর্বণ মেছিয়া। স্থীর স্বিজ জন করে প্রাতঃ মান, মধ্যে মধ্যে আছে তার রমণী-বন্ধান।

मत्था भर्था मन्द्रतित्र बह्निय प्रभनि, नित्रभिष्ट तमगीत जानन ल्यां छन। जनहंद्र शकी नान। (मंत्र मखद्र), যাহার সৌন্দর্যা করে নয়ন হরণ। মুত্ন মুত্ন ন্মীরণ হয় প্রবাহিত, যাহার পরশে হয় শরীর মোহিত। জाङ्गरी - जीवन (शटा १६ मधीतन, ছিদর উথলি উঠে উর্মির সুজন। श्रकुष शिक्षांनकून खांत्र मगीजाहे, खरवक्रात (मध् स्थाइकि वर्षे। এইরপ নানা পোড়া মানস মোহন, মোহন নির্থি মুদ্ধ, প্রায় বিচেতন। षमात्र मश्माद्र मात्र शक्रितिमाञ्च, মকভূমে মর্জ্রান বেমন সূজন। यथम প্রকৃতিসতী ছেরি নদীতটে, मानम - मूक्रत जाद आकृष्ठि धकरहे। थारशम हिल्लाम डाल्म मानम-मन्दित, नमी-देखि निवानता यथा समीओदर। পরাণ নাচিয়া উঠে সে শোকা দর্শনে, জগতের যত জ্বাল; ভূনি রে সেক্ণে। श्रांत दा, कविक्रमग्न, किया मणा खब राजा ता, धक्छ मजी मर्गन, छेल्मन यनि बाष्ट्रमादत्र मिछ छद्दत्र योजना १ कि मन्त्र। एटा दि उर उर उ रन न।। यथा एके भिक्तरह आँगाउ आव, कारण कार्छ विज्ञान आदक क्रमियान।

কবির সে দখা ঠিক শুভি হুষ্ট করে, মৃতিজ্ঞ পাপিষ্ঠরা কথন কি করে। किश्व यश्च भारत मृत्य वना नत्राण, मीकात्रकद्रग তत्त्र शम्हा९ धावन। ভয়ে ভীত জন্তান্বিত কম্পিত শরীর, নিবিড় অর্ণ্যে ধ্রি ছেরিণ অহির। र्ठिक मिडेक्स कि इसे नविख्या, নদীর বিজ্ঞন তীরে শক্তিত ফাদীয় পলে গিয়া ছেরিবারে প্রকৃতি রমণী, मर्द्ध इः ४ मृदीकृ छ . मर्गत य धनी। (इनकाटन स्मर्ट इटन यमि यात्र नत्, নর দেখি ছেরে ছরি কবির অন্তর। মোইনের তরী আসি হলে। উপস্থিত, শুক্তপুর বাঁধা ঘাটে; মোহন হর্ষিত। শুরপুর আম স্থা হয় কি শারণ? জীবনের জমভূমি হে পাঠক জন। শ্রপুর আম খানি অতি মনোহর, ব্ৰাহ্মণ কায়ন্থ বাদ আছে স্থৰিভঁর। অট্টালিকা মনোহর আছে শত শত, উদ্যান প্রমোদ স্থান আছে কব কত। একক জীৰন বাবু আমের গৌরব, ना इरेटन र्कन यात जैंजून विख्य ! **अक की वन इराज औम मंक्रीमछ।** প্ৰভূত প্ৰভাৰ মান এখন্য অনস্ত। অন্ত আর একবার স্থার মোহন अटमहिना अरे आहम क्रूहनी मन।



ष्यपूर्व छेमान अर्क जाटह जीवरंगत, मिथिवाहत यादा काङ्गा श्रमः माहरमत्रः। शृंदर्व येटर अरे औरम जारेना मार्न, निटकामान रमशहेमा जाहारत कीवन। মোহন জীবনসহ তাই পরিচয়: मिथियोदा ता छेमान थामूझ - क्रमग्र চলিলা भारन धीत नागि जती श्रु, মোহন প্রকুল কত কহিব কেমতে। বাঁধা ঘাট হতে পথ অতি মনোহর, इरे शांद्र मियमांक कां छे कि सम्बत् ! নানা লতা ফুলভারে ঝোলে ভক্বরে, যাহার দৌনর্দ্ধা রাশি পাস্থ মনোহরে। তরপরে নানা পক্ষী স্থাপে করে গান, তৰতল অৰ্গছন মনে হয় জান। मट्या मट्या मभीत्र वटक भाषी'शहत, কিবা অমধুর ব্র সমুখিত করে। মোহন প্রবর্ণ করি শব্দ সুললিত, শরীর শীতল তার জীবন মোছিত। আসি উপস্থিত ধীর জীবন - ভবনে, मरनारत जड़ानिका भूग स्राचारन। बिउन श्रवमा द्यं जक ध्वनिङ, স্তম্ভাগরে কাক্করি অতি স্থাভাত। मधुर्थ द्वरमानग्न द्रमञ्ज्ञ क्रन কত পুষ্প প্রকৃলিত সাকীণ মুকুলে। मिडेड़िट मीर्चकात्र मिथारे शाहाता; ছদয় শক্তি হয় নির্থি চেছারা!

माहरनत आगमन कानाहना बाती, মোহনে বসিতে স্থান দিল। কর্মচারী। শেহনের ' আগমন -কারণ জিজাস। করে কর্মচারীগণ অতিমিষ্ট - ভাষা। জীবন ভবনে নাই শুনিলা মোহন, পলীতাম দরশনে অনাত্র গমন। -জীবন কেমন ব্যস্ত প্রকৃতি দর্শনে, অবিদিত হে পাঠক আছে কোন জনে! জীবন ভবনে নাই শুনিয়া মোহন, বিষাদে মান্স তার হইল মগন। জীবন কি সর্বনাশ করিছে তোমার, জাননা কিছু মোহন সংবাদ তাহায়: জীবনের প্রধান যে ছিলা কর্মচারী মোহনের সহ জানা আছিল তাহারি। याहरतद कतिल स यर्थणे जामत। ভোজনের আয়োজন করে অতঃপর। চর্ব্ব, চুষ্য, লেছ, পেয় ভোজন স্থন্দর, ভোজনান্তে ভারাক্রান্ত মন কলেবর। আলম্ম বশৃত ধীর করিল শয়ন, भारत्वत राला भारत निमा स्नाकर्व। মোহনের নিজাভন্ন হলে। অপরাত্তে. अमीख वामनामिथा (मथिए डेम्गारन। নিজ মনোগত ভাব কহে পুরজনে, পড़िल विषय॰ গোলে কর্মচারীগণে। **की** वन व्यवस्थारन छेनान कहेक উন্থাটিতে ছিল মানা শুনহ পাঠক।

ইহার কারণ হথি অব্দর সহিত त्नई तमें डेमान इनी हिना मरराजिंछ। कीरन त्यार्टन तिषु कति गर्भानत, रमधारेब्राहिमा शूट्य छेमान सम्मत। সে কারণ প্রজন করিতে বারণ, जनक रहेना अरव द शांठकजन। कतिना आरमन जारे छेनान मानीरत. ফটক খুলিয়া দিতে মোহন সুধীরে। হে পाठिक ऋधीयत छेम्यान वर्गतन, আমার নিতান্ত বাঞ্চ বর্লিব কেমনে। अत्मात्भा कृष्णनारमवि वरमा धकवात मीत्नद्र लथनी'পद्र व वाञ्चा आभाइ। তুমি দৈবি নাহি হও যে কবি সহায়, **কেপোর তাহার কাব্য সমাদর পার** ! स्रमीघं डेम्यान मिरे विशे विशे जुल, श्रुडे क शाहीरत रचता बद्रग धवन। জীৰনের অটালিকা পুৰ্বভাগে স্থিত, ज्ञातमस्म मह यादा मः याक्ति। थामाम-डेमान वहे भाज मत्नाहत, यां होत्र स्मिन्या (हति, श्रकूत अस्त्र। क्रोरकत इरे ভिতে इंगे मीर्च खन्न, শুন্ত শিরে হুটী দিং হ বিস্তারিয়া লয়। বিয়োনিয়ালতা খেরি আছে ভার অল, সমীরণ সহ যাহা করিতৈছে রজ। छेगान धारान कति धनं मत्नी, बाडि व्यनी, भद्रशीत इशार्ष कमनि।

দিখণ্ডিত স্থাশস্ত পাধ কিছু পরে, इंगे পথ अर्काट्स मम अर्क धरतः। তারি মধ্যে গোলাকতি চানকা স্থলন নব দুর্ব্বাদলে পূর্ব অতি প্রীতিকর। তাহারি উপরি নানা তক্ত্লে নত, শোলাপ কত প্ৰকার তাহা কৰ কত। अभीर्ष मि शानाकृष्ठि हानकाः मास्य. वार्शन (मोसर्व) कृति धारात विद्यारक । কুকির সোন্দর্যা রাশি বর্নিবে কে আরে ? তাহার মাধুর্যা তুলা আছে কি সংসারে ? যে জন কখন কুকি করেছে দর্শন, श्रु (महे खन कारन एम धन 'रकमन। শরতের শশী কতু নছে কাছে তার। সরস্থিত সরোক্ছ আস্পদ লজ্জার। তাহার মাধুরী স্থাি এমনি স্থলর, मन्मर्गरन म्मस्थिन जाँथि करनवत। (यमन विष्णाधित विष्य जाकर्राण. জীবনের যত জালা সে তক রতনে তেমনি শুবিরা লয় ছেপাঠক জ্বন, শরীর পবিত হয় দর্শনে যে ধন। श्रमीर्व (म गामाकृष्ठिः जानका छेभात. কত শোভাময় তক আছে শোভাকরে। একটা একটা তৰু বৰ্ণ কত রূপ. যেটি হেরি সেটি যেন-পুষ্পতক-ভূপ। वर्षाञ्चामम इंग्री नत्री समात, थक **ब्रे**झार्ट भागि किছ एव शव।

পুনকার সুপ্রশন্ত পথ আর্ডন, যার পার্যে কামিনী কুস্থম ছাশোভন। কিছু পরে প্রস্তর-নির্মিত বাঁখা ঘাট. बादा (इति श्रुमि (मग्न मानमकवारे। गत्नाच्य मत्यायत नीत्य केनमन इ একটা আছে তার ফুলশতদল। কুমুদ কোরক কত শোভে সরোবরে, নীর ছাড়ি শির তুদি যেন বন্ধবরে কুমুদিনী অথাসর করিতে আহ্বান, কি কচি তাহারি মরি , জুড়ায় পরাণ। সরসীর চতুর্ভিতে ঝাউ সারি সারি, সর-চতুর্ভিতে পথ অতি মনোহারী। ৰাউত্তরপত্তে নানা লতা কলে নত, গুঞ্জরিছে মধুকর তাহে অবিরত! ঝাউত্ত লতিকার গদাগনি করি, मदमी मुकूदत मुर्च मिंदि पार्च पति। अष्ट मदत भीनकून जारमार्टम आकृत, मलुद्धि मत्न मत्न मौन्धा प्रकृत। भीन-मखद्रार्ग नीत जेयम् कांभिड, তৰ প্ৰতিকৃতি নীরে তাহে আলোড়িত। বোধ হয় সরঃনীয়ে গছন কানন, এর অঙ্গে উহা পড়ি অপূর্ব্য শোভন। সরসীর চতুর্ভিতে স্থশস্ত পথ, এक **পার্শ্বে বাউ অন্যে বর্কুল, মন্ম**থ। নিবিড় পাদপ-পত্ত শোড়া মনোহর, তৰতল সুণীতল খুনা রবিকর।

विमाल मा उक्डाम विमाधमम्म आगोब आर**गत आंगो** ,मृत्रीक्रेड रहा। छेहेरले। अपन्य इंगे - मत इंगे शारत, আপনি বিযাদবদে হৃদয় আগারে नित्रीका कि यात्र विभर्ष भाष्टन, अब बुटेकिश यन कहिए दिक्त । কোপায় লতামগুপ শোভিছে উছানে, যার তল ভৃগু করে সম্ভগু পরাংগে। মঞ্ল নিকুঞ্বম কোথা সুশেভিন, यादात माधुती केंद्र , आंशि आकर्षण। পাদপ মণ্ডপ কোথা কৌশলে নিৰ্বিত. যার তলে অরকিট পুষ্প হুশোভিত। भामभ मण्भ धारक जारह जदकिंगे, হেরি দৃথীকৃত হয় নর-চিন্তা-কীট। কত রূপ অর্কিট কে করে গ্ণন, তকর উপরে মরি তকর সূজন। কত মত ক্যাক্টাস শোভে স্তম্পালে याहात गठेन (हति क तार्थ हामिता। কোথায় ভারবেনা শোভে চানকাউপরে, কে বার রঞ্জিত তক শোভে থরে ধরে। (काथ। ऋडू जुमिष ७ भूग पृक्तांमतन, যাহার শাবন শোভা অতুন ভূতলে। কোথা কোয়ালিন কুল দিক আমোদিয়া माधवी मानजी काश्वा जरू आक्रामिशा। कांशा मधुगंद्वा डाटन व्यटमान डेक्कान, কোথা শিরোপজি ফুল আরুলে পরাণ।

কোথা ব্ৰুমকাৰতা শোভে মঞুৰ মুৰতি, পাথীনতা কুন কোৰা হুচিৰণ অভি। নত। নজাৰতী কোথা পরশে লক্ষিত नाती लक्षावजी यथा नतन्त्रार्म छीउ। পলাশ বন্ধন কোথা কোখা জেসামিন याद्यात अश्विमत्म मन अत्य मीन। क्लाक कृष्टेज कांधा कांधा (मकानिका, প্রদাপদ্ম জ্বা কোথা কোথায় মল্লিকা। কোখা বা নবমল্লিকা কোথা ভূচম্পক, কোথা বা মৃথিকা জাতি কোথা কুৰুবক। কোথা শোভে গন্ধরাজ, সেঁওতি সুন্দর, কোখায় কুটজ শোভে জাখি-প্রীতিকর। কোধা তুৰ্জ্ঞপত্ৰ শেতে কোথা হরী চকী. স্থচাক চন্দন কোথা কোথা আমনকী। अलारेक माछमाना (काथा मार्किनी. কত্ই ব্ৰুত্তী তথি উদ্যান-শোভিনী। হত তৰু আছে তথি কে করে গণনা ? কে পারে উদ্যান শোভা করিতে বর্ণনা ? সেই সে উদ্যান তার সহত্র শর্গী, পারিপাটা বিবা তার কছিব কেমনি। मर्था भर्था जार्ड दान बनिए सम्बद्ध, বিনিশ্রিত খেওঁ শিলে অতি প্রীতিকর। উৎगव উৎসেহ इंगे উদ্যান শোভন, त्री शास्त्र मुकानकी त्यन डेक्शीरण। কোথায় গোলকধাঁধা লতিকা নিৰ্দ্বিত, প্রবেশিলে তার মধ্যে শরণী-বিশ্বত।

কোখার প্রভুল কুলে 'গুঞ্জিরিছে অলি, य श्रनि **कश्-क्वान** जूना ग्रंगिक । কোখা সমীরণ চুদ্ধি প্রকৃল কুপুম विखातिया शतिमन धारमारमत धूम। কোথা তৰুসহ ক্ৰীড়া করে গন্ধবহ কিবা সুদ্দিত তান তুদে অহরহ। काथा मधिमुथी करत मधुन्यक्त गान, কি তান এমন আছে তাহার সমান। কপোত কপোতী কোথা ৰসি শাখী'পরে. **हक्षु मर्भा हक्षु मित्र्। तर्ह त्थ्रम** खरत। বায়স বায়সী কোণা জোড় বাঁধি বসি, বায়স বাড়ায়ে জীবা সোহাগে বায়সী। বায়সী বাড়ারে চঞ্চু অমনি আদরে, খুটিছে বায়সপুত্র প্রফুল অন্তরে। **७** दत दिश्क्यून कानी नत्रगरण, প্রেমশিকা দে রে তোরা শিখুক যতনে। প্রেম কি অমুল্য ধন জানিস রে তোরা, প্রেমের কি ধার ধারি মানব যে মোর।। প্রবেশিরা এ উন্থান স্থীর মোহন, अत्यादन जेळानत्मां ज कदत्र महमन। কভু কোন তৰুপাৰ্ছে বসি হৰ্ষমন, তৰুর অপূর্ব্ব শোভা করে সন্দর্শন। কভু বসি পুষ্প ধরি জ্রাণ লয় তার উথनित्र। উঠে ज्ञार्ग ऋथ भाराचात्। কভুকোন পুন্সশোডা করি নিরীকণ, আনন্দে উথলি উঠে তাহার জীবন।

কভু বা লতামগ্ৰণে পদি কিছুকণ, কপোলে বিশ্বস্থ কর কচিত্তিত যন্। ভূচশাক মার্কি এক, পদে ভ্রাম্ভিক্রমে, যতে তুলি সংখ্যেশন করে সসত্তমে। . " ওরে রে প্রস্থন বল আজি কি কুক্ষণে, " সাক্ষাৎ হইল তোর এ অভাগা সনে। " এখনি বিবৰ্ণ হবে এ তোর বরণ, " कि माधा आमात्र श्रनः अमानि की रन। " जब त्थामाका करी मधुमकि जामि नरे, " মুদ্রে ধরি সমাদরে তোষে সে কতই। " এ তোর উপর দিয়া ৰশ্বাৰাত ৰছে, " সেই কটা চিত্তানন্দে তোর অঙ্গ সহে। " চাকচকাশীল कूटन नदा] रामानदा, "কতই যতন তার উদ্যানাভাতরে। " যদিও সে শোভা নাই তবু শোভাময়, " এক পার্শ্বে এ উষ্ঠানে তোহার উদয়। "বিস্তারিয়া তৰ দল হবির কিরণে, " এই যে আছিলি তুই কত স্থাপোডানে। ं "किंख त्र अथन चूरे পড़ि পদে মোর, " ঐ ভ্রম্ভ হইল এবে সেই শোভা ভোর। ' সরনা বন্ধবিধবা দশা ঠিক হেন, ' পল্লীর প্রকৃত্ব ফুল ঠিক সেই যেন। ' ' পঞ্জিয়া প্রণয়কীদে কি ছুগতি তার, " कूसकनशिनी इत्र जांकुम नकात। " কনন্ধিয়া আমী-কুল কলন্ধি পিতারে, " नीन नम्न-प्रकृत स्थित वें का व वाहरत ।

" गत्रल कवित्र मना, अर्दे পूष्ण श्राप्त, " জীবন সাগরে পড়ি ছারুডুরু খার। " भार्षित् तुषि-छाजूरी यख मिड्नित्र, " দেখি দেছতরী দক্ষ চালাইতে নয়। " জীবন - সাগার - উর্বি উঠি ভয়ঙ্কর, '' गद्म करत मिह्जती किছू मिम পत। " কঠপ্রপীড়িতগুণী দশা হেন'ঠিক, 'रूडके यखना (मह मीनजा वानीक! " মানৰ চাতুৱী গৰ্ক, থেদাইয়া তারে, " नटत्र योत्र चहचत मुख्य संश्त्र शास्त्र। "সহার ব্রয়া হীৰ সকল ওকার, " (नेशरतद मदा श्रंश खतमा गेंडात) 'ধংসহদে পড়ি প্রাণ তার হয় সন্ত, ু" ভবে জন্ম ভূঞ্বিরে যন্ত্রণা অনস্ত। ' 'ভোমারো এ দশা ঠিক যার পুষ্প করে: " দুঃখ ভাবি এ পুশের বিলাপ যে করে। ं भोग नाम त्र मनात शरम जाकानतन, ' আদিতেছে শর্ক করি নাশিতে জীবনে।" जमन क्रि जिमान धत्रा माइन. कत्नवश्युक विभित्त भनन। आगि शीत **रांश शाटि विमन** माइन, চিতানন্দে হেরে ধীর সরসী শোভন। मिवारलाक मृत्र कति शाश्नी इकरत, ধ্দর বরণ বাুদ পরি হর্বাস্তরে, _ नामिल गगन राज राज शाही निक, শোভিল ললাটে ভার তার। আকন্মিক।

প্রাচী পরি পাংশু রাস পশ্চিম লোছিত. নিৰ্যাল নীলিমা শোডে তার মধ্যতিত। এক একটা করি ফুটি তারকাকুস্বম, অর্গ সরসীতে কিব। সৌন্দর্য্যের ধূম। गांध्नित शिष्ट शिष्ट धाला निनीधिनी, ताका कार्या कतिबादा अहे (म यिनिमी। শারদ হথাংশু উঠে পূর্ণী উলাসিতে, কি ক্ৰৰা হুখীর মন হেন আনন্দিতে? স্থাম্ম কৌৰুদী মন মোহিতে মদীগ আবরিল অঙ্গধানি প্রকৃতি পতীর। সুচাৰু চল্লিকা লোভে চাৰু তৰু শিরে, সে শোকা হুবিধ করে মানৰ জাঁথিরে। कूभूम-वाकारव (इति कूपूमिनी धनी, কোমল প্রবক্ষঃস্থল বিস্তারে অমনি। সরোবর স্থােভিত কুমুদিনী ফুটে, क्रमूमिनी र्कामूमीएउ मिन शामि गुरहे। इंट मरी दामि पिथि शमिल मानजी, ছুটিল স্থরভি তার প্রীতিপ্রদ সতি। শেকালিকা কান্তাকান্তি করি বিলোকন. আর কি রহিতে পারে হেরি সে শোভন। নেও হলো প্রকুল্লিত, হাসি মিষ্ট হাসি, সুসক্তিত হলে। কিবা সৌন্দর্যা প্রকাশি। मिलका हिल्लका (भरित्र माधुती विकारण, वृशिका मिलिका भगारण चन चन वारम। (बंडे नेपक् हिल्कांडः, ४७% ४०१ करत. वाइड जाइड शिरत वक्-मधु स्रत।

কাশ কুল পাশ পেয়ে স্থিম কৌমুদীর, হাসি , ঢলে ৰায়ুবলে কিম্পিত শরীর। कामिनी कूछम कूल किया कूछमिछ, বিধুর বিমল বিভা বাদে বিশোভিত। धवनिত इत्यीं शिति हस्तिन! धवन, धश्ंधभ् कतिराउटक बारक बालमन। যে পাৰে ফিরাও আঁথি সব • শুভ্ৰময়, শরতের শাদা হৃদি খুলি যেন রয়। हि शिक्त उर मर्शा योत मीना मन, नंदर्ज्य नामा स्थू ज़ार्ट निश्वन। भागा मन यह खन धरत थ जूनन, ১ শরতের শাদা তাছে সোহাগে কাঞ্চন। জাঁধার অন্তর যার সে কি ইছা বুকে: কপি হিরণায় হার মূল্য কড়ু ছবে; ধনমদে মত যেই সে কি প্রকৃতির সমাদর জানে কভু পাঠক স্থীর! जरकाती. इतांचाती, छण स्थीलन, अकृतित (थियाकां इकी कन्न कि कथन ! धनमरम जब्ब यहे जात शास मरन, প্রকৃতির প্রেমসুধা কডু বরিষণে ? উত্তপ্ত ৰালুকাময় মকভূমি'পরে, वत्रयात वित्रयर्थं कडू कि 'रह ऋरत ? यांश्रांत क्षत्रार्किल मर्ककृषि नम, সে স্থল করিতে সিক্ত প্রকৃতি সক্ষ পৃথী'পরে প্রেত যারা প্রকৃতি পারিতি তারা কি কছু হে বুঝে ! বুঝে কি স্থনীতি ?

্রেত যেই প্রেতকার্যা,ধর্মগ্রন্থ তার, প্রেতপক্ষে প্রকৃতি হে কেবল আঁধার (মোছনের শাদা মনে শরতের শাদা পঞ্চাশ ব্যঞ্জন আয় কুথার্তের রাদা। প্রকৃতির প্রেমনীরে ছদি-সর তার, উছলিয়া উঠি প্রেম ধরে নাহি আর। माहरमत्र हान-महत्र जात त्थम-मीत्र, পাইবে কেমনে স্থান পাঠক স্থার। পঞ্চ ইন্দ্রির তার পঞ্চ পথ দিয়: প্রকৃতির থেমনীর স্বনে বছিয়া, क्षमञ्ज - সরসী তার দিল উচ্ছলিয়া, প্রেম-মীর স্থামাভাবে তার চক্ষু দিয়া विहर्छ जागिन ऋथि, ठारे विभेशान्, মোহন হাধ ছুরারে তাই এত টান। সেই সে উছ্ছান-শেহভা অতি রমণীয়, हि भारत जार जार प्राप्त परन जनीत। তাহে নামা জাতি কুল সন্ধা-আগমনে বিক্ষিত সুহসিত সুধাংশু কিরণে। তাহে সমীরণ চুহি স্থান্ধি কুসুমে, ভরিব্লাছে পুলেপালাম পরিমল-ধূমে। তাহে সমীরণ হার ঝাউ ভক্-শিরে, মাতাৰ করিয়া তুলে জ্বোডা স্বস্থীরে। সম্পূৰ্ণ স্থাংশু শোভে তাহে শন্ধতের, গ্রাম মুখান তাতে আছে কের। এখানি হথানি যদ ব্যল ব্রণ, नाजामात महिलाह, मोक्या कमम ?

यन शायमारमें कान ्जीताराण हूटि, वर्गे अधूमिकिशंग शीम (यम क्ट्रि) योर्ध - मक्ष्मिकिशन ना क्रिक्टिंग त्यनं ? সুধাংশু - সরোজ - মধু পীতে ধার বেন। অলক্ষত সুরঞ্জিত সেই নডভল, बांश मित्रा मदःनीत्र शक्त अविकता। यदाखिनी छावि मत्न क्यूनिनीगत्न, यर्- मधुमकि (यन मत्रमी - कीवान। करल (इ शिक्ट अन (म डेमान-डन, হটয়াছে ঠিক যেন সুর আগ ছল। জগতের যত আছে দ্রব্য প্রীতিকৰ, इहेबार्ड मगार्यम डेमानां छाउत। এकी समात खवा भा ऋन विकिछ, বল দেখি কোনু মব্য পাঠক পণ্ডিত গ अमगीत मधुमाध। र्यनन मछल, नाती-आन्य नाहि यथा मृत्य मिहे ऋल। e পाठक, ऋधीवत, अटबन উन्तारन, · क्ष भी (अप्रमी-मद्भ किसूथ अमार्ग । রপদী যুৰতী ভাষা সহচরী করি, न्त्रभन्। किया करत कर धनि विष्राहेर व जेम्हाम किया श्रीजिक्द्र, मटशा मटशा महामाथा वामा-कथेखत्र, হু একটী শুন্নি তৃপ্ত আরণ-বিবর। म स्थ प्रति काह कि स्थ मर्था मर्था जारह जोत क्ष्य हजन, বসাইতে বেণীপার্ফে, সে স্থুখ কেমন 🕈

मर्था भर्था चार्छ हांक करत कत छत, আলিজন ও চুম্বন, কিবা পরিসর ? উদ্যান অপূর্ক্ক শেভা করি নিমীকণ, ज्यात जानमनीत यादन मगन। প্রকৃতির প্রেমস্থা করি স্থাধে পান, সে অন্তর মাতোয়ার। প্রায় শুক্ত জান। হেন কালে গৃহদার উদ্যাটিত ধনি, रामा शीति शीति अक महा यन गंगि। পরক্ষণে রমণীর ভূষণ - সুন্মর, क्षारेन छेगात्मत अवन - विवत ! অগুসর সেই অর মোহন সরিধি, किছू ना अर्टन माइन त्यारे मंद्र निशि। এমনি অজ্ঞান হয়ে বসিয়া মোহন, राष्ट्रकानमूख धीत, (क करत अवन ? जभूकी तमनी अक शीब्रि धीति जानि, দাঁড়ালে। অপুর্বারপ তাহার বিকাশি। हर भार्रक स्थीवत तम त्रमणी - क्रभ, वर्तिष्ठ वामना मम वर्तिव कि क्रथ। वाभि विक मृहमि विमा दुकि नारे, সুধীরে ভূবিব কিসে চিত কুরু তাই। নীণাপাণি ৰাগ্দেৰি উর একবার भीरनत्र (मधनी पूर्व, मझा किंदा जात। विश्वविमानत - विमा यमिष्टु मा नारे विकास प्राप्त जार कि जनारे। প্রকৃতি প্রদত বুদ্ধিকণা দেহ দীনে, विश्वविद्यालय - विद्या मृत्व ग्रागित।

गेनित मा कृत्रांश अत्राम, त्रमात्रम ग्लिट्स मा बहाकतर्ग नोख मदन्त। ए शर्ठक, ऋधिवत, **अ तमनी** कर्श এ ভুবন মোহনিয়া এ বিশ্ব লোলুপ। व नाजी मिर्मेश मह कुमना काहाज मिर (इ পঠिक खन, সম कई जात? ब नांदीत त्रभ किंग ब नांदीत मछ, তুলনা তুলিতে তার কাবা অসমত। তবে ত পাঠক জন যে ছেরেনি তারে দে রূপের অভুত্তৰ পাবে কি প্রকারে? সেশির্ধার এ স্বন্ধরী যুবতী ছহিতা, মঞ্ল - মৃত্তি মশ্বথ পুনঃ এর পিতা। त्म बामाज्ञभ छेभमा मिवकांत्र मत्न १ जित्नाख्या मह जूना जाजूाकि जूवत्। यावजीव ब्रमनीव वक्ष कृष्टि नरव, বিশ্বকর্মা ভিলোভমা সুক্তে ধাতা ভয়ে। এ নারীও সেই রূপ রমাবস্তু সার, जिल्लाखमा (पवी, देनि मानवी-आकात। जिलाखमा हात्रामां दिन वल-नाती, দেশ হে পাঠক স্থা স্থবনা তাহারি। স্বন্ধরীর বর্ণ টুকু গোউর উজ্জ্ব, आहमिनिहा नाही यथा क्रिंट बनम्म। গোলাল গোলার ক্রান্ত নামন, **जावित्य समरत्र जात्र निजा जाकर्षण।** হৃদরীর বেণীশেভা কচির চরম, ধূম-বন্ধ * বিনিগত ধূমপুঞ্জ সম।

^{*} Chimney.

যেমনি চিকণ কান নিবিড তেমনি, विनाचेता (वंशीश्व लिएन धनि धनी) यर्ग जीभा कुन याक मि हिक्न हान, क्रिनीत् निर्द्भाषि काम इम्र फूला। ञ्चलत नगांवेथानि (यम भक्तश्रष्ट, বিস্তার করিয়া তার চিকণিয়া তত্ন। কি চাৰু জ্বযুগ তাম কিবা তার টান, याहां इसमा कार्फ श्रक्रव लाग । সে চাক **জয়গ সহ তু**লা দিব কার, প্রতিমার সধী সম অধ্যুক্তকার। आंत्रड लांहन इही मोमर्था - मार्गत्र, তারা হুটা মগ্নদিরি তদ অভারর। म औषि विह्नात्नां शहि शिक्षत्व शार्ठक, वृद्धिकती वान्हांन चूत्राञ्च मखक। সে আঁথি কটাক স্থাি অতি ভয়ম্বর, कुछनी ভाषिशा यन मश्य विवधत। কুরিদিণী আঁথি সহ তুলনা কি তার ? সেই সরলতা ইছা কুটিনতা ধার। কুটিলতা ধার ছোক, সেন্দির্ঘের খনি হেন ক্ৰমলে তাৱা ধৱে কে ধৰণী ? হেন ভাষা ভাষা চকু কে দেৱেছে আরে? त्म औषि कुनवी मार्च अञ्जित नश्माद्य। एका किया किए कि जान, এমৰ ভূম্বর নাসা কার আছে আর ? নাসা নিমে স্কাতর ওঠাধর শোড়া, हेक्हेक् करत नान (भाषा मरनारमध्या।

তামুল জক্ষণ বিনা ভাষুলের রাগ, जधद पक्षन थाटा मृशी. मूर्कां जाग। मधूत जशरत शति किसे मिसे शामि कि गाधुती जारा मित जारह मि धदानि। পুৰুষের আঁথি'পরে পড়িলে সে ছাসি, চব্ চক্ চক করি ঘেরে তমোরাশি। त्रीमामिनी बाकि यथा विकारण आधात, সে রূপদী হাদি হেরি তম ত্রিসংসার। इमि-त्रि शिक्ष कूछ म् अ कुँममाय, धर्भ धर्भ धर्भ करत धवनजायात्र। কি চাৰু চিবুক খানি কিবা তার ভাতি যাহার হুষমা হেরে আড়ে রে অর্ডি। करन (इं পाठिक छन म नात्री जानन, ইউরোপী চিত্তকর ছবির মতন। य त्रमगीनिधि - मूथ नित्रधि भाष्ठक, শরীর লোমাঞ হয় পড়েনা পলক; य नाडीत पूर-इवि कति नित्रीक्रन, रेष्ट्र। कर स्मथ जारूत हरक मर्द्धकण ; এ নারীর মুখ-শোভা তজপ মধুর, म पूर्वान नितीकर्ग मर्क इःश प्रत। थीवारमण लाखाका अर्गितक काँछा, ঝক্ ঝক ঋক্ করে ভারামগুকাটা। कामन मि नकश्यन धर्ति शुद्धानक तिक समय केटिन निर्देश थे बन । সে সৌন্দর্যারাশি সহ কার দিব তুলা, कम्ब, माড़िब, गिक्नि श्वाकनि अना

महिज पूननां निष्ठ शांफ स्मान कवि, था कथा विकास विकास का क्यो क्यो कि ? আর দেখ ছে পাঠক কদৰ সহিত পরোধরে তুলা দেরা অতি রিগর্হিত। কদৰ সুকুত্ৰ ভরা কেশর কণ্টকে, নহে অকুমার-তত্ত্ জানহ পাচকে। गिति मह भरताश्दन कुना एमा यहे. का ७ कान मृत्र स्थि पृषि (कारना (महे। যে পারে কোমল বক্ষে চাপাইতে গিরি. দয়া তার দেহ দিকে নাছি চার কিরি। **পদ্মকলি কুচে তুলা দেয় যেই জন,** কারে বলে কুচ-শোডা জানে বা সে জন। তবে এ কুচ-গঠন কাছার মতন্? এ কুচ-গঠন স্থা নাগর - মোহন। य कूछ-ल्यां छत्न नाजी नद्र-लित्रांमिन, বে কুচ-শোভনে নারী সৌন্দর্গোর খনি। (य-कूठ-ल्गाख्टन नाजी-क्रश ख्यनाज, যে কুচ-শোভনে নারী ভুবন ভুদায়। म कूछ यजन श्रुध अ कूछ शर्छन, এ কুচ মাধুর্ব্য নর অমূল্য রতন। इसती (बांफ्नी क्रिक, ज्ञान वानीक 🔧 रतिन त्म बह्दर्भाका जाटका जाटह ठिक। (एम-क्रांक: कूरकार्शित बरक: वर्ग होत, हम काक क्रिकिंगात बर्कि बुक्कानात । আবরি এহেশ ক্লচ সাঁকার আবার: काल नारें (इ शार्ठक मं कंशात जात.

মাজা তার ঠিক জেনো ইউরোপী নারী, পরিধিয়ে কোর্ডা বাস অতি মনোহারী। নিতম্ব নীচে ভাষার কত যে বিশাপ, অতুল গুৰুত্ব ভারে স্থান্তীর চাল ।। নিত্তে মেদিনী। ভুলা দেয় কবিজানে। ্রিন্তু তা কঠিন বলি ছেন লয় মনে। নিতম মাধুৰ্যা তার কিবা স্থলনিত, क्षिमन कूर्यम यथा इस विकमिछ। এ হেন নিতম্বোপরি স্বর্ণ চন্দ্রহারী কাজ নাই হে পাঠক, ধে কথায় আর। গোলাল গোলাল করে চাফ স্বর্ণ চুর, দরশনে পুৰুষের হৃদি হর হুর। এ হেন রমণী এক ভূষণে ভূষিত, দাঁড়াল মোহন পাশে বদন হসিত। म नाती-मार्या-तानि करत यनमन, विकनी विकिन (यन (म छेक्कांन छन। হেথার মোহন হেরি উভান শোভন, নিজোছান পড়িমনে ব্যাকুলিত মন। निक नाती-डाम्यूथ পड़ि शन मत्न, একবারে জানশৃত অনারী চিন্তনে। সমীপত্ম বামা'পরে পড়িল লোচন, निकामान्निक नाती जाविन माहन। · হা श्रिमार्कि वनि भीत भरत थीवा उर्मत, " अरमा थिए। इति मार्थ स्किन्धेक्वात । " वह मिन शदा आंकि मिथा उव मत्न, "কহ কথা চল্ৰাননি ৰুড়াই অবৰ্ণে।"

' माद्रस्य बास्ति दूसि मिदे निविधिनी, करह कथा शामि शाम मध्यक्षाविगी। " ७ इ हिज्दांत उप कार्या जामि महे, " হবো তব প্রাণজারা হেন পুণ্য কই।" (माइन छनि ७ कथा जदाक इहेन, निक गाती निकामान यथन जानिन। मञ्जाश अधीत धीत राम " अकि आत, "করস্পর্শ করিলাম রুণ্দী কাছার। " क जाशनि व छेम्रात्म बक्र नी ममब्र, " জानिवादि कुड़श्न वाकित्न कमश्र। " क्या कत, ए त्रशीम, यम खांखि योत " शत-नादी-जन न्मर्ग कार्श जान भात ।" खनियां सम्बदी करह शाम-मिसे शाम-श्रामि नश्रामि एवं सुधि नश्न-धरा काँमि । " কহিতেছ, জাঁখি-চোর, কাঁপে তব অন্ধ, " কাঁপে অন্ধ তার যারে আক্রমে অনদ। "ত্ৰ অঙ্গ-কম্প শুনি আশালতা মম " मङीब हरेशा (मोडा शत अनुभग। " मिला छे जारेश (महे आहिन निक्कीं न, "তব অজ-কলা তনি হইল সজীব। " অথবা হে মনোচোর তব ও কশান, " তব্দ প্রতিস্থৃতি, সরে কম্পিত; যেমন। " সরঃনীর আলোড়নে তক আতিকৃতি " केहिल बहु नैवह ने करे उक्त बाकु । " তৰ তারা লোক্ট পড়ি এ বৌৰন সরে, ' योषर्न मत्रमी मध कारण अन्नश्दतः।

" আমার কংখন যুগা নীরের কংখন, " তোমার ভড়াগে ওঁক ছায়ার মতন। " क्रिकांनिष्ट हिन्दिहोत मम, পরিচর, " এ উল্লান ও ভবন এ দাসীরি /হয়। " জीवरनंत्र जांग्रा जामि ; इग्न मम जान, " শুনিয়া থাকিবে মম স্বামী-অভিধান।" শুনিয়া মোহন কয় "শুন গোঁ সুন্দরি, " তব কথা আকর্ণনে উঠি গো শিহর। " হইরা বড়র ভার্যা এ বাঞা কেমন, " পরিহরি হেন ইচ্ছা নাই গো ভবন। " যে জন অপর নারী অংক দের কর " তার মত পাশিষ্ঠ কে অবনী'ভিতর ? · " যে জন নারীর করে সতীত্ত **" হ**রণ, "তার মত হুৱাচার কে আছে ভুবন 🕈 " হেন বাঞ্চা করি দূর যাহ নিজ ঘরে, ' शूद्रक्रम (भरन (हेद्र भिड़र्स कें।भरद। " হেন মনোমত স্বামী থাকিতে তোমার, " অপরের সঙ্গ বাঞ্চ এ কেমন আর। " कामिनीक्टंबर कून जमूना राजम, " কুতা কল हिनी সাপিনী যেমন।" শুনিয়া কামিনী করু "এ আরু কেমন, "তৰ মা প্ৰায় তো দেখিনি কখন। " এ তব[®] ৰ্মোৰনকাল আঁক্ততি এমন, " তৰ মুখে হেৰু <u>কুখা না পায় শোভন।</u> " এ তব বয়সকাল ক্রুড় রসে ভরা, " উপরে চিকা।, বুঝি ভিতরে ফোঁপর।।

4

" गडीष कह कोहादा? तम खर्वा कमन? " হবো সতী ছেন পতি কই সে ভূবন ? " পতি মম পরনারী নিয়া সদা রত, " আমোদে কাটেন কাল, আমি স'বো কত ? " তিন মাস হলো গত দেঁখা নাই তার, " পहिल्याम (मधा इतन इतन नाही काहा। " সতীনারী ভূঞিবারে ইচ্ছা থাকে যার, " আগে প্রয়োজন করে শুদ্ধ হ'য়। তার। " যা ইচ্ছা হইৰে মনে করিবেন তিনি, " किछ वाँ हि कि क्रिक्श अवना कामिनी ?" শুনিয়া মোহন কয় "শুন স্থাসিনি, " হতে পারে সত্য তব হংখের কাহিনী। "জানিতাম তব পতি অতি বিজ্ঞ জন, " তব ছুংখ কথা ভূনি ছুংখিত জীবন। "পতি মন্দ লোক যদি হয় তব জ্ঞান, "তা বলি কি ভুমি হবে তাঁহার সমান। " যুবতীর পাতিব্রত্য অন্তর - ভূষণ, " मयुष्कल करंत्र मिहे मिल्की-त्रजन। " अन मा चम्मति जारे मिरे छेशामम, " याटक ऋथ केक जुमि नाकि ऋथ *द्धा*ी।" রমণী-হলভ লজা ঢাকে মুখু তার इलाइडि भूनि रेंग्ज्ञ म सूर्य अविता करह तम इम्मद्री श्रनः 'माहरनंत' क्षेत्रि, " তব উপদেশ কথা আশুধী হে অতি। " মম বাঞ্চা অগ্নিলিংখা জেনো, চিডচোর, " উপদেশ ७६७० कार्न इत्र स्थात।

" जरमा जाना खानमत्थ, भर्मन काहिनी " রাথি দেও, পিপার্দায় মরে চাত্কিনী। " তোমার মানদে यनि अपनि আছिन, "কেন ও কোমল কর কারা পর্নিল। " दांच दांच देर्यकथा (मंन मम नारक, " वर्गभर्थ (यएं किया नाहि यम मार्क ? " স্বৰ্গপথে যেতে পাপ কোনু থাছে আছে? "এ হেন লেখক-মুখ এলে মম কাছে " পোড़ाইয়া निरे खानि या धरनत न् हैं, " এসো এসো প্রাণ্যথে ছলনার কুটি।" (नगिक पिर्धि भीत करह कति इन, '' (कमर्न वामना भूति छ्लां छ्का। " প্রতিজ্ঞা আছে যে মম একটা বৎসর, " করিব না জীসংসর্গ রবো দেশান্তর। " করজোড় করি ধনি হাড় বাঞ্চা হেন, " কুকথা ও মুখে আর নাহি আদে যেন।" শুনিয়া স্থন্দরী কহে বিষাদিত-মন "কৰে তৰ প্ৰতিজার শেষ সংঘটন গ " মোর মাথা খাও মোরে দিব্য করি বল, " প্রতিজ্ঞা হইলে শেষ আদিবে এছন। " নতুৰ তোমায় আমি ছাড়ি নাহি দিব, " বল বনঃ তব দেখা করব হে পাইব।" ছাড় श्रा पिश शीत करह कति इन, " প্রতিজ্ঞার পরে পুনঃ আসিব এক্স।" সুন্দরী কছিল পুনঃ " ওছে চিত্তচোর, " কোন্ মালে পুন দেখা ছবে সাথে মোর?

" দেহ সনোচোর দিন নির্ছারিত করি. " बकार्ख गंगिव वंत्रि ज्लामाना धति।" कार्विनीत क्या अपि कहिल माहन " কাল্পনে আমার হবে প্রতিজ্ঞা পুরণ।" এ কখা প্রবণ করি অন্তরী তখন. विवयं करिया करह युमान-वनम। " वन बाद्ध काक्सत्वत्र जमा निनीशिनी " आंत्रि मिर्ट मन्नामन त्रादो आंक्रांकिनी। " डेम्रांस मिक्स जाटक गंदारकात पात, " খোলা রবে সেই নিশি আদেশে আমার। " अन अन आगमार्थ, क्लान महा नाहे, " ठाउकिनी मम इत्वा थाजामिनी छाई।" माइन ज कथा छनि ना एषि छेशाह. তক্ণীর বাকো কাজে কাজে দিলা সায়। তৰে বিষাদিত মহন নারী গোলা খন, जानत्म छेठिन नाहि त्माइन-जडत। प्रगन्यथा गाञ्जी-कदा (भटन भदिजान, উদ্বাদে ধার বেগে কম্পান্তিত প্রাণ। তজ্ঞপ মোহন আসি উদ্যান বাহিরে, জীবনের বাটী তাজি চলে নদীতীরে। त्वरे निर्माकारम भूमि मिन उत्री शिव, विमा उत्ती (वृत्ता क्वा बदह मात ? উত্তর পশ্চিম দেশ এমণের ডারে, कुष्टमभिथा । द्वान । सोहन अस्टर ।

নবম সূগ্।

Oh then what soul was his, when on the tops
(If the high mountains, he behold the sun
Rise up and bathe the world in light".

THE EXCURSION.

Unnatural doeds

Do breed unnatural troubles "

MACRBATH

मधुमान नग्गठ नव मधुमश, স্বৰ্গস্থল হলে। যেন ভুবনে উদয়। - (य भौर्ष किता ७ जाबि (क्षमकथा कत्र , প্রেমপূর্ণ প্রাণীকুল ভব প্রেমময়। শীতরাজ্যে তক্তুল হয়ে ভরাকুল উলন্ধ আহীন অতি, হরিত দুকুলা -পরিহরি মনোত্রুংখে ছিলা বিষাদিত, বসত্তে নির্থি তার। হলে। উলাসিত। চিকণ রঞ্জিত বাস কিসলয় নাম. পরিধিল অমনি রে, কিবা গুণপ্রাম কহিতে স্ফুক্ষ তার? করি মনে মনে, কাছে রাখি তারে দেখি , দাই নয়মে। কোন তক্ষী মুঞ্জিত কৈছ পল্লবিত, কাছারো প্রফুল ফুলে বদন হসিত। गहकात माथीकून जाकीर पूक्टन, मञ्जूल माधवी कूल श्रून जारह इरल।

कानरन क्षूपक्न के क्षूपिछ, কানন-শোভিনী দুঙা তাহে মুঞ্জিত। विविध विषेत्री'शास विविध बहाती. मभीत्र । उद्भ छेट र्मान्स्या महती। মনে ইচ্ছা করি দশ্ধ গৃহ পরিছরি, সে সৌন্দর্যাশ ছেরি আঁখি ছির করি। मक्कदी छेन्द्रि जनि शक्कदिए सूर्य. मधुर्गात मकु मना श्रुविम मूर्थ। यलता मांकज मरशा मरशा मुद्र वज्र, চুরিয়া কুমুম কুল পরিমল নময়। পরশনে সে অনিল কি স্থুখ উদয়, म श्र द्वित करा विना महत्र। शाशीकृत भाशीमात ऋ त्व करत गान, अबर्ग भीजन (मर स्थी इस आन। गगन मधन करा करम नित्रमन, विमन स्थार्ड माटि गर जातीमन। मानरवत्र ऋथमिञ्ज स्म स्मिन, . छेड़ निजा छेर्फ स्थि मध करत मत्न। পारेया वमलकान जीवज्ञलगन, राना अक्वाद्य मार्व व्यक्तिक मशुन । मकरमहे सूथी यमि जात कृतिकान, সমধिक श्रुषी ारे ना इत्य कमनः। কিন্তু হে পাঠক জন, কলিজবতার ভাবি ভাবি কবি-হৃদি হুইল আঁঙার কলিঅবভার করে পড়িয়া পাঠক, শরীর হইল কা<mark>লৈ সুরিল মন্তক।</mark>

कनित्र हिर्दानी जांकि लेका किन मरन छत्त कारण केविकत जाकिव रक्तरन। गांउ राज मीर्च (मर वर्ग व्यावसूम, मक्त कारन शिक्ष कवि कारन पूर्व। निर्त्नादम्दर्भ कूछ रक्म निर्द्वादर्शम किक्न কে তারে চিনিতে পালে কবি জন ভিন্ন। আস্ত খানা ভূষা পড়া যেন তোলো হাঁড়ী সক দোঁক তাও ছাটা আঁৰি দম কাড়ি। ভাবোর ভাবোর চোক দেখি হয় ভর वामा बूर्या किंगा वाग् हाहि खन इह। দন্তপাটী সৰ পচা হুৰ্গন্ধের খনি यात गरक इंग्लिश्त इंटक्त (भड़नि। शांउ इंगे भाग भाग " अब भावा" मार्ग, চাঁপ্কানের হাতা ঝুলে অসুনির আগ, লুকাতে সে কুঠে করে জেনো ছে পাঠক. वमत्म कि छाका यांग्र खुनल शांवक ? যেমন চেহারা থানি অন্তর তেমনি সে ज्युत ज्ञानीगरक कज़नात पनि। কলি অবভার পিছে আছে হুটী চেলা, नित्रीष्ट बान्दर बादत बंगाद्वा'कि एजा। **এक छम भिराश्य (मरे (म कनित्र,** क्रॅंरत উएए चेर्न जक बद्ध इस क्रित थूनि बाज माँज़ोरेटन छ्डूत शांठक, জমুরে মাগুর মত সার গৈ মন্তক। ही हकूरकार्ग जात्र धारकमा बनि, कवित्र भन्नीयः काँएमं स्मिष स्म स्वयनि।

धर्याययं नाहि क्षानः कृष्टिक पर्वतः ┄ रेर्टालांक गठ किंद्र जनत्वी वर्त 🖰 🕟 অপর চেলাটা স্থাধ এক চোকো দেই करत शेरम छितिभ जासूनि धरत यह ।" मृक्तिमान नेदी लारे, धक्छि धमनि, আপনার অন্তরাত্ম চিবার আপনি। विमाण्य छहे। हार्या, धमनि धाकन, গওদুর্ধ ছয়ে তার হতি অধ্যাপন। मिनियात गण्ण कित इत्व ख्रामिक. সিংহে আক্রমিতে চার হইয়া মৃষিক। এঁদেরি করেতে পড়ি ছে পাঠক জন. भंदीत करेंन कानि कानि रुमा मन। (मट्ट नं हे मन मम डाकिन ध मिन, মন মোছনের সঙ্গে পশ্চিম প্রদেশ। নগর রাজমহল স্থান প্রীতিকর এक कारल हिना मिहे मखारिवेद एतः। `অভিধান তার হজা বিধাতি ভূবন, নিশাইকা এ নগর বিচিত্র শোভন। " ह् ब्रांक्त, सब उद अहोनिका मणी, खारिए धीमान गर्धा कांत्र रम खत्रमा হইতে সমাধি স্থান উঠাঞেক বার, দেখ দেখ এক বার: তবন্ধ ভোমার। বলিতে যে ছালে তুমি কৰ্তা রম্পীয়! ছীরকণচিত গৃহ , অতি শোভনীয়। হিরণাুর সিংছাসনে বার দিয়া বসি, মণিময় বিভূষণ স্বাক্ত স্বাস্থা।

শিরোদেশে চন্দ্রাতপ কত ক্রাক্করি, পার্যচর ব্যঞ্জনিত তালর্ভ ধরি। দেই বাসগৃহ-দশা এবৈ হে কেমন ? · তथि भौथी की छ। करत मह मर्गेत्र। নানা তৰু নানা লতা শোভিছে সে ছব, ভবনে বিবিধ জন্ত কলে কোলাহল। যে ছলে ৰসিতে তুমি পাতি সিংহাসন, শগাল রহিছে তথি হয়তে। এখন। ক্মনীয় কান্তিময়ী রম্পীর ঘরে. হয়তো সাপিনী বাস করে ছর্বান্তরে। শোভিত যে ছুলে তব হক্রাতপ লিরে, হয়তো বাহুড় তথি উড়ি উড়ি ফিরে। कानारनमा शान हिना अक कान, जनगृश मिर खनी खियाइ गृगान। मखार्छेत ज्य वांने एर शार्ठक जन, তোমার মান্সে ভূমি করছ স্মরণ। মনে কর এক দিন চিন্তিত অন্তরে, দাঁড়ায়েছ নুপতির ভগ্নাটী'পরে। मभग्न मर्क्तती, श्रूषि शूर्व श्रूषांकव, উদিত হইয়া ঝকে প্রাসাদ উপর। ভগ্নবাটী মধ্য দিয়া নিশাকর কর, 💉 গও থও শোটভ যেন সংগ্রাজ স্থার। . उक शब मधा मिश्रा मेगीत्रिक शिक्र অগণ্য মল্লিকা শোভে থেন বাটা'পরি। मकिन निरुद्ध- (चात्र-- सूधू मभीदर्ग, পরের স্থার শব্দ করে উত্তোলন।

সকলি বিশুদ্ধ দৌর—ছতু দিখাজীত, कानिष्ट् धङ्गिकि मिन ; क्रिकं क्रमिक्ड । সকলি নিভন্ধ খোর-বিলির শহার. ৰহারিছে প্রকৃতির হদি-বীণা - তার। সকলি নিত্তৰ যোৱ-কেবল বাস্তুড, मर्था नर्था कर्षेन्टि किन इक इक्। जकिन निखन्न योज-यह मिरक हाउ. कारनत क्तान मूर्खि मिथिशात भाउ। मिथ मिथ जावि जावि म श्रामत जात, হবে না কি স্থাধি তব সংজ্ঞার অভাব ! हरव नांकि मिरे हान धर्म धर्म छान ? হবে নাকৃ ভোজবারি জান ভব সান ! कत्राम वममं काम धूमि धामु जीत, ধরিবে না হেন পাঠ সন্মুখে তোমার ? "মম অভিধান কাল এই ত্রিসংসার, " সকলি আমার সৃষ্টি মম অধিকার। " নাহিক আমার জন্ম নাহি কর মম, '' আমা হতে ক্রম জেনে। আম। হতে বম। " সর্বজ্ঞেষ্ঠ জীব মম পৃথী স্থিত নর, "তাহারি এ অটালিকা গঠন স্থার ৮০ " किन्छ भूखगण मम ध्यकृत्ति विद्यम, " जानि जनाना । वटन जानि हरे यम। " এই অট্টালিকা কার? কোৰা সেই মর? " হইরাছে 'লীন মীম উনুরাভান্তর। " किছू विवद्यांत्री नम् निव कारन नीम, " আমি হাত্র পুত্রগণ ছই না প্রাচীন।

" नित्राष्ट्रि जाँगात जर्भे किहू श्र्लगटन "नाहिक कोंद्रांत अश्रम अनद अवटंग। " যপরত তার পান নাছি যার কর, " কালে সুধী পুঞ্জাছে দিওণিত হয়। " मक्का चुकीर्खि कन्न, श्रम नाहि यान, " धम शर्क एक 'धर्क करब्राङ कामाव। " দিতেছে এ ভয়বাদী তারি পরিচয়: " अककारन लोगांखनीई अरव शरममत्र। " जनम अक्रुं ि जांक मिर काम मन, " পরিশ্রম প্রাণ শুন আলক্ষ মরণ।" कारमद इंदेरम भिष्ठ गेत्रिया वर्गम, প্রকৃতি ভগিনী তার করে সম্বোধন। " আমার প্রকৃতি দেখ সদা বাস্ত রই " हसा, स्वा, जाता, मही मृद्र मञ्जरे। " এক রূপে আদি আমি এক রূপে যাই, " এक क्रार्थ बहे, शद्र अमा क्रार्थ शाहे। " क्विनि श्रीतवर्डम श्राप्त्र छेश्र, " জড়তা কেমন নাহি জানে এ অন্তর। "এভুবন যুদ্ধক্ষেত্ৰ সম সুভগণ " छव शूरक नीत र ७ न छ यरना धमः। " সৰি কিছু দিন তবে লভ যদোদালি, '' চিরন্থারী যাহা লভ ক্রিড় প্রকাশি। "তাজ তাজ অবদাদ সার কর আৰ, " কুকীর্ত্তি লডছ সবে কি করিবে যম।" প্রকৃতি ধরিষা থাত্ব পড়িবে এ পাঠ, भूमि फिरव मर्मरकत अबैस कनाछ।

বিমর্থ পুরিত সেই প্রীর ভিতরে वियाम कृतिहरू नाम दूउँ कित-कृत्या। হে পাঁচক তবে যার রম্ভডাঙা মন, বিযাদ বিতরে তারে প্রমোদ রতন। মোহনের মনোভাব কে করে প্রকাশ ? সমাটের ভগবাচী হেরিয়া মোহন, আনন্দ সাগলে তার অন্তর মগন। নিতা নব নব শেভা নির্পি সুধীর मानम-शक्क कृत्र शिविख मंत्रीत। এক দিন উয়াকালে সুহৃদ মোহন, জাগিয়া উঠিল শুনি বিহৃত্ব কুজন। कूइ कूइ शिक्कून ডाइक मांधीं शहन, পাপিয়া ঝফারে কর্ণে সুধারাশি করে। মলয় অনিল বহে তৰুশাখা'পরে, गाइन शानश यन गीउ अध्यदा। ু প্রকৃতি-পরম - শোভা দেখিবার তরে. উঠিল পর্বতে ধীর প্রফুল অন্তরে। স্থুউচ্চ মে মহীধর শোভা চনংকার, নিরীকণে যার শোভা আনন্দ অপার। পাদপে বেষ্টিত গিরি শোভা চিকণীয়া ধীরি ধীরি উঠে ধীর প্রফুল হইয়া। रेगनगढ़ উঠে शीत इतमा मः काशीन, নির্থি প্রকৃতি-শোডা মধুর নবীন। পর্বতের পাদদেশে পার্বতীর নর পর্ণের কুটার-জেদী-শোডা কি স্থনর।

পর্বতের পুর্বদিকে গাঁহন কানন, কত রূপ শাধী শোড়ে কে করে গণন ? उमान, शिशोन, जान, नान नाति गाति, जाम, जाम, हनकम, शानश शाहाड़ी। मधु मौन नम्गित्म मधुत मृत्रिः, খরেছে বিটপীপুঞ্ প্রীতিপ্রদ অতি। গিরিশৃক হতে শোঁডা করি 'নিরীকণ' थारमाम मागरत मन कात्र ना मगन ? সুকুত্র বিশাল তক সম অহাজান, বিচ্ছিনতা, নাহি করে নয়নে প্রদান। তারি পরে দুর্কাক্ষেত্র শ্রামল বরণ, তাহারি উপরি চরে যত গাভীগণ। বড় গাভী গিরি হতে যেন বংস মত, দীৰ্ঘকায় নরগণ যেন শিশু কত। তারি পরে নদীগর্ড পূর্ণ বালু রাশি, भन् भन् कतिरङह मोमार्था क्षकानि। জাহ্নবী জীবন বেগে ভারি পরে বয়, মরাল আবলী মরি তহুপরি রয়। মোহন পর্বত হতে শোভাষয় স্থান, जन्मर्भन कति गति इरेन व्यक्तान। পর্বত পশ্চিম ভাগে শোভে গিরিভেণী, জীবন র্থাই তার যে কভু দেখেনি। গহন কাৰন শোভে তারি পাদদেশে मार्क्त, जन्नक, थड़ाी जग्रह्त त्रतम कतिराउद्द विष्यं निर्देश क्षाया, কতরণ শোভা কছে কেবা সমুদয়?

ক্ৰমে প্ৰাচী দিক হ'তে উদিও ওপন, मारम निज्ञी पूर्वभाक्त विरम्जन। লোহিত তপত লোভে মধ্যে গিরি অংক, मील लिया ब्यां इतना मन्नक गरक। गिति इ'एक जक्मिटन माहमें दिविकत, অন্য রূপ শেষ্ডা হলে। নিসর্গ উপর। গিরি হতে এরুতির শোভাঁ হেরি ধীর, करण कथा मन मत्न शक्त भंदीत। " আহা কি অপুর্বরূপ হেরি চতুর্ভিত্তে, " थइंडि शांडिन काँम, मानेन ४किए। " मचूर्य मिन्दी-मिन्नू इत्र धाराहिङ, " शंवटम माधूर्धा-छेन्रि इक्ट्र छेविछ। " সে তরজমালা আসি মম দেহ-তীরে, " অছির করিল মম মানস পাখীরে। "ধাইতেছে হাৰুড়ুবু সে তরজ-ভারে, " পায়ে কুল পুনঃ চরে প্রকৃতি উপরে। " श्रृं: म उत्रम्भामा (वर्ग मिट्ट पानि, " মানস পাধীর স্থৈয় দের আহা নাশি। " म्कू, कर्व, नामा, षक, कामन जमना, ^e হার্ভুরু খায় তারা পাইয়া তাড়না। " তর্ম অহানে প্রঃ পার তারা তুর, " विচद्ध श्रेष्ठ शेर्ड जानरम गांकूम। "সাৰ্থক ছবল আৰু সাৰ্থক শ্ৰীৰ, " মৰ মোহনিরা রশা হেরি আফুডির। " পূৰ্বে ভূৰকদের শোডা? ও কি ৱে তপন ? " কৰন তো জাঁখি, শোভা ছেরেনি এমন।

"নানান; ও রবি নয় ফাদ প্রকৃতির, " पतिरें मानंगभाशी मत्न कृति हितं। " পাতित अङ्गि काँफ मधुक्छ। मिश्री, " কেমনে স্থান্থর থাকে মন-পাখী-ছিয়া। " উড়িল রে মন-পাখা তাই দেহ ছাড়ি, ' কি আশ্চর্যাত মারুর্যালবে মন কাড়ি। পেৰিত্ৰ হইল প্ৰাণ পুৰিত্ৰ শারীর, '' ইচ্চা করি ছেরি রবি আঁখি করি স্থির।'' তেজোরাশি তপনেতে ক্রমে মাবির্ভ্ ঝলদিল আঁখি যে রেও তেজ উদ্ভত। :মাহন চাহিল তাই তক শিরোপরে, মপূর্ব্ শোভন ছেরে জাঁথি স্থ্রে করে। পর্বতের কিছু দূরে দ্ব্বাক্ষেত্র'পরে, মুগ এক গুগী সহ রহে গেণভরে। भृगी - मूर्यनं भूग भूथ कदिश अर्थन, চত্তাবেশে প্রেমভরে করিছে ঘর্ষণ। আহা কি অপুর্ব গ্রেম তাহাদের মরি, নাহি জানে কপটতা ভিতর উপরি। मांनरवत्र मठ नाहि ङारन ध्ववक्षना, ভিতরে পৰুষ ভাব মুখে আরাধনা। मृग - मृगी - अभानां निद्रवि साइन, প্রীতিপূর্ণ হলে। দেহ এফুল জীবন। धक मृत्ये हाहि धीत प्रगी-हक्कू भरत, কি যেন ভাবনা এক উঠে সে অন্তরে। হেন কালে তীক্ষ এক স্থবিশাল শর, বিদীর্ণ করিল আসি মৃগীর অন্তর।

পড়িল অমনি মুখী ছট কট করি, श्री-जाबि रान जाति जाबिनीत बिता, ज्ञान्त्र पर जीवि नित्रिध माइन, মোহিনী - इतिगी - जांथि इरेन अत्र।। **षधीत हरेन धीत मिसू येथा अ**एड, কিন্তা বধা শিশু - মন বক্ত-কডমডে। মোহিনীর মূর্ত্তি উঠি মানস নয়নে, আফুল করিল অতি মোছন-জীবনে। অবভরি গিরি হ'তে ব্যাকুলিত-মন, কহিলেক রামধনে আপন মনন। "তান তান রামধন আজি মম প্রাণ " कां मिशा छेटिছ (कन शाह ना मसान। " আজি আমি যা'ব বাটা কহিছি নিশ্চয়, " তরী আরোহণে যেতে দেরি নাছি সয়। " गांफ़ी ठिए छन छुता इरे ए । यारे, " ফুকরিছে প্রাণ কেন সন্ধান না পাই।" প্রভুমুথে ভূত্য যবে এ কথা শুনিল, আনন্দে তাহার মন নাচিয়া উঠিল। ममवाख इरे जत्न जारेमा वामाग्न, द्रागधन निन मार्थ खरा ममूनाय। गाड़ी जारताहिए हरन शरत हरे जन, कविन हिकिहे का वताविक मन। .व्याद्वादिन यांत्न (मांदर मिन यांन हाड़ि, ঘরম্বরি শব্দ করি চলিলা সে গাড়ী।. ভাম-ৰাষ্প্ৰাৰ-গতি কে বৰ্নিৰে আহে. অই বন্ধ এই হলে। কে দেখে তাহারে।

এই পথ বৃद्धः (বাধ क्रिंग मातन, এই বাটী একতদ কুণে সে ত্রিতল। এই রুক্ষ কুত্র বোধ ক্ষণে দীর্ঘাকার _ বিদিয়তা হলো তার যেই একাকার! मार्ठ, बांठे, शर्व शूटत मत्म इत्र कान, উড্ডীয়মান পক্ষীরে ফেলি ছুটে বান। গত হলো এক দিন গত এক রাতি, রামধন মোহনের যান লোক সাতি। পর দিন গাড়ী হতে উত্তরি গোহন, স্থাম - পথাভিমুখে করিল গমন। वाजिन अधिक दिनां मिनि ब्रामधन, क भगामाना मर्या अर्वर्भ इकन। त्माहम वर्षिक ज्थि क्रांच-कटनवत, গতক্রম মোছনের কিছুক্ষণ পর। र्दन कारन "इ। थार्पन इहिर्ल कार्याय!" ্ মূহ মূহ স্বর ধীর শুনিবারে পায়। भूनः तमरे वामाञ्चत धीति **भीति क**न्न, "রহিলে কোথায় নাথ এমন সময়। "এসময় একবার দাঁড়াও সন্মুখে, " তাজি হে এ পোড়াপ্রাণ তবে সামি স্থা। '' পুনঃ সেই খেদধনি শুনি কামিনীর, माहरनत मन हरना अ शैव अच्छित। দয়ার অন্তর যার দে কি পরছুথ মে চন করিতে কভু হয় হে বিমুধ 🕈 मत्रोन्द्र शत्रष्ट्र (भनमम वार्ष्ट्र, পরহিত কাধিবারে ভুলে নিজ কাজে।

विरम्हिट शरह भार निर्देश किया, अमनि (कारना (इ स्थि महाद कारम । রবিফর তব্দবর ধরি শিরোপরি, जनात्राहम हत्त्र यथा शासु-पूर्व महि। কিন্তা যথা স্থানিধি পুড়ি রবিকরে, स्था दित्रका करत मानव - निकरतः মোহন - खारा পশি সেই খেদ ধনি, উদ্বেল করিল তা্র অন্তর অমনি। পণ্যান্ত্ৰীৰ কাছে ধীর কৃতৃহলী চিতে জিজাসিল কোনু জন কাঁদে আচহিতে? कहिल मि भगाजीव ' अकी उमगी, " উচ্চকুলো দ্রবা তাঁরি জেন্দ্রের ধনি। " भूभूर्य अवस्थ कांद्र मिश्र कार्टिवृक," মোহন দেখিতে তারে অতীব উৎস্ক। উপস্থিত নারী-পাশে বামা মেলি আঁথি চাহিল মোহন পানে মুখ উদ্ধে লাখি। হতজান হলো নারী হইলা মৃদ্ধিত মোহনের হৃদি কাপে দেহ চম্কিত। ৰহিতে লাগিল বেগে মোহন শোণিত, বিষয় বিপ্লব চিত্ত দেহ লোমাঞিত। ছুটি धीद आमि भीद निल माद्रोपूर्थ. সংসার আঁধারণয় হৃদি পূর্ণ হৃত্থ। किছूकन পরে, সংজ্ঞা হইল উদয়, হাসিয়া উঠিল তবে মোহন - ছদয়। উঠিয়া বসিল নারী কোন রোগ নাই, বার জন্ম রোগ সে যে সমুখে রে ভাই।

হে পাঠক সহদয় কিবা প্রয়োজন বলিকারে এই নারী ইয় কোন জন। माहत्व अनित्रनी माहिनी सम्बी, পাষণ জীবন দেছে এ হুর্গতি করি। গুপ্তভাবে প্ৰাইলে পিতালয়ে ধনী. জীবনের ...চর করি সন্ধান অমনি, মোহন - খণ্ডরালয়ে আসি উপস্থিত, (म) इन-चलात कक निज! यरशिकित। (भाककमा आदल किल (भाहिमी जनतक, বঞ্চিত করিলা অর্থ শৃষি কপর্দ্ধকে। অন্যোহইয়া ধনী হতে গিতালয় পলাইয়া আনিতেছে শুশুর-আলয়; খশুর জনকালর ভিন্নমনীর কোথা স্থান আছে সার পাঠক স্থীর। সংজ্ঞা দম্পাদিত যবে হলো মোহিনীব, मग्रथ नारथरत रहति जानरक जभीत। মোহিনীর মনোভাব কি হলে: তখন. সে ভাব বনিতে দক্ষ হয় কোন জন গ **ং পাঠক স্থীবর দে ভাবের ভাব,** তোমা ছাড়া কার হবে অনুভব লাভ। হে পাঠক তাই বলি তব হৃদি-পটে, মোহিনীর মনোভাব তাঁক অকপটে। কাব্যপটে দে ভাবের পাইকে অভাব, করি দিল। স্থসদ্ধান আঁক তুমি ভাব। সহদয় - করে যদি গড়ে সেই ভাব, তবে সে ভাবের পাবে যথাপু ফভাব।

त्याहिनीत मीना कीना निवृति त्याहन, উঠिन। विशान - शन रें रम क्रि गंगन। विका आम्हर्श अर् मिन महाकार्भ, ভাছিল। देखित उक मिथे नार्ग जान। কুতৃহল - শিখা তায় হানিছে বিদ্লাৎ, নীরদ-মির্ঘোষ তায় অতি অদ্ভুৎ। অঞা - রফি বরিষণ হক্ষে কিছু কণ, থামিল আৰুষ্য বড়ি তাণি দেহ, মন। দেহ-তরী ত্রাণ পেয়ে যন্ত্রণা তুফানে, মোহন সম্বোধি কহে মোহিনীর পানে। * একি একি বিধুমুখি কেন ছেন দশা, " সে শরীর চেনা ভার দেখিলে সহসা। " म नावगामती मूर्खि किन जिताहिल, " সে সৌন্দর্যারাশি কোণা, হলো লুকারিত। " কেন বা এ স্থলে প্রিয়ে যেন জনাথিনী, " কেন বা এ বেশ তব যেন পার্গদিমী। " वल वल इंस्ट्रभूथि वक्क फिर्छ यात्र, • ঘটিয়াছে কি জঞ্জাল কহ লো আমায়। " নাথেরে উত্তর দিতে অঞ্ধারা শত বহিল মোহিনী-**গঙে** বেগে অবিরত। দর দর অঞ্চ ঝারে বাক্য নাছি স্ফ্রে क करत कां छान मिया विशाम मिसूरत। करत औषि इन इन गम गम डार्य প্রাণকান্তে বিদোদিনী এরূপে সন্তাবে। " हम हम প्रांगनाथ आरग नांही हम, "সে কথা কবৃরি নয় এই পণ্যস্ত্ল।

" कहिट इद्ध के हिनी मण निणि निर्व, " ফুটিবে অরাতি-বক্ষ যবে সে শুনিবে। " মোহন ও রামধন হয়ে তুরান্বিত আনে পাল্কি হ'তে এক পলী সন্নিহিত। প্রবেশিল পাঞ্জি মধ্যে মোহিনী স্বন্দরী, চলিল। বেছারাগণ ভুম হাম করি। ু চিন্তাপুর গ্রামে ক্রমে আসি উপস্থিত, পড়ি গেলা কোলাহল সবে চমকিত। মহোৎসৰ পড়ি লীল মোহন-ভবনে, व्यक्तिरागेन अल्या प्रिक्टि साहरम। মোহন - জননী - ছদি ধরিল কি ভাব. স্বেহময়ী_মাতা ভিন্ন সে ভাব-সভাব वुकारक मॅक्सम (रुवा १ व्या भा अनिन, হারা অঞ্চলের নিধি পেলে স্থতমণি, ক্রন্থ ভোমার হৃদি হয় বিকসিত। অপুরে সে ভাব আশা পণ্ডিতাচ্চিত। মোহন-জননী শুনি আইলা মোহন, ধেয়ে আসি পুত্র কাছে করে সম্ভাষণ। " এनि कि माइन माइ जक्षानत मन. " আয় বাছা কোলে করি মুখানি চুম্বন। " কাঁদি কাঁদি ভোর তরে ও মোর রতন, " হইরাছে দৃষ্টিহারা ৫ ছটী নুনরন। " সাঁচলে রেখেছি বাঁধি ছলো কত দিন " এই मिक्के जना हेकू, श्र-जात-विश्रीम " त्वि इरेग्नार्ड अटन मिथ मिथि (थर्ग, " এই भूँ টে म निनम की तर्हेकू পেয়ে

- " तारिशाहि वाधि वाहा धत कहत धत,
- * দেখিরা জুড়াক মম এ পোড়া অন্তর। -
- " विर्तित्म ना श्राय भारत खकारतह मूथ,
- "পাইয়াছে বাছা মোর কতই অন্থ।
- " वर्षे या नक्षी आयात ननीत श्रक्तू,
 - "কষ্টে হইয়াছে সার পাঁজর কেবলি।
 - " বোস মা গোঁ বোসু বোসু মোছনের বামে."
 - "কাজনি মা আর তোর কাজনি প্রণামে।
 - "দেথিয়া জুড়াক চোক জুড়াক হৃদয়,
 - "কি **আনন্দ আজি নো**র অন্তরে উদয়।" মোহন - জননী ভাবি ভাবি পুত্র তরে, जर्क भागनिनी थाय जाहितन, घरत। উপযুক্ত স্থত তরে নহিলে 🚈 কার, একটুকু क्लीत वैंदिश आंচ्टलत शात? আনন্দের দীমা নাই মোহন-ভবনে, আখীয় স্বজন এলো দেখিতে মে হনে। প্রম মিত্র মাধ্ব, বন্তু দরশনে, আদি উপস্থিত হলো মোহন-ভবনে। মোহন মাধ্বে করি যথেষ্ট আদর, সদর বাটীতে এলো ধরি তার কর। নানা কথা কহে দোঁহে একতে বসিয়া, ক্ষণ পরে কছিল মাধ্ব বিবরিয়া অাজোপান্ত সমুদায় রতান্ত ভয়ান,

ঝরিল মোহন-অতা ঘামিল কপাল। जनरकत ভ्यकत पृजा छत्न शीत, হ্ইল তাহার মন বিষাদে অন্থির।

कीवत्तव कर्श छनि । योश्न-पडत, काॅशिहल नाशिना त्कांदि थत् थत् थत । ক্রোধ সম্বরণ করি স্থার, মোইন, জীবন-জায়ার গুণ করিল। বর্ণন। म जंकी कामिनी-कथा वर्तित माइन, माध्य धकाधिहिए कतिमा अपना। উঠিল মাধব-ছাদে জিছং। সা "ভয়াল, দে বৃত্তি করিতে তৃপ্থ উপস্থিত কাল। राध्व त्यांश्त जानि मश्तम्व मम, दाथिन राग्यम कति (म वाक्षा विसम। মাধব মোহন - কাছে চাছিল বিদায়, পর দিন শুন্তপুরে চলিলা ত্রায়া সামি শৃত্তপুরে এক দরিতের যমে, মাধৰ লছল। বাসা প্রফুল অন্তরে। ক্রির পুলোভান বাহির ভ্রমিয়া, রাখিল গবাক দার ঠিকানা করিয়া। ফাল্পনের অমানিশি করিয়া প্রত্যাশা মাধব রহিল সেই আপনার বাসা। নিদ্ধারিত নিশীখিনী ক্রমে আবিভৃত, মাধব পুরিতে বাস্ত কামন। অভূত। মেদিনী আর্তা দেখি যোর অন্ধকারে, উপস্থিত মাধ্ব সে উভানের দারে। পরশিল যেই ভার খুলিল অমনি, मचुत्थ माधव प्रतिथ अक्ती क्रमी। · जीवटनत जाता छनवजी मधुमजी, তাহারি কিন্ধরী ইনি মিট্টরুপী অতি।

माध्दर (मथार्य शर्थ दांधा शंदरे जानि. विभिन्त विनिया छथि शिला स्ववसानी । कहिल नकल कथा मधुमछी कार्ड, ভবে হেম সুসংবাদ বল কিবা আছে। প্রাণসংগ-আগমন-কথা छनि धनी, आस्तीरम नाहिन मन धनीत उशिन ! दामना-मर्जिका इतम मुक्षवित जाजि, এত দিনে জগদীশ তার প্রতি রাজি। আভরণ নানাবিধ হীরকে খটিত, পরিদ রুমারী আছে বদন হসিত। বেশ মনোহর শয়ন-ভবনে চলিলা কামিনী হরা ভেটিতে জীবনে। মিষ্ট মিষ্ট কথা কহি আপন স্বামীরে, ভুলাইল তার মন কতই ফিকিরে। কতকণে নিজা যায় দয়িতঃ আপন. করিতে লাগিলা করে সেবা ছচরণ। ज्ञानत श्रृक्राय यात ध्रमन झनत्, স্বামীরে সে নিশি যতু কতই গো হয়। ় জ্ঞীবন নিজিত দেখি স্থন্দরী উঠিল, চিত্তচোরে ভেটিবারে অমনি চলিল। व्यानतम व्यथीता धनी इता जलाविछ, মাধবের সন্নিধানে আসি উপস্থিত। जांशाद माथा जावि स्थीत माइन, কছে কথা কলঙ্কিনী করি সম্বোধন। " जरमा जरमा व्यागमत्य खुड़ाई नहन, " তোমার ও চাদমুখ করি দরশন।

" চারি মানু ভাবি ভাবি ওহে চিভচোর, " শুরীর হয়েছে কালি চৈয়ে দৈখ মোর। " এক দিন হ'তে৷ জাব একটা বংসন, "ভাগিত ও মুখশশী হৃদে নিরপ্তর। " আমার যৌধন ধনে তুমি সক্ষেশ্বর, 'ধন মনুকি যৌবন লহ ওণাকর। -" वरमा वरमा थानमरथ क्षमा-भागतन, '' কৰুকু ব্যজন পাধা সোহাগ-প্ৰনে। " गीउन विभन भात जानम-जीवन, ' कबक आर्थम उर १४ अकानन। ' कबक् इह कूलधन्न धन्न जाकर्षन, " হউক সার্থক মম জীবন যৌবন। 'কর সংখ[়] সুখে এই তামূল ভক্ষণ ''কহ কথা সূহদেশ জুড়াক প্রবণ।'' रह পाठक ऋधीयत अ नत्ह माहन, যেমনি সে মধুমতী মাধ্ব তেমন। মধুমতী-রূপ হেরি মাধ্ব মোহিত, কি যেন ভাবনা হৃদে হৃহল উদিত। কফে সৃষ্টে মনোভাৰ করিয়া গোপন, মধুমতী প্রতি কহে মাধ্ব ত্থন। " শুন শুন বিধুমুখি অপূর্বে কথন, "রাখিতে হইবে মম আর এক পণ। " আমার বান্ধব-পড়ী হরিবার তরে, " তৰ স্বামী কত কফ দিলা সে অন্তৱে। " ভোমার স্বামীর ছদি গঠিত পাষাণে, " निक स्थ उत्त वर्ष अभरत्तत्त्र आर्त्। "

"কত কট প্ৰদানিৰ বান্ধক ভাৰ্যাৱে " वहमः न। नदत्र मर्मः छोड्। वर्तिवादतः। " निल केंद्र कृषि यनि शाक्क मानिवाद्य, " তোমার আমীরে ধনি তীক্ষ তরবারে, " তবে হে প্রেরসি হব তোখারি তথনি "নতুবা চলিছ আমি শুন সুবদনি।" মধুমতী শুনি এই কথা ভয়ানক, শরীর কাঁপিল তার ঘুরিল মন্তক। কহে সে কামিনী পরে মাধবের প্রতি " তৰ কথা প্ৰাণকান্ত আৰুৰ্ঘ্য হে অতি। " কেমনে বধিব আমি স্বামীরে আপন, " নারী হয়ে পুরুষেরে বধিব কেমন।" মাধৰ কছিল তবে "চলিলাৰ আমি " সুখে দয়ে থাক ধনি আপনার স্বামী।" এত বলি করি চ্ল মাধব চলিল, मधूमजी माधरदरत जमनि धतिल। यामीत हतिज्ञाना श्रीन कर्ल धनी, উঠিছিল কোপানল অন্তরে অমনি। মুখে প্রকাশিল শঙ্কা অন্তর অভয়, সকলি করিতে দক ভ্রমীর হৃদয়া। माधरव कश्चि পुरत कथा विनाहेशा, " क्रमरन श्रूरम विधि तमगी हरेगा। " সাহায্য করিতে হবে তোমারে হে নাথ, " जारे दनि जरमाञ्जूषि व ष्यविनी माथ।". **७७ विन माधायातः मरम माम धनी,** আপন জন্দরে চলে শকা নাছি গণি।



জীবন পর্যাকে মগ্ন প্রসাচ নিজায় वर्ज्जि-जात्नाक स्थू वृतिह उथात्र। एठीक इतिका हिल माध्द्रतं करतः, লইলা যে মধুমতী অতীব সত্তরে। क्षीवत्नतः हिरे कत्र माधव धतिन, * मध्यजी धीवारमा इति वमारेम। উঠিল চীৎকার করি জীবন ভরাল, শোণিত বহিল বেগে উপস্থিত কাল। माधक रम मृश्र प्रति हू हि भनाईन, मधुमजी जांत्र शिष्ट् अमेनि शारेन। মাধবের দেখা আঁর পাইবে কোথায় ? মধুমতী হানে কর আপন शत्र कांत्र करत भनी करत जनाथिनी. मधूमजी, अक्तारत शात जैवानिनी। आलू शन्त ज्यामिनी इतिश विजात, * কি করিত্ন কি হইল হার হার হার। "

नगाथ ।

Printed by I. C. Bose & Co., Stanhope Press, 249, Bow-Basar Street, Calcutta, for the Publisher.